इस्लामी

उसूल की फ़िलास्फ़ी

(इस्लामी नियमों की दार्शनिकता)

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह व महदी अलैहिस्सलाम

The essay entitled *The Philosophy of the Teaching of Islam* was written in Urdu by Hadrat Mirza Ghulam Ahmad, the Promised Messiah and Mahdi[as] at the invitation of Swami Shugan Chandar under whose auspicious the conference of Great Religions was held in Lahore Town Hall from 26th to 29th December 1896. The scholars of Muslims, Christians, Arya Samaj and other religions were invited to represent their religions at the conference of Great Religion. They were required to write on the following five topics on the basis of their Holy Books.

- The Physical, moral and spiritual states of man
- The state of man after death.
- The object of man's life and the means of its attainment.
- The operation of the practical ordinances of the Law in this life and the next.
- Sources of Divine knowledge.

Allah revealed to the Promised Messiah[as] that his essay will be declared supreme over all other essays. And so it was. For instance the Civil and Military Gazette, Lahore, wrote that Hadrat Ahmad's essay was the only one worth mentioning and the only one paper which was commended highly. The essay has been published in several languages in different countries.

It is the best and most comprehensive introduction to Islam within the scope of the above five questions. The book was translated into English by Sir Muhammad Zafarulla Khan.

8179120112

इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी

(इस्लामी नियमों की दार्शनिकता)

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

ٹائیٹل بار اوّل

اِسلامی اُصُول کی فلاسفی

یا

اِسلام اور اُسکی حقیقت

یعنی تقریر حضرت حجّۃ اللہ میرزا غلام احمد صاحب

مسیح موعود و مہدی معہود علیہ الصلوٰۃ والسلام جسکو

جلسہ مذاہب اعظم منعقدہ لاہور میں مولانا مولوی عبدالکریم صاحب نے

پڑھ کر سنایا + اور اس میں حکیم الامۃ حضرت مولانا نورالدین صاحب

کی تقریریں اور حضرت میر ناصر نواب صاحب کی نظم بھی شامل کیگئی ہیں

جو انھوں نے جلسہ مذکور میں سنائیں

مطبع ضیاء الاسلام قادیان دار الامان میں مع لوی حکیم
فضل الدین صاحب کے اہتمام سے چھپکر شائع ہوئی

ماہ جولائی سنہ ۱۹۰۵ء　قیمت ۴؍　تعداد ۲۰۰۰

नाम पुस्तक - इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी
(इस्लामी नियमों की दार्शनिकता)
Name of Book : "Islāmi Usool Kī Philosophy"
(The Philosophy of the Teachings of Islam)

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्स्लाम
Written By : Mirza Ghulam Ahmad Qadianī
The Promised Messiah and Mahdi[as]

अनुवादक - अन्सार अहमद एम.ए. बी.एड. आनर्स इन अरबिक
Translated By : Ansār Ahmad M.A. B.Ed. Hon's in Arabic

टाइप सैटिंग - तसनीम अहमद बट्ट
Type Setting : Tasneem Ahmad Butt
संख्या - 1000
Quantity : 1000

प्रकाशन वर्ष - जनवरी 2014
Year of Publication : January 2014

प्रकाशक - नज़ारत नश्र व इशाअत, क़ादियान
Publisher : Nazarat Nashr-o-Ishāat, Qadian

मुद्रक - फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान
Printer : Fazle Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab) INDIA

ISBN - 81-7912-011-2

लेखक का परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम जिनका जन्म 1835 ई. में क़ादियान (भारत) में हुआ। आजीवन क़ुर्आन के अध्ययन तथा ईश्वर-भक्ति के प्रति समर्पित रहे। जब आपने यह देखा कि इस्लाम को चारों ओर से अशिष्ट आक्रमणों का निशाना बनाया जा रहा है, मुसलमानों की बड़ी दयनीय अवस्था है तथा धर्म, विश्वास तथा शंका के सम्मुख समर्पित होता प्रतीत हो रहा है और धर्म केवल नाम-मात्र शेष रह गया है तो आपने इस्लाम की श्रेष्ठता को प्रमाणित करने का महान कार्य आरंभ किया। आपने अपनी रचनाओं (जिसमें बराहीन अहमदिया नामक रचना भी सम्मिलित है) भाषणों, संभाषणों तथा धार्मिक चर्चाओं में यह तर्क प्रस्तुत किया कि इस्लाम एक सजीव धर्म है और केवल यही एक धर्म है जिसका अनुसरण करके मनुष्य अपने स्रष्टा के साथ सम्बन्ध स्थापित कर सकता है तथा उससे वार्तालाप का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है। पवित्र क़ुर्आन की शिक्षाओं और विधान का उद्देश्य मानव को नैतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण करना है।

आप ने यह घोषणा की कि ख़ुदा ने मुझे बाइबल, पवित्र क़ुर्आन तथा हदीस में वर्णित भविष्यवाणियों के अनुरूप मसीह व महदी नियुक्त किया है। 1889 ई. में आपने अपने समुदाय के सदस्यों से बैअत लेना आरंभ किया। आज आपका समुदाय विश्व के 198 देशों में स्थापित हो चुका है। आप की 91 रचनाओं में से अधिकांश उर्दू भाषा में हैं।

1908 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्वर्गवास के पश्चात् हज़रत मौलवी नूरुद्दीन रज़ि. आपके प्रथम ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बने। 1914 ई. में हज़रत मौलवी नूरुद्दीन रज़ि. के स्वर्गवास के पश्चात्

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि. जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सुपुत्र भी थे आपके द्वितीय ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। आपकी ख़िलाफ़त का कार्यकाल लगभग 52 वर्ष तक रहा। 1965 ई. में द्वितीय उत्तराधिकारी के स्वर्गवासी होने के पश्चात् हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पौत्र हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद रहि. ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए। लगभग 17 वर्ष के सफल नेतृत्व के उपरान्त 1982 ई. में इनके स्वर्गवास के उपरान्त इनके छोटे भाई हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद रहि. चतुर्थ ख़लीफ़ा के रूप में निर्वाचित हुए। जिनके द्वारा अहमदिया समुदाय को वर्तमान विश्व-ख्याति एवं मान्यता तथा शक्ति प्राप्त हुई।

19 अप्रैल 2003 ई. को आपके स्वर्गवास के उपरान्त हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब पंचम ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) के रूप में निर्वाचित हुए। आप जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा हैं। तथा आपको हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम के प्रपौत्र होने का सौभाग्य प्राप्त है।

विषय सूची

विषय **पृष्ठ**

एक सज्जन स्वामी साधू शिवगुण चन्द्र नामक जो तीन चार वर्ष तक हिन्दुओं की कायस्थ जाति का सुधार और सेवा का कार्य करते रहे थे। सन् 1892 ई. में उन्हें यह विचार आया कि जब तक सब लोग एक न हों कोई लाभ न होगा। अन्ततः उन्हें एक धार्मिक सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव सूझा। अतः इस प्रकार का पहला जलसा अजमेर में हुआ। तत्पश्चात् वह 1896 ई. में दूसरे सम्मेलन के लिए लाहौर के वातावरण को उचित समझकर उसकी तैयारी में लग गए।[1]

स्वामी जी ने इस धार्मिक सम्मेलन के प्रबन्ध के लिए एक कमेटी बनाई। जिसके अध्यक्ष मास्टर दुर्गा प्रसाद तथा चीफ़ सेक्रेटरी चीफ़ कोर्ट लाहौर के एक हिन्दू प्लीडर लाला धनपतराय बी. ए. एल. एल. बी. थे। सम्मेलन के लिए 26, 27, 28 दिसम्बर सन् 1896 ई. की तिथियां निर्धारित हुईं तथा सम्मेलन की कार्यवाही के लिए निम्नलिखित छः मॉडरेटर मनोनीत किए गए :-

1. राय बहादुर परतोल चन्द साहिब जज चीफ़ कोर्ट पंजाब
2. ख़ान बहादुर शैख ख़ुदा बख़्श साहिब जज स्माल कॉज़ कोर्ट लाहौर
3. राय बहादुर पंडित राधा किशन कौल प्लीडर चीफ़ कोर्ट भूतपूर्व गवर्नर जम्मू
4. हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन[रज़ि.] साहिब शाही वैद्य
5. राय भवानीदास साहिब एम. ए. अतिरिक्त सैटिलमेण्ट अफसर जेहलम
6. जनाब सरदार जवाहर सिंह साहिब सेक्रेटरी खालसा कमेटी लाहौर[2]

स्वामी शिवगुण चन्द्र साहिब ने कमेटी की ओर से जलसा का विज्ञापन देते हुए, मुसलमानों ईसाइयों तथा आर्य सज्जनों को शपथ दी

---

① रिपोर्ट जलसा-ए-आज़म मज़ाहिब पृष्ठ - 253, 254 सिद्दीकी प्रेस लाहौर से सन् 1897 ई. में प्रकाशित।

② रिपोर्ट जलसा-ए-आज़म मज़ाहिब पृष्ठ - 253, 254 सिद्दीकी प्रेस लाहौर से सन् 1897 ई. में प्रकाशित।

कि उनके प्रसिद्ध विद्वान इस जल्से में अपने-अपने धर्म की विशेषताएं अवश्य वर्णन करें तथा लिखा कि जो धर्मों के महान जल्से का लाहौर के टाउन हाल में होना निर्धारित हुआ है उसके उद्देश्य यही हैं कि सच्चे धर्म की विशेषताएं तथा गुण एक सभ्य और शिक्षित लोगों के सार्वजनिक जल्से में प्रकट होकर उसका प्रेम हृदयों में बैठ जाए तथा उसके प्रमाण एवं तर्कों को लोग भली प्रकार समझ लें। इस प्रकार प्रत्येक धर्म के सम्मानित उपदेशक को अवसर मिले कि वह अपने धर्म की सच्चाइयां दूसरों के हृदयों में बैठा दे तथा श्रोताओं को भी यह अवसर प्राप्त हो कि वे उन सब महानुभावों के जल्से में प्रत्येक भाषण की दूसरे के भाषण के साथ तुलना करें तथा जहां सत्य की झलक देखें उसे स्वीकार कर लें।

आजकल धार्मिक वाद-विवादों के कारण हृदयों में सच्चे धर्म को ज्ञात करने की इच्छा भी पाई जाती है तथा इसके लिए उत्तम उपाय यही विदित होता है कि समस्त धार्मिक विद्वान जो आदेश एवं नसीहत करना अपना आचरण रखते हैं एक स्थान पर एकत्र हों तथा अपने-अपने धर्म की विशेषताएं विज्ञापन में दिए गए प्रश्नों की पाबन्दी के साथ वर्णन करें। इस बड़े धर्मों के सम्मेलन में जो धर्म सच्चे परमेश्वर की ओर से होगा वह अपनी विशेष चमक अवश्य दिखाएगा। इसी उद्देश्य से इस जल्से को प्रस्तावित किया है। प्रत्येक जाति के बुज़ुर्ग उपदेशक भली भांति जानते हैं कि अपने धर्म की सच्चाई प्रकट करना उन का कर्त्तव्य है। अतः इस उद्देश्य के लिए जिस अवस्था में यह जलसा आयोजित हुआ है कि सच्चाइयां प्रकट हों तो ख़ुदा ने उन को इस उद्देश्य को पूर्ण करने का अब अच्छा अवसर दिया है जो हमेशा मनुष्य के अधिकार में नहीं होता।

फिर उन्हें प्रेरणा देते हुए लिखा :-

"क्या मैं स्वीकार कर सकता हूं कि जो व्यक्ति दूसरों को एक घातक

रोग में ग्रस्त समझता है तथा विश्वास रखता है कि उसकी सुरक्षा मेरी दवा में हैं और मानव जाति की सहानुभूति का दावा भी करता है वह ऐसे अवसर पर कि ग़रीब रोगी उसे उपचार के लिए बुलाते हैं वह जानबूझ कर पहलू बचाए ? मेरा हृदय इस बात के लिए तड़प रहा है कि यह निर्णय हो जाए कि कौन सा धर्म वास्तव में सच्चाइयों से भरा हुआ है तथा मेरे पास वे शब्द नहीं जिनके द्वारा मैं अपने इस सच्चे जोश का वर्णन कर सकूं।"

इस धार्मिक जल्से अथवा धार्मिक महोत्सव लाहौर में सम्मिलित होने के लिए भिन्न-भिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने स्वामी जी का निमंत्रण स्वीकार किया तथा दिसम्बर 1896 ई. के बड़े दिन की छुट्टियों में धार्मिक महोत्सव का आयोजन हुआ जिसमें भिन्न-भिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने महोत्सव कमेटी की ओर से घोषित पांच प्रश्नों पर भाषण दिए जो कमेटी की ओर से उत्तर देने के उद्देश्य से पहले ही प्रकाशित कर दिए गए थे तथा उनके उत्तरों के लिए कमेटी की ओर से यह शर्त लगाई गई थी कि भाषण देने वाला अपने वर्णन को यथासंभव उस किताब तक सीमित रखे जिसे वह धार्मिक तौर पर पवित्र स्वीकार कर चुका है। प्रश्न ये थे :-

1. मनुष्य की शारीरिक, नैतिक और अध्यात्मिक अवस्थाएं।
2. मानव जीवन के बाद (परलोक) की अवस्था
3. संसार में मानव-अस्तित्व का मूल उद्देश्य क्या है और वह उद्देश्य किस प्रकार पूर्ण हो सकता है ?
4. इस लोक (संसार) तथा परलोक में कर्मों का क्या प्रभाव होता है ?
5. ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान के साधन क्या-क्या हैं ?

इस जल्से में जो 26 दिसम्बर से 29 दिसम्बर तक हुआ - सनातन धर्म, हिन्दू धर्म, आर्य समाज, फ्री थिंकर, ब्रह्म समाज, थ्योसोफ़ीकल सोसायटी, रेलीजन ऑफ़ हारमनी, ईसाइयत, इस्लाम और सिक्ख धर्म के प्रतिनिधियों ने भाषण दिए किन्तु इन समस्त भाषणों में से केवल एक ही भाषण उन प्रश्नों का वास्तविक और पूर्ण उत्तर था। जिस समय

यह भाषण हज़रत मौलवी अब्दुल करीम सियालकोटी[रज़ि.] अत्यन्त मधुर स्वर में पढ़ रहे थे उस समय का दृश्य वर्णन नहीं किया जा सकता। किसी भी धर्म का कोई व्यक्ति नहीं था जो वाह-वाह और बहुत उत्तम का नारा बुलन्द न कर रहा हो, कोई व्यक्ति न था जिस पर आत्म विस्मृति तथा झूमने वाली अवस्था न छाई हो। वर्णन शैली अत्यन्त रोचक एवं सर्वप्रिय थी। इससे बढ़कर इस निबंध की ख़ूबी और क्या होगी कि विरोधी भी प्रसन्नता और हैरानी प्रकट कर रहे थे। प्रसिद्ध अंग्रेज़ी अख़बार "सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट" लाहौर ने ईसाई होने के बावजूद केवल इसी निबन्ध की उच्चकोटि की प्रशंसा लिखी और इसी को उल्लेखनीय वर्णन किया।

यह निबन्ध जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी का लिखा हुआ था। इस निबन्ध के निर्धारित समय में समाप्त न होने के कारण 29 दिसम्बर का दिन बढ़ाया गया। "पंजाब आबज़रवर" ने इस निबंध की प्रशंसा में कालम के कालम भर दिए। पैसा अख़बार, चौदहवी सदी, सादिक़ुल अख़बार, "मुख़बिरे दकन" तथा अख़बार "जनरल व गौहर आसफ़ी" कलकत्ता इत्यादि समस्त अख़बार सर्वसम्मत तौर पर इस निबंध की प्रशंसा कर रहे थे। अन्य जातियों तथा अन्य धर्मानुयायियों ने इस निबंध को सर्वश्रेष्ठ स्वीकार किया। इस धार्मिक महोत्सव के सेक्रेटरी धनपत राय बी.ए. एल.एल.बी. प्लीडर चीफ़ कोर्ट पंजाब "रिपोर्ट जल्सा-ए-आज़म मज़ाहिब" (धर्म महोत्सव) में इस भाषण के संबंध में लिखते हैं :-

"पंडित गोवर्धन दास के भाषण के पश्चात् आधे घण्टे का अवकाश था, परन्तु चूंकि अवकाश के पश्चात् एक प्रसिद्ध वकील की ओर से भाषण होना था, इसलिए अधिकांश रुचि रखने वाले लोगों ने अपने-अपने स्थान को न छोड़ा। डेढ़ बजने में अभी बहुत समय रहता था कि इस्लामिया कालेज का विशाल मकान शीघ्र-शीघ्र भरने

लगा तथा कुछ ही मिनटों में भर गया। उस समय लगभग सात-आठ हज़ार के मध्य लोग थे। विभिन्न धर्मों और मिल्लतों तथा सोसायटियों के अधिकांश शिक्षित लोग मौजूद थे, यद्यपि कुर्सियां, मेज़ें तथा फ़र्श नितान्त बड़े स्तर पर उपलब्ध किया परन्तु सैकड़ों लोगों को खड़ा होने के अतिरिक्त और कुछ न बन पड़ा। इन खड़े हुए रुचि रखने वाले लोगों में बड़े-बड़े रईस, पंजाब के उच्च अधिकारी लोग, प्रकाण्ड विद्वान, बैरिस्टर, वकील, प्रोफ़ेसर, एक्सट्रा असिस्टेंट, डाक्टर, निष्कर्ष यह कि विभिन्न विभागों के उच्च वर्ग के हर प्रकार के लोग मौजूद थे। इन लोगों के इस प्रकार एकत्र होने तथा नितान्त धैर्य और गंभीरता के साथ जोश से निरन्तर चार-पांच घण्टे तक खड़े रहने से स्पष्ट प्रकट होता है कि इन धनाढ्य लोगों को कहां तक इस पवित्र प्रेरणा से सहानुभूति थी। भाषण के लेखक स्वयं तो जल्से में मौजूद न थे परन्तु उन्होंने स्वयं अपने एक विशेष शिष्य मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी को निबन्ध पढ़ने के लिए भेजा हुआ था। इस निबन्ध के लिए यद्यपि कमेटी की ओर से केवल दो घंटे ही थे परन्तु जल्से में मौजूद लोगों को सामान्यतया इस निबन्ध से कुछ ऐसी रुचि पैदा हो गई कि मॉडरेटर लोगों ने नितान्त जोश और प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा दी कि जब तक यह निबन्ध समाप्त न हो तब तक जल्से की कार्यवाही को समाप्त न किया जाए। उन का इस प्रकार कहना दर्शकों की इच्छा के सरासर अनुकूल था, क्योंकि जब निर्धारित समय-सीमा के गुज़रने पर मौलवी अबू यूसुफ़ मुबारक अली साहिब ने अपना समय भी इस निबन्ध के समाप्त होने के लिए दे दिया। अत: उपस्थित सज्जनों एवं मॉडरेटर लोगों ने ख़ुशी से नारा लगाते हुए मौलवी साहिब का धन्यवाद किया। जल्से की कार्यवाही साढ़े चार बजे समाप्त हो जानी थी किन्तु सभी की इच्छा को देखकर जल्से की कार्यवाही साढ़े पांच बजे तक जारी रखना पड़ी क्योंकि यह निबन्ध लगभग चार घण्टे में

समाप्त हुआ तथा प्रारंभ से अन्त तक अपने अन्दर बराबर रुचि और मान्यता रखता था।"

विचित्र बात यह है कि जल्से के आयोजन से पूर्व 21 दिसम्बर 1896 ई. को जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक ने अपने निबन्ध के विजयी होने के संबंध में अल्लाह तआला से सूचना पाकर एक विज्ञापन प्रकाशित किया जिसकी प्रतिलिपि निम्नलिखित है :-

सत्याभिलाषियों के लिए एक महान शुभ सन्देश

महान धर्म महोत्सव* जो लाहौर टाउन हाल में 26, 27, 28 दिसम्बर 1896 ई. को होगा उसमें इस विनीत का एक निबन्ध क़ुर्आन शरीफ़ की विशेषताओं तथा चमत्कारों के बारे में पढ़ा जाएगा। यह वह निबन्ध है जो मानव शक्तियों से श्रेष्ठतम तथा ख़ुदा के निशानों में से एक निशान तथा उसके विशेष समर्थन से लिखा गया है। इसमें क़ुर्आन शरीफ़ की उन सच्चाइयों एवं अध्यात्म ज्ञानों का उल्लेख किया है जिनसे सूर्य के समान प्रकाशमान हो जाएगा कि वास्तव में यह ख़ुदा का कलाम (वाणी) तथा समस्त लोकों के प्रतिपालक की किताब है तथा जो व्यक्ति इस निबंध को प्रारंभ से अन्त तक पांचों प्रश्नों के उत्तर सुनेगा, मैं विश्वास रखता हूं कि उसमें एक नया ईमान पैदा होगा तथा उसमें एक नया प्रकाश चमक उठेगा तथा ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम की एक सर्वांगपूर्ण व्याख्या उसके हाथ में

* स्वामी शिवगुण चन्द्र साहिब ने अपने विज्ञापन में मुसलमानों, ईसाइयों तथा आर्य सज्जनों को शपथ दी थी कि उनके प्रसिद्ध विद्वान इस जल्से में अपने-अपने धर्म की विशेषताएं अवश्य वर्णन करें। अत: हम स्वामी जी को सूचना देते हैं कि हम इस महान प्रकार के सम्मान के लिए आप की इच्छा को पूर्ण करने के लिए तैयार हो गए हैं और ख़ुदा ने चाहा तो हमारा निबंध इस जल्से में पढ़ा जाएगा। इस्लाम वह धर्म है जिसके मध्य में ख़ुदा का नाम आने से, सच्चे मुसलमान को पूर्ण आज्ञापालन का निर्देश देता है परन्तु अब हम देखेंगे कि आपके भाई आर्यों और पादरियों को अपने परमेश्वर अथवा यीशू की प्रतिष्ठा का कितना ध्यान है और वे ऐसे महान पवित्र नाम पर उपस्थित होने के लिए तैयार हैं या नहीं ? *इसी से*

आ जाएगी। मेरा भाषण मानवीय व्यर्थ बातों तथा डींगों से पवित्र है। मुझे इस समय केवल प्रजा की सहानुभूति ने इस विज्ञापन लिखने के लिए विवश किया है ताकि वे क़ुर्आन शरीफ़ के सौन्दर्य को देखें कि हमारे विरोधियों का कितना अन्याय है कि वे अंधकार से प्रेम करते और प्रकाश से घृणा करते हैं। मुझे सर्वज्ञ ख़ुदा ने इल्हाम द्वारा सूचित किया है कि यह वह निबंध है **जो सब पर विजयी होगा** तथा इसमें सच्चाई और बुद्धिमत्ता एवं अध्यात्म ज्ञान का वह प्रकाश है जो दूसरी जातियां इस शर्त पर कि उपस्थित हों तथा उसे आरंभ से अन्त तक सुनें शर्मिन्दा हो जाएंगी और कदापि समर्थ न होंगी कि अपनी किताबों की यह विशेषताएं दिखा सकें चाहे वे ईसाई हों, चाहे सनातन धर्म वाले अथवा कोई अन्य, क्योंकि ख़ुदा तआला ने यह इरादा किया है कि उस दिन उसकी पवित्र किताब का प्रदर्शन हो। मैंने कश्फ़ की अवस्था में उसके संबंध में देखा कि मेरे मकान पर परोक्ष से एक हाथ मारा गया तथा उस हाथ के छूने से उस मकान में से एक उज्ज्वल प्रकाश निकला जो चारों और फैल गया तथा मेरे हाथों पर भी उसका प्रकाश पड़ा। तब एक व्यक्ति जो मेरे पास खड़ा था वह उच्च स्वर में बोला -

اَللّٰهُ اَكْبَر خَرِبَتْ خَيْبَر

इसकी व्याख्या यह है कि उस मकान से अभिप्राय मेरा हृदय है जो प्रकाश स्थल तथा प्रकाशों के उतरने का स्थल है और वे प्रकाश क़ुर्आनी ज्ञान हैं और 'ख़ैबर' से अभिप्राय समस्त ख़राब धर्म हैं जिनमें शिर्क (ख़ुदा का भागीदार बनाना) और बिदअत (शरीअत के आदेशों में अपनी ओर से किसी नई बात का समावेश) की मिलावट है तथा मनुष्य को ख़ुदा का स्थान दिया गया या ख़ुदा की विशेषताओं को उनके यथोचित स्थान से नीचे गिरा दिया है। अत: मुझे बताया गया कि इस निबन्ध के उचित तौर पर प्रसार के पश्चात् झूठे धर्मों का झूठ खुल जाएगा और क़ुर्आनी सच्चाई प्रतिदिन पृथ्वी पर प्रसारित होती जाएगी,

यहां तक कि अपना चक्र पूरा करे। अन्ततः मेरा हृदय कश्फ़ की अवस्था से इल्हाम की ओर फेरा गया और मुझे यह इल्हाम हुआ -

اِنَّ اللّٰہَ مَعَکَ اِنَّ اللّٰہَ یَقُوْمُ اَیْنَمَا قُمْتَ

अर्थात् ख़ुदा तेरे साथ है और ख़ुदा वहीं खड़ा होता जहां तू खड़ा हो। ये शब्द ख़ुदाई समर्थन के सूचक हैं। अब मैं अधिक न लिखकर प्रत्येक को यही सूचना देता हूं कि इन अध्यात्म ज्ञानों को सुनने के लिए कुछ हानि सहन करके भी आना पड़े तो भी सम्मेलन की निर्धारित तिथि पर लाहौर अवश्य पधारें कि उनकी बुद्धि और ईमान को इस से वे लाभ प्राप्त होंगे कि वे सोच भी नहीं सकते होंगे। सलामती हो उस पर जिसने सन्मार्ग का अनुसरण किया।

विनीत - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान

21, दिसम्बर - 1896 ई.

उचित मालूम होता है कि नमूने के तौर पर दो तीन अख़बारों की रायों का नीचे उल्लेख कर दिया जाए :-

सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट (लाहौर) ने लिखा :-

"इस सम्मेलन में श्रोताओं की हार्दिक एवं विशेष रुचि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के भाषण के साथ थी, जो इस्लाम के समर्थन और सुरक्षा में दक्ष एवं प्रकाण्ड हैं। इस भाषण को सुनने के लिए दूर और निकट से विभिन्न सम्प्रदायों का एक विशाल समूह उमड़ पड़ा था। चूंकि मिर्ज़ा साहिब स्वयं नहीं आ सकते थे, इसलिए यह भाषण उनके एक शिष्य एवं मुंशी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी ने पढ़कर सुनाया। 27, दिसम्बर को भाषण तीन घंटे तक होता रहा तथा लोगों ने अत्यन्त प्रसन्नता और ध्यानपूर्वक उसे सुना, किन्तु अभी केवल एक प्रश्न समाप्त हुआ। मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने वादा किया कि

यदि समय मिला तो शेष भाग भी सुना दूंगा। इसलिए प्रबन्धन कमेटी और अध्यक्ष ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि 29 दिसम्बर का दिन बढ़ा दिया जाए।" (अनुवाद)

अख़बार "चौदहवीं सदी" (रावलपिन्डी) ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस भाषण पर निम्नलिखित समीक्षा की :-

"इन भाषणों में सबसे उत्तम भाषण जो सम्मेलन की प्राणवायु थी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी का भाषण था जिस सुप्रसिद्ध, सरस एवं सुबोध भाषी वक्ता मौलवी अब्दुल करीम सियालकोटी ने नितान्त उत्तम ढंग से पढ़कर सुनाया। यह भाषण दो दिन में समाप्त हुआ, जो मोटाई में सौ बड़े पृष्ठ तक होगा। अत: मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने भाषण आरंभ किया और कैसा आरंभ किया कि समस्त श्रोता लट्टू हो गए। एक-एक वाक्य पर वाह-वाह के स्वर बुलन्द थे और प्राय: एक-एक वाक्य को पुन: पढ़ने के लिए उपस्थित सज्जनों की ओर से मांग की जाती थी। जीवन-पर्यन्त हमारे कानों ने ऐसा सुन्दर और प्रभावोत्पादक भाषण नहीं सुना। अन्य धर्मों में से जितने लोगों ने भाषण दिए, सत्य तो यह है कि वे सम्मेलन के निर्धारित प्रश्नों के उत्तर भी नहीं थे। समान्यतया वक्ता केवल चौथे प्रश्न पर ही रहे तथा शेष प्रश्नों को उन्होंने बहुत कम प्रस्तुत किया तथा अधिकांश लोग तो ऐसे भी थे जो बोलते तो बहुत थे परन्तु उसमें सजीवता बिल्कुल न थी सिवाए मिर्ज़ा साहिब के भाषण के जो इन प्रश्नों का पृथक-पृथक विस्तृत तथा पूर्ण उत्तर था, जिसे दर्शकों ने नितान्त ध्यान और रुचि से सुना तथा बड़ा बहुमूल्य और महत्त्वपूर्ण विचार किया। हम मिर्ज़ा साहिब के मुरीद (शिष्य) नहीं हैं और न उन से हमारा कोई संबंध है किन्तु हम न्याय का ख़ून कभी नहीं कर सकते और न कोई सौम्य और सही अन्तरात्मा रखने वाला व्यक्ति उसे उचित समझ सकता है।

मिर्ज़ा साहिब ने समस्त प्रश्नों के उत्तर (यथोचित) क़ुर्आन शरीफ़ से दिए तथा समस्त बड़े-बड़े नियम एवं इस्लाम की शाखाओं को बौद्धिक तर्कों द्वारा तथा दर्शनशास्त्रीय प्रमाणों के साथ सुसज्जित किया। पहले बौद्धिक तर्कों द्वारा दर्शनशास्त्रीय समस्या को सिद्ध करना तत्पश्चात ख़ुदा के कलाम को बतौर उद्धरण पढ़ना एक अद्भुत शान दिखाता था।

मिर्ज़ा साहिब ने न केवल क़ुर्आनी समस्याओं की दार्शनिकता वर्णन की अपितु क़ुर्आन के शब्दों की फ़्लास्फ़ी भी साथ-साथ वर्णन कर दी। अत: मिर्ज़ा साहिब का भाषण हर प्रकार से पूर्ण और प्रभावोत्पादक भाषण था जिसमें असंख्य ज्ञानों, वास्तविकताओं, आदेश एवं रहस्यों के मोती चमक रहे थे तथा आध्यात्म के दर्शन का ऐसे ढंग से वर्णन किया गया था कि समस्त धर्मों वाले स्तब्ध रह गए थे। किसी व्यक्ति के भाषण के समय इतने लोग एकत्र नहीं थे जितने कि मिर्ज़ा साहिब के भाषण के साथ। सम्पूर्ण हाल नीचे से ऊपर तक भरा हुआ था तथा श्रोता पूर्ण ध्यान से सुन रहे थे। मिर्ज़ा साहिब के भाषण के समय तथा अन्य वक्ताओं के भाषणों के अन्तर के लिए इतना कहना पर्याप्त है कि मिर्ज़ा साहिब के भाषण के समय लोग इस प्रकार आ आकर गिरे जैसे शहद पर मक्खियां किन्तु दूसरों के भाषणों के समय आनन्द के अभाव के कारण उठ कर चले जाते थे। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का भाषण बिल्कुल मामूली था। वही मुल्लाई विचार थे जिन्हें लोग प्रतिदिन सुनते हैं। उसमें कोई विचित्र बात न थी तथा मौलवी साहिब के दूसरे भाषण के समय कई लोग उठ कर चले गए थे। मौलवी साहिब को अपना भाषण पूर्ण करने के लिए कुछ अतिरिक्त मिनट देने की अनुमति भी नहीं दी गई।"

(अख़बार "चौदहवीं सदी" रावलपिन्डी, 1 फ़रवरी 1897 ई.)

अख़बार "जनरल व गौहर आसिफ़ी" कलकत्ता ने 24 जनवरी 1897 ई. के प्रकाशन में "धर्म महोत्सव लाहौर में आयोजित"

और “फ़तह इस्लाम” के दोहरे शीर्षक से लिखा -

“इससे पूर्व कि हम सम्मेलन की कार्यवाही के बारे में बात करें हमें यह बता देना आवश्यक है कि हमारे अख़बार के कालमों में जैसा कि उसके दर्शकों पर स्पष्ट होगा यह बहस हो चुकी है कि इस धर्म महोत्सव में इस्लाम की वकालत के लिए सबसे योग्य व्यक्ति कौन था। हमारे एक सम्माननीय पत्रकार ने सर्वप्रथम मस्तिष्क को पक्षपात से रिक्त करके तथा सत्य को दृष्टिगत रख कर **हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद रईसे क़ादियान को अपने विचार में चुना था,** जिनके साथ हमारे एक अन्य आदरणीय सज्जन ने अपने पत्राचार में सहमति प्रकट की थी। जनाब मौलवी सय्यद फ़ख़रुद्दीन साहिब फ़ख़्र ने बड़े ज़ोर के साथ इस चुनने के बारे में जो अपनी आज़ाद तार्किक तथा बहुमूल्य राय लोगों के समक्ष प्रस्तुत की थी उसमें हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान, जनाब सर सय्यद अहमद साहिब आफ़ अलीगढ़ को चुना था और साथ ही इस इस्लामी वकालत की पर्ची निम्नलिखित सज्जनों के नाम निकली थी। मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी, जनाब मौलवी हाजी सय्यद मुहम्मद अली साहिब कानपुरी और मौलवी अहमद हुसैन साहिब अज़ीमाबादी। यहां यह वर्णन कर देना भी अनुचित न होगा कि हमारे एक स्थानीय अख़बार के संवाददाता ने जनाब मौलवी अब्दुल हक़ साहिब देहलवी लेखक ‘तफ़्सीर हक़्क़ानी’ का इस कार्य के लिए निर्वाचन किया था।”

तत्पश्चात् स्वामी शिवगुण चन्द्र के विज्ञापन से उस भाग को नक़ल करके जिसमें उन्होंने हिन्दुस्तान के विभिन्न धर्मों के विद्वानों को बहुत शर्म दिला-दिला कर अपने-अपने धर्म के जौहर दिखाने के लिए बुलाया था। यह अख़बार लिखता है :-

“इस जल्से के विज्ञापनों आदि के देखने तथा निमंत्रणों के पहुंचने पर हिन्दुस्तान के किन-किन विद्वानों के स्वाभिमान ने पवित्र इस्लाम

धर्म की वकालत के लिए जोश दिखाया तथा उन्होंने कहां तक इस्लामी समर्थन का बीड़ा उठाकर प्रमाणों एवं तर्कों के माध्यम से क़ुर्आन के रोब का सिक्का अन्य धर्मों के हृदय पर बैठाने का प्रयत्न किया है।

हमें विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने विशेष तौर पर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब तथा सर सय्यद अहमद साहिब को जल्से में भाग लेने के लिए पत्र लिखा था। हज़रत मिर्ज़ा साहिब तो तबीयत की ख़राबी के कारण स्वयं सम्मेलन में भाग न ले सके किन्तु अपना निबंध भेजकर अपने एक विशेष शिष्य जनाब मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी को उसे पढ़ने के लिए नियुक्त किया, परन्तु सर सय्यद ने जल्से में भाग लेने तथा निबंध भेजने से पृथकता रखी। यह इस कारण न था कि वह वृद्ध हो चुके हैं तथा ऐसे सम्मेलनों में भाग लेने योग्य नहीं रहे हैं और न इस कारण था कि उन्हीं दिनों मेरठ में एजूकेशनल कान्फ्रेंस का आयोजन तय हो चुका था अपितु इसका कारण यह था कि धार्मिक सम्मेलन उनके ध्यान योग्य नहीं, क्योंकि उन्होंने अपने पत्र में जिसे हम ख़ुदा ने चाहा तो अपने अख़बार में किसी अन्य समय लिखेंगे स्पष्ट लिख दिया है कि वह कोई उपदेशक या नसीहत करने वाले या मौलवी नहीं, यह कार्य उपदेश देने वालों एवं नसीहत करने वालों का है। सम्मेलन के प्रोग्राम को देखने तथा छान-बीन करने से यह ज्ञात हुआ है कि जनाब मौलवी सय्यद मुहम्मद अली कानपुरी, जनाब मौलवी अब्दुल हक़ साहिब देहलवी और जनाब मौलवी अहमद हुसैन साहिब अज़ीमाबादी ने इस जल्से की ओर कोई जोश से ध्यान नहीं दिया और न हमारे पवित्र विद्वान-वर्ग में से किसी अन्य योग्य व्यक्ति ने अपना निबन्ध पढ़ने या पढ़वाने का संकल्प बताया। हां दो एक उलेमा ने बहुत साहस करके जिसमें हम हैं कदम रखा परन्तु उलटा। इसलिए उन्होंने या तो निर्धारित विषयों पर कोई बात न की या बिना सर-पैर

की बातें हांक दीं जैसा कि हमारी बाद की रिपोर्ट से स्पष्ट होगा। अत: जल्से की कार्यवाही से यही सिद्ध होता है कि **केवल हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान थे जिन्होंने इस मुकाबले के मैदान में इस्लामी पहलवानी का पूरा हक़ अदा किया है और इस निर्वाचन को सच्चा किया है जो विशेष तौर पर स्वयं आप को इस्लामी वकील नियुक्त करने में** पेशावर, रावलपिण्डी, शाहपुर, भेरा, ख़ुशाब, सियालकोट, जम्मू, वज़ीराबाद, लाहौर, अमृतसर, गुरदासपुर, लुधियाना, शिमला, देहली, अम्बाला, रियासत पटियाला, देहरादून, इलाहाबाद, मद्रास, बम्बई, हैदराबाद दक्कन, बैंगलोर इत्यादि हिन्दुस्तान के विभिन्न इस्लामी सम्प्रदायों से वकालत नामों के द्वारा हस्ताक्षरों से सुसज्जित होकर अमल में आया था। सत्य तो यह सिद्ध होता है कि **यदि इस सम्मेलन में हज़रत मिर्ज़ा साहिब का निबन्ध न होता तो इस्लामियों पर अन्य धर्मावलम्बियों के समक्ष अपमान और निर्लज्जता का तिलक लगता किन्तु ख़ुदा के शक्तिशाली हाथ ने पवित्र इस्लाम को गिरने से बचा लिया अपितु उसे इस निबन्ध के द्वारा ऐसी विजय प्रदान की कि मित्र तो मित्र विरोधी भी स्वाभाविक जोश से यह कह उठे कि यह निबन्ध सब से श्रेष्ठ है, श्रेष्ठ है।** अत: निबन्ध की समाप्ति पर वास्तविकता प्रतिद्वन्द्वियों के मुख पर इस प्रकार जारी हो चुकी थी कि अब इस्लाम की सच्चाई स्पष्ट हुई तथा इस्लाम को विजय प्राप्त हुई जो चयन लक्ष्य पर लगने वाले तीर के समान प्रकाशमान दिन में उचित निकला। अब इसके विरोध में कुछ कहने की गुंजायश है ही नहीं अपितु वह हमारे गर्व का कारण है। इसलिए इसमें इस्लामी वैभव और प्रताप है तथा इसी में इस्लामी श्रेष्ठता तथा सत्य भी यही है।

यद्यपि धर्म महोत्सव का हिन्दुस्तान में यह दूसरा अवसर था किन्तु इसने अपनी मान-मर्यादा तथा वैभव एवं प्रतिष्ठा की दृष्टि से

समस्त हिन्दुस्तानी कांग्रेसों एवं कान्फ्रेन्सों को पराजित कर दिया है। हिन्दुस्तान की विभिन्न रियासतों के रईस लोग इसमें सम्मिलित हुए और हम नितान्त प्रसन्नतापूर्वक यह प्रकट करना चाहते हैं कि हमारे मद्रास ने भी इस में भाग लिया है। सम्मेलन की रुचि यहां तक बढ़ी कि विज्ञापन में प्रकाशित तीन दिनों पर एक दिन बढ़ाना पड़ा। अधिवेशन की कार्यकारिणी कमेटी ने लाहौर में सब से अधिक विशाल स्थान इस्लामिया कालेज प्रस्तावित किया किन्तु ख़ुदा की प्रजा की इतनी अधिक भीड़ थी कि स्थान की क्षमता अपर्याप्त सिद्ध हुई। सम्मेलन की महानता का यह पर्याप्त प्रमाण है कि सम्पूर्ण पंजाब के प्रतिष्ठित लोगों के अतिरिक्त चीफ़ कोर्ट तथा इलाहाबाद के हाईकोर्ट के सम्माननीय जज बाबू परतोल चन्दर साहिब तथा श्री बैनर्जी नितान्त प्रसन्नतापूर्वक सम्मेलन में सम्मिलित हुए।"

यह निबन्ध पहले धर्म महोत्सव लाहौर की रिपोर्ट में बिना किसी कमी के यथावत प्रकाशित हुआ और जमाअत अहमदिया की ओर से "इस्लामी उसूल की फ़्लास्फ़ी" शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तक के रूप में इसके कई संस्करण उर्दू और अंग्रेज़ी में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त इसका अनुवाद फ्रेंच, डच, स्पेनिश, अरबी, जर्मन इत्यादि भाषाओं में भी प्रकाशित हो चुका है तथा इस पर बड़े-बड़े दार्शनिकों तथा विदेशी अख़बारों पत्रिकाओं के सम्पादकों ने भी अतियुत्तम समीक्षाएं लिखीं तथा पश्चिमी विचारकों ने भी इस भाषण की उल्लेखनीय सराहना की। उदाहरणतया -

1. **ब्रिस्टल टाइम्ज़ एण्ड मिरर** ने लिखा - "निश्चय ही वह व्यक्ति जो यूरोप और अमरीका को इस रंग में संबोधित करता है कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो सकता।"

2. **"स्प्रीचुअल जरनल" बोस्टन** ने लिखा - "यह पुस्तक मानव जाति के लिए एक शुद्ध शुभ सन्देश है।"

3. "थ्योसोफ़ीकल बुक नोट्स" ने लिखा - "यह पुस्तक मुहम्मद (स.अ.व.) के धर्म की उत्तम और मनोहर कृति है।"

4. "इण्डियन रीवियू" ने लिखा :- "इस पुस्तक के विचार प्रकाशमान, ठोस और बुद्धिमत्ता से भरपूर हैं तथा अध्ययनकर्ता के मुख से सहसा उसकी प्रशंसा निकलती है।"

5. "मुस्लिम रीवियू" ने लिखा :- "इस पुस्तक का अध्ययनकर्ता इसमें बहुत से सच्चे, गूढ़, वास्तविक और प्राणवर्द्धक विचार पाएगा।"

("सिलसिला अहमदिया" लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब से उद्धरित)

इस निबन्ध की यह विशेषता है कि इसमें किसी अन्य धर्म पर आक्रमण नहीं किया गया अपितु केवल इस्लाम की विशेषताएं वर्णन की गई हैं तथा प्रश्नों के उत्तर क़ुर्आन मजीद ही से दिए गए हैं और इस प्रकार से दिए गए हैं कि जिन से इस्लाम का समस्त धर्मों से पूर्ण, उत्तम तथा सर्वश्रेष्ठ होना सिद्ध होता है।

इस पुस्तक में अध्यात्मिक ज्ञान से ओतप्रोत निबंध के हिन्दी अनुवाद को "इस्लामी नियमों की दार्शनिकता" का नाम दिया गया है। यह अनुवाद जनाब अन्सार अहमद एम.ए. बी.एड. आनर्स इन अरबिक ने किया है। इस समय देश के अधिकांश भागों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए नज़ारत नश्र व इशाअत ने जमाअत अहमदिया के वर्तमान पंचम ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब की अनुमति और आज्ञा से प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त कर रही है। आशा है कि यह अनुवाद समस्त देशवासियों को लाभ उठाने का अवसर प्रदान करेगा। परमेश्वर से यही हमारी कामना है।

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र व इशाअत, क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदोहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

इस्लाम

दावा और प्रमाण इल्हामी किताब पर आधारित होना आवश्यक है

आज इस शुभ सर्वधर्म महोत्सव में जिसका उद्देश्य यह है कि प्रत्येक आमंत्रित सज्जन विज्ञापन में दिए गए प्रश्नों की पाबन्दी करते हुए अपने अपने धर्म की विशेषताएं वर्णन करें। मैं इस्लाम धर्म की विशेषताओं का वर्णन करूंगा।

इस से पूर्व कि मैं अपने विषय का आरम्भ करूं इतना बता देना उचित समझता हूं कि मैंने इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा है कि जो कुछ वर्णन करूं ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम क़ुर्आन करीम से करूं क्योंकि मेरे निकट यह बहुत आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति जो किसी धर्म ग्रन्थ का पाबन्द हो और उस धर्म ग्रन्थ को ख़ुदा का ग्रन्थ समझता हो वह प्रत्येक बात में उसी धर्मग्रन्थ के उद्धरणों द्वारा उत्तर दे और अपनी वकालत के अधिकारों को इतना विशाल न करे जैसे वह एक नवीन धर्मग्रन्थ की रचना कर रहा है। अत: आज हमें क़ुर्आन करीम की विशेषताओं को प्रमाणित करना है और उसके चमत्कारों को प्रदर्शित करना है। इसलिए उचित है कि हम किसी बात को प्रस्तुत करने में उसके अपने वर्णन से बाहर न जाएं तथा उसी के संकेत या उसकी अपनी व्याख्या के अनुसार या उसी की आयतों के उद्धरणों से प्रत्येक उद्देश्य का उल्लेख करें ताकि दर्शकों को विभिन्न विचारों की तुलना करने में आसानी हो। चूंकि प्रत्येक सज्जन जो धर्मग्रन्थ के पाबन्द हैं अपने-अपने इल्हामी धर्मग्रन्थ के वर्णन के पाबन्द रहेंगे और

उसी धर्मग्रन्थ के कथन प्रस्तुत करेंगे। इसलिए हम ने यहां हदीसों के वर्णन को छोड़ दिया है, क्योंकि समस्त हदीसें क़ुर्आन करीम से ही ली गई हैं और वह पूर्ण धर्मग्रन्थ है जिस पर समस्त पुस्तकों का अन्त है। अतः आज क़ुर्आन करीम का वैभव प्रकट होने का दिन है और ख़ुदा से दुआ मांगते हैं कि वह इस कार्य में हमारा सहायक हो। तथास्तु।

प्रथम प्रश्न का उत्तर

मानव की शारीरिक, नैतिक और अध्यात्मिक अवस्थाएं

आदरणीय दर्शकों को ध्यान रहे कि इस विषय के प्रारंभिक पृष्ठों में भूमिका संबंधी कुछ इबारतें हैं जो प्रत्यक्ष रूप में असंबंधित प्रतीत होती हैं परन्तु मूल उत्तरों को समझने के लिए पहले उनका समझना नितान्त आवश्यक है। इसलिए भाषण को सरल और सुगम बनाने के लिए विषय को प्रारंभ करने से पूर्व इन इबारतों का उल्लेख किया गया ताकि मूल विषय समझने में कठिनाई न हो।

मानव की तीन प्रकार की अवस्थाएं

स्पष्ट हो कि प्रथम प्रश्न मानव की स्वाभाविक, नैतिक एवं अध्यात्मिक अवस्थाओं के संबंध में है। अतः ज्ञात होना चाहिए कि ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम क़ुर्आन करीम ने इन तीनों अवस्थाओं का इस प्रकार विभाजन किया है कि उन तीनों के पृथक-पृथक तीन स्रोत या तीन उद्गम निश्चित किए हैं जिनमें से पृथक-पृथक ये तीनों अवस्थाएं निकलती हैं।

प्रथम अवस्था : तामसिक वृत्ति

प्रथम उद्गम जो सम्पूर्ण स्वाभाविक अवस्थाओं का स्रोत है उसका नाम क़ुर्आन करीम ने तामसिक वृत्ति रखा है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन का कथन है -

1 यूसुफ़ - 54

अर्थात् तामसिक वृत्ति में यह विशेषता है कि वह मनुष्य को बुराई की ओर जो उसकी विशेषता के विरुद्ध और उसकी नैतिक अवस्थाओं के विपरीत है झुकाती है तथा अप्रिय और अनुचित मार्गों पर चलाना चाहती है। अतः असंतुलन और बुराइयों की ओर जाना मनुष्य की एक अवस्था है जो नैतिक अवस्था से पूर्व उस पर स्वाभाविक तौर पर छायी रहती है। यह अवस्था उस समय तक स्वाभाविक कहलाती है जब तक कि मनुष्य बुद्धि और अध्यात्म ज्ञान की छत्र-छाया में नहीं चलता अपितु पशुओं के समान खाने-पीने, सोने-जागने अथवा क्रोध और उत्तेजना दिखाने इत्यादि बातों में स्वाभाविक भावनाओं के अधीन रहता है और जब मनुष्य बुद्धि और अध्यात्म ज्ञान के परामर्श से स्वाभाविक अवस्थाओं में नियंत्रण लाकर और अभीष्ट उद्देश्य का ध्यान रखता है। उस समय इन तीनों अवस्थाओं का नाम स्वाभाविक अवस्थाएं नहीं रहता अपितु उस समय ये अवस्थाएं नैतिक अवस्थाएं कहलाती हैं। जैसा कि आगे भी इसका कुछ वर्णन आएगा।

द्वितीय अवस्था : राजसिक वृत्ति

नैतिक अवस्थाओं के उद्गम का नाम क़ुर्आन करीम में राजसिक वृत्ति है। जैसा कि क़ुर्आन करीम में ख़ुदा का कथन है -

وَلَآ اُقۡسِمُ بِالنَّفۡسِ اللَّوَّامَةِ [1]

अर्थात् मैं उस वृत्ति की सौगंध खाता हूं जो बुराई के कामों और प्रत्येक असंतुलन पर स्वयं को सुरक्षित करती है। यह राजसिक वृत्ति मानव अवस्थाओं का दूसरा उद्गम है जिस से नैतिक अवस्थाएं पैदा होती हैं और इस श्रेणी पर पहुंच कर मनुष्य पाशविक वृत्तियों से मुक्ति पाता है। यहां राजसिक वृत्ति की सौगंध खाना उसे सम्मान देने हेतु है जैसे वह तामसिक वृत्ति से राजसिक वृत्ति बन कर उन्नति करके

---

[1] सूरह अलक़ियामः - 3

ख़ुदा के दरबार में सम्मान पाने के योग्य हो गई। इस अवस्था का नाम राजसिक इसलिए रखा गया कि वह मनुष्य को बुराई पर भर्त्सना करती है और इस बात पर कभी सहमत नहीं होती कि मनुष्य अपनी स्वाभाविक आवश्यकताओं पर निरंकुश होकर चले और पशुओं के समान जीवनयापन करे वरन् यह चाहता है कि उससे महान चरित्र एवं उच्च आदर्श का प्रदर्शन हो और मानव जीवन के समस्त क्षेत्रों में कोई अनुचित कार्य न हो और स्वाभाविक भावनाएं तथा स्वाभाविक इच्छाएं बुद्धि के परामर्श से प्रकट हों। चूंकि वह वृत्ति अनैतिक कर्म पर भर्त्सना करती है इसलिए उसका नाम राजसिक वृत्ति है अर्थात् बहुत भर्त्सना करने वाली वृत्ति। राजसिक वृत्ति को यद्यपि स्वाभाविक आवेग पसन्द नहीं अपितु स्वयं की भर्त्सना करती रहती है परन्तु शुभ कार्यों के करने पर पूर्ण रूप से समर्थ भी नहीं हो सकती तथा कभी न कभी स्वाभाविक आवेग उस पर विजयी हो जाते हैं तब उसका पतन हो जाता है और ठोकर खाती है। मानो वह एक निर्बल बच्चे के समान होती है जो गिरना नहीं चाहता परन्तु निर्बलता के कारण गिरता है, फिर अपनी कमज़ोरी पर प्रायश्चित करता है। अतः यह मनोवृत्ति मन की वह नैतिक अवस्था है जब मनोवृत्ति उत्कृष्ट शिष्टाचारों को अपने अन्दर एकत्र करती है और उद्दण्डता को अप्रिय समझती है परन्तु पूर्ण रूप से उन पर विजय प्राप्त नहीं कर सकती।

तीसरी अवस्था : सात्त्विक वृत्ति

फिर एक तीसरा स्रोत है जिसे अध्यात्मिक अवस्थाओं का उद्गम कहना चाहिए। क़ुर्आन करीम ने इस उद्गम का नाम सात्त्विक वृत्ति रखा है। जैसा कि उसका कथन है -

يَآاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۞ ارْجِعِىٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۞

فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْ ۞ وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ ۞ ①

① सूरह अलफ़ज्र - 28 से 31

अर्थात् हे पूर्ण शान्तिमय एवं सन्तोषयुक्त वृत्ति जो ख़ुदा से शान्ति और सन्तोष प्राप्त कर चुकी है अपने ख़ुदा की ओर वापस चली आ। तू उस से प्रसन्न और वह तुझ से प्रसन्न है। अतः मेरे बन्दों में सम्मिलित हो जा और मेरे स्वर्ग के अन्दर आ जा।

यह वह श्रेणी है जिससे वृत्ति समस्त कमज़ोरियों से मुक्ति पा कर अध्यात्मिक शक्तियों से भर जाती है तथा ख़ुदा तआला से ऐसा घनिष्ट एवं अटूट संबंध स्थापित कर लेती है कि उसके बिना जीवित भी नहीं रह सकती। जिस प्रकार जल का स्वभाव ऊपर से नीचे की ओर गिरने का है और अपनी अधिकता तथा बाधाओं के दूर होने के कारण उसका प्रवाह बड़े वेग से होता है इसी प्रकार वह आत्मा ख़ुदा की ओर बड़ी तीव्र गति से बहती चली जाती है। ख़ुदा तआला का इसी की ओर संकेत है कि हे वह वृत्ति जो ख़ुदा की ओर सम्पूर्ण सन्तोष और शान्ति से आराम पा गई है उसकी ओर वापस चली आ। अतः वह इसी जीवन में न कि मृत्योपरांत एक महान परिवर्तन लाती है और इसी संसार में न कि दूसरे स्थान पर उसे एक स्वर्ग प्राप्त होता है और जैसा कि इस आयत में उल्लेख है कि अपने रब्ब की ओर अर्थात् प्रतिपालक की ओर वापस आ। ऐसा ही उस समय वह ख़ुदा से पोषण पाती है और ख़ुदा का प्रेम उसका भोजन होता है और इसी जीवनदायिनी स्रोत से जलपान करती है। इसलिए मृत्यु से मुक्ति पाती है। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का कथन है -

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝ ①

अर्थात् जिसने भौतिक आवेगों से अपनी वृत्ति को पवित्र रखा वह मुक्ति पा गया। वह तबाह नहीं होगा परन्तु जिसने भौतिक आवेगों में जो स्वाभाविक आवेग हैं स्वयं को छुपा दिया वह जीवन से निराश हो गया।

① सूरह अश्शम्स - 10-11

अतः ये तीन अवस्थाएं हैं जिन्हें दूसरे शब्दों में स्वाभाविक, नैतिक और अध्यात्मिक अवस्थाएं कह सकते हैं और चूंकि स्वाभाविक इच्छाएं अपनी चरम सीमा पर पहुंचकर बहुत भयानक हो जाती हैं और प्रायः शिष्टाचार और आध्यात्मिकता का सर्वनाश कर देती हैं। इसलिए ख़ुदा तआला के पवित्र ग्रन्थ क़ुर्आन में उन्हें तामसिक वृत्ति की अवस्थाओं के नाम से पुकारा गया है। यदि प्रश्न यह हो कि मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं पर क़ुर्आन करीम का क्या प्रभाव है और वह उनके संबंध में क्या निर्देश देता है और व्यावहारिक तौर पर उनको किस सीमा तक रखना चाहता है। अतः स्पष्ट हो कि क़ुर्आन करीम की दृष्टि से मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं का उसकी नैतिक और अध्यात्मिक अवस्थाओं से नितान्त घनिष्ठ संबंध हैं यहां तक कि मनुष्य के खान-पान संबंधी ढंग भी मनुष्य की भौतिक और अध्यात्मिक अवस्थाओं पर प्रभावी होते हैं और यदि इन स्वाभाविक अवस्थाओं से शरीअत के निर्देशानुसार काम लिया जाए तो जैसा कि नमक की खान में पड़ कर प्रत्येक वस्तु नमक ही हो जाती है इसी प्रकार ये समस्त अवस्थाएं नैतिक ही हो जाती हैं और आध्यात्मिकता पर नितान्त गहरा प्रभाव डालती हैं। इसीलिए क़ुर्आन करीम ने समस्त उपासनाओं (इबादतों) और आन्तरिक शुद्धताओं के उद्देश्य तथा विनय और विनम्रता के उद्देश्यों से शारीरिक शुद्धताओं तथा शारीरिक नियमों एवं शारीरिक संतुलन पर बहुत बल दिया है तथा विचार करने के समय यही फ़िलासफ़ी नितान्त उपयुक्त विदित होती है कि शारीरिक बनावटों का आत्मा (रूह) पर शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है जैसा कि हम देखते हैं कि हमारे स्वाभाविक क्रियाएं कार्य यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से शारीरिक हैं परन्तु हमारी आध्यात्मिक अवस्थाओं पर उनका प्रभाव अवश्य है। उदाहरणतया जब हमारी आंखें रोना आरंभ करें और यद्यपि कृत्रिम रूप से ही रोएं परन्तु तत्क्षण उन आंसुओं की एक ज्वाला उठ कर हृदय पर जा पड़ती है। तब हृदय भी आंखों का अनुसरण करके

शोकग्रस्त हो जाता है। इसी प्रकार जब हम कृत्रिम तौर पर हंसना आरंभ करें तो हृदय में भी एक प्रफुल्लता पैदा हो जाती है। यह भी देखा जाता है कि शारीरिक सज्दह भी आत्मा में विनय और विनम्रता की अवस्था को जन्म देता है। इसके मुकाबले पर हम यह भी देखते हैं कि जब हम गर्दन को ऊंचा खींचकर और वक्ष को उभार कर चलें तो इस प्रकार का चलना हम में एक प्रकार का अभिमान और अहंभाव पैदा करता है। अतः इन उदाहरणों से भली भांति स्पष्ट हो जाता है कि शारीरिक बनावट से अध्यात्मिक अवस्थाओं का प्रभावित होना अवश्यंभावी है।

इसी प्रकार बहुत से अनुभवों से यह स्पष्ट हो गया है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजनों का भी मानसिक और हार्दिक शक्तियों पर प्रभाव अवश्य है। उदाहरणतया तनिक विचार कीजिए कि जो लोग कभी मांस नहीं खाते शनैः शनैः उनकी वीर-भावना कम हो जाती है यहां तक कि हृदय के बहुत कमज़ोर हो जाते हैं तथा एक ईश्वर प्रदत्त और प्रशंसनीय शक्ति को खो बैठते हैं। इसकी साक्ष्य ख़ुदा के प्रकृति के नियम से इस प्रकार पर भी मिलती है कि पशुओं में से जितने शाकाहारी पशु हैं कोई भी उनमें से वह वीरता नहीं रखता जो एक मांसाहारी पशु रखता है। पक्षियों में भी यही प्राकृतिक विधान देखा जाता है। अतः इसमें क्या सन्देह है कि नैतिकता पर भोजनों का प्रभाव अवश्य है। हां जो लोग दिन-रात मांस खाने पर ही बल देते हैं और शाकाहारी भोजनों का बहुत ही कम सेवन करते हैं वे भी शालीनता और विनय के आचरण में कम हो जाते हैं और मध्य मार्ग का अनुसरण करने वाले दोनों आचरणों के स्वामी होते हैं। इसी दूरदर्शिता की दृष्टि से ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम में कहा है -

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا[1]

---

[1] सूरह अलआ'राफ़ - 32

अर्थात् मांस भी खाओ और अन्य वस्तुएं भी खाओ परन्तु किसी वस्तु का सीमा से बढ़कर सेवन न करो ताकि उसका नैतिक अवस्था पर दुष्प्रभाव न पड़े और ताकि यह अधिकता स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी न हो। जैसा कि शारीरिक कार्यों तथा कर्मों का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है इसी प्रकार कभी आत्मा का प्रभाव शरीर पर भी जा पड़ता है। जिस व्यक्ति को कोई शोक पहुंचे अन्त में उसके नेत्र छलक पड़ते हैं और जिसे प्रसन्नता हो अन्त में वह मुस्कराता है। हमारा खाना-पीना, सोना-जागना, गति करना, आराम करना, स्नान करना इत्यादि जितने भी स्वाभाविक कार्य हैं ये समस्त कार्य हमारी अध्यात्मिक अवस्था पर अवश्य प्रभाव डालते हैं। हमारी शारीरिक बनावट का हमारी मानवता से गहरा संबंध है। मस्तिष्क के एक भाग पर चोट लगने से सहसा स्मरण शक्ति जाती रहती है और दूसरे स्थान पर चोट लगने से चेतना शक्ति समाप्त हो जाती है। संक्रमण की एक विषाक्त वायु कितनी शीघ्रता से शरीर पर प्रभाव डालकर फिर हृदय को प्रभावित करती है और देखते-देखते वह आन्तरिक व्यवस्था जिसके साथ नैतिकता की सम्पूर्ण व्यवस्था संलग्न है अस्त-व्यस्त होने लगती है यहां तक कि मनुष्य पागल होकर कुछ ही पलों में गुज़र जाता है। अतः शारीरिक आघात भी अद्भुत प्रतिक्रिया दिखाते हैं जिन से प्रमाणित होता है कि आत्मा और शरीर का एक ऐसा संबंध है कि इस रहस्य को खोलना मनुष्य का काम नहीं। इस के अतिरिक्त इस अटूट संबंध के प्रमाण पर यह तर्क है कि विचार करने से ज्ञात होता है कि आत्मा की जननी शरीर ही है। गर्भवती स्त्रियों के गर्भ में आत्मा कभी ऊपर से नहीं गिरती अपितु वह एक प्रकाश है जो वीर्य में ही छुपा होता है और शरीर के विकास के साथ वह भी विकसित होता जाता है। ख़ुदा तआला का पवित्र कलाम (वाणी) हमें समझाता है कि आत्मा उस शरीर में से ही प्रकट हो जाती है जो वीर्य से गर्भाशय में तैयार होती है। जैसा कि

अल्लाह तआला का क़ुर्आन करीम में कथन है -

ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝ ①

अर्थात् फिर हम उस शरीर को जो गर्भाशय में तैयार हुआ था एक अन्य पैदायश के रूप में लाते हैं तथा उसको एक नवीन सृष्टि का रूप प्रदान करते हैं जिसे आत्मा का नाम देते हैं। ख़ुदा असीम वरदानों का स्रोत है तथा ऐसा अद्वितीय स्रष्टा है कि उसके सदृश कोई नहीं।

अल्लाह तआला ने यह जो कहा कि हम उसी शरीर में से एक अन्य सृष्टि प्रकट करते हैं, यह एक गहरा रहस्य है जो आत्मा की वास्तविकता प्रदर्शित कर रहा है और उन नितान्त घनिष्ठ संबंधों की ओर संकेत कर रहा है जो आत्मा और शरीर के मध्य स्थित हैं। यह संकेत हमें इस बात की भी शिक्षा देता है कि मनुष्य की समस्त शारीरिक तथा स्वाभाविक क्रियाएं और कथन जब ख़ुदा तआला के लिए और उसके मार्ग में प्रदर्शित होने लगें तो उन से भी यही अलौकिक दर्शन सम्बद्ध है अर्थात् उन निश्छल कार्यों में भी आरंभ से ही एक आत्मा गुप्त होती है जिस प्रकार कि वीर्य में गुप्त थी तथा जैसे जैसे इन क्रियाओं से एक शरीर का निर्माण होता जाए वह आत्मा चमकती जाती है और जब वह शरीर अपनी पूर्णता को पहुंच जाता है तो सहसा वह आत्मा अपनी पूर्ण झलक के साथ चमक उठती है और अपनी आत्मा की हैसियत से अपने अस्तित्व को दिखा देती है और जीवन की स्पष्ट गति प्रारंभ हो जाती है। जैसे ही क्रियाओं का पूर्ण शरीर तैयार हो जाता है वैसे ही तुरन्त बिजली के समान एक वस्तु अन्दर से अपनी खुली-खुली चमक दिखाना आरंभ कर देती है। यह वही युग होता है जिसके संबंध में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में दृष्टांत के तौर पर कहा है -

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝ ②

---

① सूरह अलमोमिनून - 15

② सूरह अलहिज्र - 30

अर्थात् जब मैंने उसका शरीर बना लिया और प्रकाश की झलकियों की पूर्ण अभिव्यक्ति कर ली और अपनी रूह उसमें फूंक दी तो तुम सब लोग उसके लिए पृथ्वी पर सज्दह करते हुए गिर जाओ। अतः इस आयत में यही संकेत है कि जब क्रियाओं का शरीर पूर्ण रूप से तैयार हो जाता है तो उस शरीर में वह रूह (आत्मा) चमक उठती है जिसे ख़ुदा तआला अपने अस्तित्व की ओर सम्बद्ध करता है क्योंकि भौतिक जीवन की समाप्ति के पश्चात् वह ढांचा तैयार होता है। इस लिए ख़ुदा का प्रकाश जो पहले मन्द था सहसा भड़क उठता है और अनिवार्य होता है कि ख़ुदा के ऐसे वैभव को देखकर प्रत्येक नतमस्तक हो और उसकी ओर खींचा जाए। अतः प्रत्येक उस प्रकाश को देखकर नतमस्तक होता है और स्वाभाविक तौर पर उस ओर आता है सिवाए शैतान के जो अंधकार से मित्रता रखता है।

★ यहां एक और रहस्य वर्णन करना लाभ से खाली नहीं और वह यह है कि गर्भाशय में जो बच्चा पैदा होता है वह चार माह दस दिन के पश्चात् गति करता है और यह समय संभवतः उस समय से आधा समय है। जिस समय तक बच्चा गर्भाशय के एकान्तवास में रहता है। अतः जैसा कि जनीन अर्थात् गर्भाशय के अन्दर का बच्चा चौथे महीने अपने जीवन का चमत्कार दिखाता है और वनस्पति रूप से प्राणी रूप में आ जाता है। यही प्रकृति का नियम आध्यात्मिक सृष्टि में पाया जाता है अर्थात् जिस प्रकार जनीन गर्भाशय के एकान्तवास में अपने आन्तरिक निवास का लगभग आधा समय व्यतीत करके फिर जीवन के लक्षण प्रकट करता है और जीवन की पूर्ण झलक दिखाता है। यही अवस्था आध्यात्मिक जीवन के लिए प्रारब्ध है। मनुष्य का उत्तम जीवन जो विघ्न ज्ञानेन्द्रियों के विघ्न की गंदगियों और मलिनताओं से पवित्र है जो अधिकांश लोगों को दृष्टिगत रखते

★ इस निशान से लेकर पृष्ठ 15 के ★ निशान तक की इबारत मूल मसौदे में मौजूद है जबकि रिपोर्ट और प्रथम संस्करण में लिखने से रह गई। वर्तमान संस्करण में इसे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम की अनुमति से सम्मिलित किया जा रहा है। (प्रकाशक)

हुए अस्सी वर्ष तक होता है और अस्सी का आधा चालीस है जो चार के शब्द से बहुत समान है अर्थात इस चार महीने से जिसकी गणना समाप्त होने पर गर्भाशय के बच्चे को जीवन की रूह (आत्मा) मिलती है। अतः उचित अनुभव सिद्ध करता है कि जब मनुष्य अपने उत्तम जीवन का आधा भाग अर्थात् चालीस वर्ष जो गर्भाशय के चार महीने के समान है तय कर लेता है या उस के सर पर पहुंच जाता है, तब यदि उसके ख़मीर में सच्चाई की रूह होती है तो वह रूह उस विशेष समय पर आकर अपने स्पष्ट लक्षण दिखाती है और गति करना आरंभ कर देती है।

यह बात किसी पर गुप्त नहीं होगी कि चालीस वर्ष से पूर्व प्रायः मनुष्य पर अंधकार के समय का प्रभुत्व रहता है क्योंकि सात-आठ वर्ष तो बचपन में ही गुज़रते हैं फिर पच्चीस-छब्बीस वर्ष तक ज्ञानों की प्राप्ति में व्यस्त रहता है या खेल-कूद में नष्ट करता है और फिर इसके पश्चात् विवाह हो जाने और पत्नी तथा बच्चा हो जाने के कारण अथवा यों ही स्वाभाविक तौर पर सांसारिक इच्छाएं उस पर विजयी होती हैं तथा सांसारिक धन-संपत्तियों एवं सम्मानों के लिए नाना प्रकार की इच्छाएं और उमंगें जन्म लेती हैं तथा आनन्दों की तृप्ति के लिए विचार चरम सीमा तक पहुंच जाता है और यदि परमेश्वर की ओर प्रवृत्त भी हो तो संसार की इच्छाएं किसी सीमा तक साथ होती हैं। यदि दुआ भी करे तो संभवतः संसार के लिए अधिक करता है और यदि रोए भी तो कदाचित उसमें सांसारिक उद्देश्यों की मिलौनी होती है। आख़िरत के दिन पर बहुत कमज़ोर ईमान होता है और यदि हो भी तो मरने में अभी लम्बा समय विदित होता है और जिस प्रकार किसी नहर का बांध टूट कर आस-पास की पृथ्वी को तबाह करता चला जाता है, उसी प्रकार कामभावनाओं की बाढ़ जीवन को अत्यन्त ख़तरे में डाल देती है। इस अवस्था में वह आख़िरत की बारीक-बारीक बातों को कब स्वीकार कर सकता है अपितु धार्मिक बातों पर हंसता और उपहास करता है तथा अपने नीरस तर्कशास्त्र और निरर्थक दर्शनशास्त्र

को प्रदर्शित करता है, हां यदि स्वभाव में सदाचार हो तो ख़ुदा को भी मानता है परन्तु हार्दिक श्रद्धा और निष्ठा से नहीं मानता अपितु अपनी सफलताओं की शर्त से। यदि सांसारिक मनोकामनाएं प्राप्त हो गईं तो ख़ुदा का अन्यथा शैतान का।

अतः इस युवावस्था में बहुत गंभीर स्थिति होती है और यदि ख़ुदा की कृपा साथ न दे तो नर्क के गड्ढे में गिर जाता है। सच तो यह है कि यही आयु समस्त बुराइयों की जड़ है। इसी आयु में मनुष्य अधिकतर शीरीरिक रोगों तथा कुछ गुप्त रोग खरीद लेता है। इस कच्ची आयु की ग़लतियों से प्रायः सच्चे और अपरिवर्तनीय ख़ुदा से विमुख हो जाता है। अतः यह वह समय है जिस में ख़ुदा का भय कम कामवासना की इच्छा तथा मनोवृत्ति का प्रभुत्व होता है और किसी नसीहत करने वाले की बात नहीं सुनता। इसी समय की गलतियों का परिणाम जीवन पर्यन्त भुगतना पड़ता है। फिर जब चालीस वर्ष तक पहुंचता है जो युवावस्था के बाल और पर कुछ-कुछ गिरने आरंभ हो जाते हैं। अब स्वयं ही उन बहुत सी ग़लतियों पर लज्जित होता है जिन पर नसीहत करने वाले सर पीट कर रह गए थे। मनोवृत्ति के आवेग स्वयं ही कम होते चले जाते हैं, क्योंकि शारीरिक अवस्था की दृष्टि से आयु के पतन का समय भी आरंभ हो जाता है। वह उपद्रवी रक्त अब कहां पैदा होता है जो पहले पैदा होता था, वह अंगों की शक्ति और जवानी का मस्ती भरा आनन्द कहां शेष रहता है जो पहले था। अब तो पतन और घाटे का समय आता जाता है तथा इस पर निरन्तर उन बुज़ुर्गों की मौतें देखनी पड़ती हैं जो अपनी आयु से बहुत अधिक थे अपितु प्रायः मृत्यु और प्रारब्ध से छोटों की मौतें भी कमरें तोड़ती हैं और संभवतः उस समय में माता-पिता की क़ब्रों में जा लेटते हैं और संसार के अस्थायी होने के बहुत से उदाहरण प्रकट हो जाते हैं और ख़ुदा तआला उसके समक्ष एक दर्पण रख देता है कि देख संसार की यह कहानी है और जिसके लिए तू मरता है उसका अंजाम यह है। तब अपनी पिछली ग़लतियों को उत्कंठा की दृष्टि से देखता है और उस पर एक भारी

परिवर्तन आता है और एक नए संसार का आरंभ होता है इस शर्त पर कि स्वभाव में नेकी रखता हो और उनमें से हो जो बुलाए गए हैं। इसी बारे में अल्लाह तआला का कथन है -

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ؕۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○[1]

अर्थात् हमने मनुष्य को यह वसीयत की है कि तू अपने माता-पिता से नेकी कर। देख तेरी मां ने तेरे लिए क्या कष्ट उठाए। वह तेरे गर्भ में होने के कारण लम्बे समय तक कष्ट में रही और दुखों एवं कष्टों से तुझे जन्म दिया, तेरे दूध पिलाने और गर्भ में रहने से तीस महीने तक उसने कष्ट उठाए। पुनः कहता है कि जब नेक मनुष्य चालीस वर्ष का हो जाता है और परिपक्व बुद्धि को पहुंचता है तब उसे ख़ुदा की वसीयतें याद आती हैं और कहता है कि हे मेरे प्रतिपालक ! अब मुझे सामर्थ्य दे कि तेरी उन ने'मतों का आभार प्रकट करूं जो मुझ पर और मेरे मां-बाप पर हैं। हे मेरे प्रतिपालक ! अब मुझे सामर्थ्य दे कि तेरी उन ने'मतों का आभार प्रकट करूं जो मुझ पर और मेरे मां-बाप पर हैं। हे मेरे प्रतिपालक ! अब तू मुझ से वह कार्य करा जिस से तू प्रसन्न हो जाए और मेरी सन्तान को मेरे लिए योग्यता प्रदान कर

---

① अलअहक़ाफ़-16

अर्थात् यदि मैंने मां-बाप के पक्ष में ग़लती की तो ऐसा न हो कि वे भी करें और यदि मुझ पर कोई आवारगी का समय रहा तो ऐसा न हो कि उन पर आए। हे मेरे ख़ुदा ! अब मैं पश्चाताप करता हूं और मैं तेरे आज्ञाकारियों में से हो गया हूं। अतः ख़ुदा ने इस आयत में स्पष्ट कर दिया कि नेक बन्दों पर चालीसवां वर्ष बड़ा शुभ आता है तथा जिसमें सच्चाई की रूह है वह रूह अवश्य चालीसवें वर्ष में गति करती है। ख़ुदा के अधिकांश बुज़ुर्ग नबी भी इसी चालीसवें वर्ष पर अवतरित हुए हैं। अतः हमारे सरदार एवं स्वामी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] चालीसवें वर्ष में ही ख़ुदा की प्रजा के सुधार के लिए अवतरित हुए। ★

जीवात्मा ख़ुदा की सृष्टि है

मैं पुनः अपनी पिछली बात की ओर आता हूं कि यह बात नितान्त उचित और सही है कि आत्मा एक सूक्ष्म प्रकाश है जिसकी उत्पत्ति इस शरीर के अन्दर ही से होती है जो गर्भाशय में पोषण पाती है। उत्पत्ति से अभिप्राय यह है कि उसकी प्रथम अवस्था गुप्त और अदृश्य होती है फिर स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाती है और प्रारंभ में उसका बीज-रूप वीर्य में ही विद्यमान होता है। निःसन्देह वह आकाशीय ख़ुदा के इरादे और उसकी आज्ञा तथा इच्छानुसार उसका संबंध एक अज्ञात रूप में वीर्य से होता है। वीर्य का यह एक प्रकाशित और प्रकाशमान जौहर है। नहीं कह सकते कि वह वीर्य का ऐसा भाग है जैसा कि शरीर शरीर का भाग होता है परन्तु यह भी नहीं कह सकते कि उसका उद्भव कहीं बाहर से होता है या पृथ्वी पर गिर कर वीर्य के तत्त्व से मिल जाता है अपितु वह वीर्य में ऐसा गुप्त होता है जैसा कि पत्थर के गर्भ में अग्नि होती है। ख़ुदा की पवित्र वाणी क़ुर्आन का यह उद्देश्य नहीं है कि आत्मा पृथक तौर पर आकाश या अन्तरिक्ष से पृथ्वी पर गिरती है और फिर किसी संयोग से वीर्य के साथ मिलकर गर्भाशय के अन्दर चली जाती है अपितु

यह विचार किसी प्रकार भी उचित नहीं ठहर सकता। यदि हम ऐसा विचार करें तो प्रकृति का नियम हमें मिथ्या पर ठहराता है। हम प्रतिदिन देखते हैं कि गन्दे और बासी खानों में तथा गन्दे घावों में हज़ारों कीड़े पड़ जाते हैं, मैले कपड़ों में सैकड़ों जुएं पड़ जाते हैं, मनुष्य के पेट के अन्दर भी कद्दूदाने इत्यादि पैदा हो जाते हैं। परन्तु क्या हम कह सकते हैं कि वे बाहर से आते हैं या आकाश से उतरते किसी को दिखाई देते हैं। अत: उचित बात यह है कि **आत्मा शरीर में से ही निकलती है** और इसी तर्क से उसका सृष्टि होना भी प्रमाणित होता है।

जीवात्मा का पुनर्जन्म

अब इस वर्णन से हमारा उद्देश्य यह है कि जिस सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने आत्मा को पूर्ण क़ुदरत के साथ शरीर में से ही निकाला है उसका यही इरादा मालूम होता है कि आत्मा के पुनर्जन्म को भी शरीर के द्वारा ही व्यक्त करे। आत्मा की क्रियाएं हमारे शरीर की क्रियाओं पर आधारित हैं। हम जिस ओर शरीर को खींचते हैं आत्मा भी अनिवार्य तौर पर पीछे-पीछे खिंची चली आती है। इसलिए मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं की ओर ध्यान देना ख़ुदा तआला की वाणी पवित्र क़ुर्आन का कार्य है। यही कारण है कि क़ुर्आन करीम ने मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं के सुधार के लिए बहुत ध्यान दिया है। मनुष्य का हंसना, रोना, खाना-पीना, पहनना, सोना, बोलना, मौन रहना, विवाह करना, अविवाहित रहना, चलना-ठहरना तथा बाह्य पवित्रता इत्यादि के नियमों का पालन करना और रोग और निरोग की अवस्था में विशिष्ट नियमों का पालन करना, इन समस्त विषयों पर आदेशों का उल्लेख है और मनुष्य की शारीरिक अवस्थाओं को अध्यात्मिक अवस्थाओं पर बहुत ही प्रभावी ठहराया दिया है। यदि इन आदेशों का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया जाए तो मैं यह नहीं सोच सकता कि इस वक्तव्य को सुनाने के लिए कोई यथेष्ठ समय मिल सके ?

मनुष्य का क्रमिक विकास

मैं जब ख़ुदा तआला की पवित्र वाणी क़ुर्आन पर विचार करता हूं और देखता हूं कि उसने क्योंकर अपनी शिक्षाओं में मनुष्य को उसकी स्वाभाविक अवस्थाओं के सुधार के नियम प्रदान कर फिर शनैः शनैः विकास की ओर अग्रसर किया है और उच्च श्रेणी की अध्यात्मिक अवस्था तक पहुंचाना चाहा है तो मुझे यह आध्यात्म से भरपूर नियम ऐसा प्रतीत होता है कि प्रथम ख़ुदा ने यह चाहा है कि मनुष्य को उठने-बैठने, खाने-पीने, बातचीत करने तथा रहन-सहन के समस्त प्रकार के व्यावहारिक ज्ञानों की शिक्षा दे कर उसे अमानुषिक परम्पराओं से मुक्ति दे और पाशविकता को पहचानने की पूर्ण शक्ति प्रदान कर एक तुच्छ श्रेणी की नैतिक अवस्था जिसे सभ्यता और शालीनता की संज्ञा दी जा सकती है सिखाए। फिर मनुष्य की स्वाभाविक आदतों को जिन्हें दूसरे शब्दों में दुराचरण (तमोगुण) कह सकते हैं संतुलन पर लाए ताकि वह संतुलन पाकर उच्च आरचरण के रंग में आ जाएं, परन्तु ये दोनों विधियां वास्तव में एक ही हैं क्योंकि स्वाभाविक अवस्थाओं के सुधार से संबंधित हैं केवल निम्न और उच्च श्रेणी के अन्तर ने इनको दो भागों में विभाजित कर दिया है और उस स्वच्छन्द नीतिवान ख़ुदा ने सदाचार की व्यवस्था को इस प्रकार से प्रस्तुत किया है जिस से मनुष्य चरित्र के निम्न स्तर से उठ कर सदाचार के उच्च स्तर तक पहुंच सके।

विकास का तीसरा चरण

यह रखा है कि मनुष्य अपने वास्तविक स्रष्टा के प्रेम और प्रसन्नता में लीन हो जाए और उसका सम्पूर्ण अस्तित्व ख़ुदा के लिए हो जाए। यह वह श्रेणी है जिसे स्मरण कराने के लिए मुसलमानों के धर्म का नाम इस्लाम रखा क्योंकि इस्लाम इस बात का नाम है कि मनुष्य का पूर्ण रूप से ख़ुदा के लिए हो जाना तथा अपना कुछ शेष न रखना जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

بَلٰی ٭ مَنۡ اَسۡلَمَ وَجۡہَہٗ لِلّٰہِ وَ ہُوَ مُحۡسِنٌ فَلَہٗۤ اَجۡرُہٗ عِنۡدَ رَبِّہٖ ۪ وَ لَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ۝ ①

قُلۡ اِنَّ صَلَاتِیۡ وَ نُسُکِیۡ وَ مَحۡیَایَ وَ مَمَاتِیۡ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۝ۙ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ ۚ وَ بِذٰلِکَ اُمِرۡتُ وَ اَنَا اَوَّلُ الۡمُسۡلِمِیۡنَ ۝ ②

وَ اَنَّ ہٰذَا صِرَاطِیۡ مُسۡتَقِیۡمًا فَاتَّبِعُوۡہُ ۚ وَ لَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِکُمۡ عَنۡ سَبِیۡلِہٖ ؕ ③

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ وَ یَغۡفِرۡ لَکُمۡ ذُنُوۡبَکُمۡ ؕ وَ اللّٰہُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ۝ ④

अनुवाद - अर्थात् मुक्ति प्राप्त वह व्यक्ति है जो अपने अस्तित्व को ख़ुदा के लिए और ख़ुदा के मार्ग में समर्पित कर दे और न केवल नीयत से अपितु शुभ कर्मों द्वारा अपनी सच्चाई को दिखाए। जो व्यक्ति ऐसा करे उसका प्रतिफल ख़ुदा के यहां सुरक्षित हो चुका और ऐसे लोगों पर न कुछ भय है और न वे शोकग्रस्त होंगे। कह मेरी नमाज़ (उपासना) और मेरा बलिदान और मेरा जीवित रहना और मेरा मरना उस ख़ुदा के लिए है जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रतिपालक है। कोई वस्तु और कोई व्यक्ति उसका भागीदार नहीं और सृष्टि की उसके साथ किसी प्रकार की भागीदारी नहीं। मुझे यही आदेश है कि मैं ऐसा करूं और इस्लाम का सच्चा और पूर्ण अनुयायी अर्थात् ख़ुदा के मार्ग में अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को समर्पित करने वाला सर्वप्रथम

① सूरह अलबक़रह - 113
② सूरह अलअन्आम - 163, 164
③ सूरह अलअन्आम - 154
④ सूरह आले इमरान - 32

मैं हूं। एकमात्र यही मेरा मार्ग है। अतः आओ मेरे मार्ग पर चलो और उसके विपरीत कोई मार्ग न अपनाओ कि ख़ुदा से दूर जा पड़ोगे। उनको कह दे कि यदि ख़ुदा से प्रेम करते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो और मेरे बताए मार्ग पर चलो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम करे और तुम्हारे पाप क्षमा करे और वह तो बहुत क्षमा करने वाला और अत्यन्त दयालु है।

स्वाभाविक अवस्थाओं एवं शिष्टाचार में अन्तर तथा जीव-हत्या का खण्डन

अब हम मनुष्य के उन तीन स्तरों का पृथक-पृथक वर्णन करेंगे, परन्तु प्रथम यह स्मरण कराना आवश्यक है कि स्वाभाविक अवस्थाओं का उद्‌गम और स्रोत तामसिक वृत्ति है ख़ुदा तआला की पवित्र वाणी में संकेतों के अनुसार नैतिक अवस्थाओं से कोई पृथक वस्तु नहीं है क्योंकि ख़ुदा की पवित्र वाणी ने सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियों एवं शारीरिक इच्छाओं तथा मांगों को स्वाभाविक अवस्थाओं के अन्तर्गत रखा है और वही स्वाभाविक अवस्थाएं हैं जो इच्छानुसार अनुक्रम, संतुलन तथा यथास्थान और यथाअवसर प्रयोग करने के पश्चात् शिष्टाचार का रूप धारण कर लेती हैं। ठीक इसी प्रकार नैतिक अवस्थाएं अध्यात्मिक अवस्थाओं से भिन्न नहीं हैं वरन् यही नैतिक अवस्थाएं हैं जो ख़ुदा में पूर्ण तन्मयता और आत्मशुद्धि तथा ख़ुदा की ओर पूर्ण त्याग, पूर्ण प्रेम, पूर्ण तल्लीनता, पूर्ण सन्तोष एवं सन्तुष्टि तथा अल्लाह तआला से नाता जोड़ कर आध्यात्मिकता का रूप धारण कर लेती हैं।

स्वाभाविक अवस्थाएं जब तक शिष्टाचार के रूप में न आएं मनुष्य को किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं बनातीं, क्योंकि वे दूसरे प्राणियों अपितु स्थूल पदार्थों में भी पाई जाती हैं। इसी प्रकार एकमात्र शिष्टाचार की प्राप्ति भी मनुष्य को अध्यात्मिक जीवन प्रदान नहीं कर सकती अपितु एक व्यक्ति ख़ुदा तआला के अस्तित्व का इन्कारी रह कर

अच्छे शिष्टाचार का प्रदर्शन कर सकता है। दीनता या विशाल-हृदयता, मैत्रीभाव रखना या बुराई का त्याग करना तथा उद्दण्ड और दुष्ट मनुष्यों के मुकाबले पर न आना ये समस्त स्वाभाविक अवस्थाएं हैं तथा ऐसी बातें हैं जो एक अयोग्य व्यक्ति को भी प्राप्त हो सकती हैं जो मुक्ति के वास्तविक उद्‌गम से वंचित और अपरिचित मात्र है कतिपय पशु भी दीन स्वभाव के होते हैं तथा अपने स्वामी से घुल मिल जाने और सिधाए जाने से मैत्रीभाव भी दिखाते हैं। निरन्तर डंडा मारने पर भी कोई मुकाबला नहीं करते परन्तु फिर भी उनको मनुष्य नहीं कहा जा सकता कहां यह कि उन विशेषताओं के कारण उन्हें महामानव की उपाधि दे दी जाए। ठीक इसी प्रकार बुरी से बुरी आस्था रखने वाला वरन् एक दुष्कर्मी भी इन बातों का पाबन्द हो सकता है।

संभव है कि मनुष्य दया में उस सीमा तक पहुंच जाए कि यदि उसके अपने ही घाव में कीड़े पड़ें उनको भी मारना उचित न समझे तथा प्राणियों का ध्यान इस सीमा तक रखे कि जुएं जो सर में पड़ते हैं या वे कीड़े जो पेट और आंतों में तथा मस्तिष्क में पैदा होते हैं उन्हें भी हानि पहुंचाना न चाहे अपितु मैं स्वीकार कर सकता हूं कि किसी की दया इस सीमा तक पहुंचे कि वह शहद खाना त्याग दे क्योंकि वह बहुत से जीवों को नष्ट करने के पश्चात् प्राप्त होता है और मैं स्वीकार करता हूं कि कोई कस्तूरी से भी पृथक रहे क्योंकि वह निरीह मृग का रक्त है और उस बेचारे का वध करने और बच्चों से पृथक करने के पश्चात् उपलब्ध हो सकती है। इसी प्रकार मुझे इस से भी इन्कार नहीं कि कोई मोतियों के प्रयोग को भी त्याग दे तथा रेशम को पहनना भी छोड़ दे, क्योंकि ये दोनों वस्तुएं निरीह कीड़ों का हनन करने से प्राप्त होती हैं अपितु मैं यहां तक मानता हूं कि कोई व्यक्ति कष्ट के समय जोंकों के लगाने से भी इन्कार करे और स्वयं कष्ट सहन कर ले और निरीह जोंकों की मृत्यु का इच्छुक न हो। अन्ततः यदि कोई माने या न माने परन्तु मैं मानता हूं कि कोई व्यक्ति अपनी दया

को उस चरम बिन्दु तक पहुंचा दे कि जल में निहित कीटाणुओं को बचाने के लिए स्वयं को समाप्त कर ले। मैं यह सब कुछ स्वीकार करता हूं परन्तु मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकता कि ये समस्त स्वाभाविक अवस्थाएं शिष्टाचार कहला सकती हैं या केवल इन्हीं से वे आन्तरिक मलिनताएं धोई जा सकती हैं जिनका अस्तित्व ख़ुदा तआला के मिलाप में बाधक है। मैं कभी स्वीकार नहीं करूंगा कि इस प्रकार का निरीह और अहिंसा प्रिय बनना जिसमें कई पशु और पक्षी मनुष्य की अपेक्षा अधिक अहिंसा प्रिय हैं, उच्च मानवता की प्राप्ति का कारण हो सकता है अपितु मेरे निकट यह प्रकृति के नियम से लड़ाई है और प्रसन्नता के भारी शिष्टाचार के विपरीत तथा उस ने'मत का खण्डन करना है जो प्रकृति ने हमें प्रदान की है अपितु वह आध्यात्मिकता प्रत्येक शिष्टाचार को यथास्थान प्रयोग करने के पश्चात् और फिर ख़ुदा के मार्गों में वफ़ादारी के साथ चलने तथा उसी का हो जाने से प्राप्त होती है। जो उसका हो जाता है उसका यही लक्षण है कि वह उसके बिना जीवित ही नहीं रह सकता। ख़ुदा को पहचानने वाला (अध्यात्म ज्ञानी) एक मछली है जो ख़ुदा के हाथ से बलि दी गई और उस का जल ख़ुदा का प्रेम है।

सुधार के तीन उपाय तथा सुधार की नितान्त आवश्यकता के समय हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] का अवतरित होना

अब मैं पूर्व विषय की ओर लौटता हूं। मैं अभी वर्णन कर चुका हूं कि मानव परिस्थितियों के उद्‌गम तीन हैं - अर्थात् 1. तामसिक वृत्ति (तमोगुण) 2. राजसिक वृत्ति (रजोगुण) 3. सात्त्विक वृत्ति (सतोगुण) तथा सुधार के भी उपाय तीन हैं -

प्रथम यह कि असभ्य लोगों को उस निम्न स्तर के शिष्टाचार पर स्थापित किया जाए कि वे खाने-पीने और विवाह आदि सामाजिक मामलों में मानवता के नियमों पर चलें। न नंगे फिरें न कुत्तों की

भांति मुर्दों को खाने वाले हों तथा न कोई असभ्यता प्रकट करें। यह स्वाभाविक अवस्थाओं के सुधारों में से निम्न स्तर का सुधार है कि यदि उदाहरणतया पोर्ट ब्लेयर के जंगली लोगों में से किसी व्यक्ति को मानवता के नियमों की शिक्षा देनी हो तो सर्वप्रथम मानवता के प्रारंभिक छोटे-छोटे आचरणों तथा शिष्टाचार के ढंगों की शिक्षा दी जाए।

द्वितीय प्रकार का सुधार यह है कि जब कोई मनुष्य मानव सभ्यता के बाह्य नियम ग्रहण कर ले तो उसे मानवता के बड़े- बड़े शिष्टाचार सिखाए जाएं और मनुष्य की जितनी भी शक्तियां निहित है उन सब को उचित समय और उचित अवसर पर प्रयोग करने की शिक्षा दी जाए।

तृतीय प्रकार का सुधार यह है कि जो लोग उत्तम शिष्टाचार ग्रहण कर चुके हैं ऐसे नीरस संयमियों को प्रेम और मिलन के शरबत का रसास्वादन कराया जाए। ये तीन सुधार हैं जो क़ुर्आन करीम ने वर्णन किए हैं।

सुधार की पूर्ण आवश्यकता के समय हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] का प्रादुर्भाव

हमारे सरदार और पेशवा नबी[स.अ.व.] ऐसे समय में अवतरित हुए थे जब कि संसार प्रत्येक दृष्टि से ख़राब और नष्ट हो चुका था। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ①

अर्थात् जंगल भी बिगड़ गए और दरिया भी बिगड़ गए। यह इस बात की ओर संकेत है कि लोग अहले-किताब कहलाते हैं वे भी बिगड़ गए और जो दूसरे लोग हैं जिन्हें ख़ुदा की वाणी (इल्हाम)का पानी नहीं मिला वे भी बिगड़ गए। अतः क़ुर्आन करीम का कार्य वास्तव में मुर्दों को जीवित करना था। जैसा कि उसका कथन है -

① सूरह अर्रूम - 42

اِعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰہَ یُحۡیِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِہَا ①

अर्थात् यह बात जान लो कि अब अल्लाह तआला नए सिरे से पृथ्वी को उसके मरने के पश्चात् जीवित करने लगा है। उस युग में अरब की दशा नितान्त पशुता के पहुंची हुई थी और उनमें कोई मानव व्यवस्था शेष नहीं रही थी और उनकी दृष्टि में समस्त पाप गर्व का स्थान थे, एक-एक व्यक्ति सैकड़ों पत्नियां करता था, अवैध भोजन उनके निकट एक शिकार था, माताओं के साथ विवाह करना वैध समझते थे। इसीलिए अल्लाह तआला को कहना पड़ा कि -

حُرِّمَتۡ عَلَیۡکُمۡ اُمَّہٰتُکُمۡ ②

अर्थात् आज तुम्हारी माताएं तुम पर अवैध हो गईं। इसी प्रकार वे मरे हुए पशु का मांस भी खाते थे, अपितु मनुष्य का मांस भी खा जाते थे। संसार का कोई भी पाप नहीं जो वे नहीं करते थे, अधिकांश परलोक के इन्कारी थे, उनमें से अधिकतर ख़ुदा के अस्तित्व को भी नहीं मानते थे। लड़कियों का अपने हाथ से वध कर देते थे, अनाथों का वध करके उन का धन खाते थे। प्रत्यक्ष में तो मनुष्य थे परन्तु बुद्धि से सर्वथा वंचित थे, न लज्जा थी, न संकोच न स्वाभिमान। मदिरा को पानी के समान पीते थे। जिस का व्यभिचार में प्रथम नम्बर होता था वही जाति का सरदार कहलाता था। अज्ञानता इतनी थी कि आस-पास की समस्त जातियों ने उनका नाम अनपढ़ रख दिया था। ऐसे समय में और ऐसी जातियों के सुधार के लिए हमारे सरदार हज़रत नबी करीम[स.अ.व.] का मक्का नगर में प्रादुर्भाव हुआ। अतः वे तीन प्रकार के सुधार जिन का हम अभी वर्णन कर चुके हैं उनका वास्तव में यही समय था। अतः इसी कारण **क़ुर्आन करीम** संसार के समस्त मार्ग-दर्शनों की अपेक्षा पूर्णतम होने का दावा करता है क्योंकि संसार के अन्य धर्म ग्रन्थों को इन तीन प्रकार के सुधारों

① सूरह अलहदीद - 18
② सूरह अन्निसा - 24

का अवसर प्राप्त नहीं हुआ अपितु यह स्वर्णिम अवसर क़ुर्आन करीम को ही प्राप्त हुआ। क़ुर्आन करीम का यह उद्देश्य था कि पशुता की सीमा तक पहुंच चुके मनुष्य को पशुता से निकाल कर पुनः मनुष्य बनाए फिर मनुष्य से शिष्टाचार वाला मनुष्य बनाए और शिष्टाचारी मनुष्य से ख़ुदा वाला मनुष्य बनाए। इसीलिए क़ुर्आन करीम के मूल में ये तीन उद्देश्य निहित हैं।

क़ुर्आनी शिक्षा का मूल उद्देश्य तीन प्रकार के सुधार हैं

इस से पूर्व कि हम तीन सुधारों का विस्तारपूर्वक वर्णन करें यह वर्णन करना भी आवश्यक समझते हैं कि क़ुर्आन करीम में ऐसी कोई शिक्षा नहीं जो बलात् माननी पड़े अपितु सम्पूर्ण क़ुर्आन का उद्देश्य केवल तीन सुधार हैं और उसकी समस्त शिक्षाओं का सारांश यही तीन सुधार हैं। शेष समस्त आदेश इन सुधारों के लिए साधन मात्र हैं तथा जिस प्रकार किसी समय डाक्टर को भी एक रोगी के स्वास्थ्य को ठीक करने के लिए कभी चीर-फाड़ करने, कभी मरहम लगाने की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार क़ुर्आन की शिक्षा ने भी मानव सहानुभूति के लिए उन साधनों को यथा-स्थान प्रयोग किया है और उसके समस्त मआरिफ अर्थात् ज्ञान की बातों, वसीयतों तथा साधनों का मूल उद्देश्य यह है कि मनुष्यों को उनकी स्वाभाविक अवस्थाओं से जो अपने अन्दर हिंसक पशुओं जैसा रंग रखती हैं उठाकर नैतिक अवस्थाओं के उच्च स्तर तक पहुंचाए और फिर नैतिक अवस्थाओं से आध्यात्मिकता के अपार सागर तक पहुंचाए।

स्वाभाविक अवस्थाएं संतुलन द्वारा शिष्टाचार का रूप धारण कर लेती हैं।

हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि स्वाभाविक अवस्थाएं नैतिक अवस्थाओं से कुछ भिन्न वस्तु नहीं अपितु वही अवस्थाएं हैं जो संतुलन तथा यथास्थान प्रयोग करने से तथा बुद्धि की अनुमति और परामर्श से

काम में लाने से नैतिक अवस्थाओं का रूप धारण कर लेती हैं तथा इससे पूर्व कि वह बुद्धि और ज्ञान की बातों के सुधार और परामर्श से जारी हों यद्यपि वे कैसे ही शिष्टाचार से समरूप हों वास्तव में शिष्टाचार नहीं होते अपितु स्वभाव की एक सहसा गति होती है जैसा कि यदि एक कुत्ते या एक बकरी से अपने स्वामी के साथ प्रेम या विनय प्रकट हो तो उस कुत्ते को सुशील नहीं कहेंगे और न उस बकरी का नाम सभ्य आचरण वाली रखेंगे। इसी प्रकार हम एक भेड़िए या शेर को उनके हिंसक होने के कारण असभ्य और दु:शील नहीं कहेंगे अपितु जैसा कि वर्णन किया गया नैतिक अवस्था स्थान, विचार तथा समय को पहचानने के पश्चात् आरंभ होती है तथा एक ऐसा मनुष्य जो बुद्धि और युक्ति से काम नहीं लेता वह उन दूध पीते बच्चों के समान है जिनके हृदय और मस्तिष्क पर अभी बौद्धिक शक्ति की छाया नहीं पड़ी या उन पागलों के समान जो बुद्धि और विवेक खो बैठते हैं। स्पष्ट है कि जो व्यक्ति दूध पीता बच्चा या पागल हो वह प्राय: ऐसी हरकतें प्रकट करता है जो शिष्टाचार के साथ समानता रखती हैं परन्तु कोई बुद्धिमान उनका नाम शिष्टाचार नहीं रख सकता, क्योंकि वे क्रियाएं सभ्यता और अवसरवादिता के स्रोत से नहीं निकलतीं अपितु वे स्वाभाविक तौर पर प्रेरणाओं के सामने आने के समय जारी होती जाती हैं। जैसा कि मनुष्य का बच्चा पैदा होते ही मां की छातियों की ओर मुख करता है और एक मुर्गे का बच्चा पैदा होते ही दाना चुगने के लिए दौड़ता है, जोंक का बच्चा अपने अन्दर जोंक की आदतें रखता है और सांप का बच्चा सांप की आदतें प्रकट करता है और शेर का बच्चा शेर की आदतें दिखाता है। विशेष तौर पर मनुष्य के बच्चे को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि वह कैसे पैदा होते ही मानव-आदतें दिखाना आरंभ कर देता है और फिर जब वर्ष या डेढ़ वर्ष का हुआ तो वे स्वाभाविक प्रवृत्तियां बहुत स्पष्ट हो जाती हैं। उदाहरणतया पहले जिस प्रकार से रोता था अब पहले की अपेक्षा रोना किसी सीमा तक ऊंचे स्वर में हो जाता है। इसी प्रकार हंसना ठहाके की सीमा तक

पहुंच जाता है और आंखों में भी जान बूझ कर देखने के लक्षण पैदा हो जाते हैं तथा उस आयु में एक अन्य बात स्वाभाविक तौर पर पैदा हो जाती है अपनी सहमति या असहमति का प्रदर्शन विशेष क्रियाओं द्वारा करने लगता है तथा किसी को मारता और किसी को कुछ देना चाहता है परन्तु ये समस्त क्रियाएं वास्तव में स्वाभाविक ही होती हैं। अतः ऐसे बच्चे का सदृश एक जंगली मनुष्य भी है जिसे मानव-सभ्यता से बहुत ही कम भाग मिला है। वह भी अपने प्रत्येक कथन और कर्म तथा अपने प्रत्येक क्रिया-कलाप में स्वाभाविक क्रियाओं का ही प्रदर्शन करता है और अपने स्वाभाविक संवेगों के अधीन रहता है। उसकी कोई बात उन आन्तरिक शक्तियों की सोच-विचार से नहीं निकलती अपितु जो कुछ स्वाभाविक तौर पर उसके अन्दर पैदा हुआ है वह बाह्य प्रेरणाओं से यथायोग्य निकलता चला जाता है। यह संभव है कि उसकी स्वाभाविक भावनाएं जो उसके अन्दर से किसी प्रेरणा से बाहर आती हैं वे सब की सब बुरी न हों अपितु कुछ उनके अच्छे शिष्टाचार के अनुरूप हों परन्तु गंभीर चिन्तन तथा सूक्ष्म विचार के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं होता और यदि किसी सीमा तक हो भी तो वह स्वाभाविक संवेगों के प्रभुत्व के कारण विश्वसनीय नहीं होता अपितु जिस ओर अधिकता है उसी ओर को विश्वसनीय समझा जाएगा।

वास्तविक शिष्टाचार

अतः ऐसे व्यक्ति की ओर वास्तविक शिष्टाचार सम्बद्ध नहीं कर सकते, जिस पर स्वाभाविक संवेग पशुओं, बच्चों और पागलों के समान विजयी हैं और जो अपने जीवन को लगभग वन्य पशुओं के समान व्यतीत करता है अपितु वास्तविक तौर पर अच्छे बुरे शिष्टाचार का युग उस समय से आरंभ होता है कि जब मनुष्य की ईश्वरप्रदत्त बुद्धि परिपक्व हो कर उसके द्वारा अच्छाई या बुराई या दो बुराइयों या दो अच्छाइयों की श्रेणी में अन्तर कर सके। फिर अच्छे मार्ग को त्यागने से अपने हृदय में

एक उत्कंठा पाए तथा दुष्कर्म करने से स्वयं को लज्जित और शर्मिन्दा देखे। यह मनुष्य के जीवन का दूसरा युग है जिसे ख़ुदा की पवित्र वाणी **क़ुर्आन शरीफ़ में राजसिक वृत्ति का नाम** दिया गया है परन्तु स्मरण रहे कि एक असभ्य व्यक्ति को राजसिक वृत्ति[1] की अवस्था तक पहुंचाने के लिए केवल साधारण उपदेश पर्याप्त नहीं होते अपितु आवश्यक होता है कि उसको ख़ुदा को पहचानने का इतना भाग मिले जिससे वह अपने जन्म को निरर्थक और व्यर्थ न समझे ताकि ख़ुदा को पहचानने से उसमें सच्चे शिष्टाचार पैदा हों। इसी कारण ख़ुदा तआला के साथ-साथ सच्चे ख़ुदा की पहचान के लिए ध्यानाकर्षण किया है और विश्वास दिलाया है कि प्रत्येक कर्म और आचरण का एक परिणाम होता है जो उसके जीवन में अध्यात्मिक आराम या अध्यात्मिक अज़ाब का कारण होता है तथा दूसरे जीवन में खुले-खुले तौर पर अपना प्रभाव दिखाएगा। अतः राजसिक वृत्ति की श्रेणी पर मनुष्य को बुद्धि, ख़ुदा की पहचान तथा पवित्र अन्तरात्मा से इतना भाग प्राप्त होता है कि वह दुष्कर्म पर स्वयं की भर्त्सना करता है तथा सत्कर्म का अभिलाषी और लोलुप रहता है। यह वही श्रेणी है कि जिसमें मनुष्य उत्तम शिष्टाचार प्राप्त करता है।

ख़ल्क़ और ख़ुल्क़

यहां अच्छा होगा कि मैं ख़ुल्क़ के शब्द की भी कुछ परिभाषा कर दूं। अतः जानना चाहिए कि ख़ल्क़ ख़ के ज़बर से बाह्य पैदायश का नाम है और ख़ुल्क़ 'ख़' के पेश से आन्तरिक पैदायश का नाम है और चूंकि आन्तरिक पैदायश शिष्टाचार से ही पराकाष्ठा को पहुंचती है न केवल स्वाभाविक भावनाओं से। इसलिए शिष्टाचार पर ही यह शब्द बोला गया है स्वाभाविक भावनाओं पर नहीं बोला गया और फिर यह बात भी उल्लेखनीय है कि जैसा कि जनसाधारण विचार करते हैं कि ख़ुल्क़ केवल

---

[1] वह मनोवृत्ति जो बुरे कामों पर घृणा प्रकट करती है, भर्त्सना करती है जिससे मनुष्य पछताता है। इसे अरबी में नफ़्से लव्वामः कहते हैं। (अनुवादक)

सहनशीलता, नम्रता और विनय का नाम है यह उनकी भूल है अपितु जो कुछ बाह्य अंगों के मुकाबले में अन्तःकरण में मानवीय विशेषताओं की अवस्थाएं रखी गई हैं उन समस्त अवस्थाओं का नाम ख़ुल्क़ है। उदाहरणतया मनुष्य आंख से रोता है तथा इसका प्रेरक हृदय में एक करुणा का शक्ति है वह जब ख़ुदा प्रदत्त बुद्धि के द्वारा यथास्थान प्रयुक्त हो तो वह एक ख़ुल्क़ है। इसी प्रकार मनुष्य हाथों से शत्रु का मुकाबला करता है तो इस क्रिया का प्रेरक भाव हृदय में एक शक्ति है जिसे शुजाअत (वीरता) कहते हैं। अतः जब मनुष्य यथास्थान और यथाअवसर इस शक्ति को प्रयोग में लाता है तो उसका नाम भी 'ख़ुल्क़' है तथा इसी प्रकार मनुष्य कभी हाथों के द्वारा अत्याचार-पीड़ितों को अत्याचारियों से बचाना चाहता है अथवा दरिद्रों और भूखों को कुछ देना चाहता है अथवा किसी अन्य प्रकार से मानव जाति की सेवा करना चाहता है। इस क्रिया का प्रेरक भाव हृदय में एक शक्ति है जिसे रहम (दया) कहते हैं तथा कभी मनुष्य अपने हाथों द्वारा अत्याचारी को दण्ड देता है तो इस क्रिया का प्रेरक भाव हृदय में एक शक्ति है जिसे इन्तिक़ाम (प्रतिशोध) कहते हैं और कभी मनुष्य आक्रमण के मुकाबले पर आक्रमण करना नहीं चाहता और अत्याचारी को क्षमा करता है। इस क्रिया का प्रेरक भाव हृदय में एक शक्ति है जिसे क्षमा और सहनशीलता कहते हैं तथा कभी मनुष्य मानव जाति को लाभ पहुंचाने के लिए अपने हाथों से काम लेता है या पैरों से या हृदय और मस्तिष्क से तथा उनके कल्याण के लिए अपनी पूंजी व्यय करता है तो इस क्रिया का प्रेरक भाव हृदय में एक शक्ति है जिसे 'सख़ावत' (दानशीलता) कहते हैं। अतः जब मनुष्य इन समस्त शक्तियों को यथास्थान तथा यथाअवसर प्रयोग करता है तो उस समय उसका नाम 'ख़ुल्क़' रखा जाता है। अल्लाह तआला हमारे नबी[स.अ.व.] को सम्बोधित करके कहता है -

إِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ①

① सूरह अलक़लम - 5

अर्थात् तू एक महान ख़ुल्क़ पर स्थापित है अतः इसी व्याख्यानुसार इसके अर्थ हैं अर्थात् यह कि शिष्टाचार के समस्त प्रकार दानशीलता, वीरता, न्याय, दया, उपकार, सच्चाई और साहस आदि तुझ में एकत्र हैं। अतः मनुष्य के हृदय में जितनी शक्तियां पाई जाती हैं जैसा कि शिष्टता, लज्जा, ईमानदारी, शील, स्वाभिमान, दृढ़ता, अस्मत, संयम, संतुलन, सहानुभूति। इसी प्रकार वीरता, दानशीलता, क्षमा, धैर्य, उपकार, श्रद्धा और निष्ठा इत्यादि जब ये समस्त स्वाभाविक अवस्थाएं बुद्धि और विचार के परामर्श द्वारा यथाअवसर प्रकट की जाएंगी तो सब का नाम शिष्टाचार (अख़लाक़) होगा और ये समस्त शिष्टाचार वास्तव में मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाएं तथा स्वाभाविक आवेग हैं और केवल उस समय शिष्टाचार का नाम दिया जाता है जब उनको यथाअवसर दृढ़संकल्प होकर उनका प्रयोग किया जाए। चूंकि मनुष्य के स्वाभाविक गुणों में से एक गुण यह भी है कि वह उन्नतिशील प्राणी है। इसलिए वह सच्चे धर्म के अनुसरण और सत्संगों तथा उत्तम शिक्षाओं से ऐसे स्वाभाविक संवेगों को शिष्टाचार के रूप में ले आता है और यह कला मानव के अतिरिक्त किसी अन्य प्राणी को प्राप्त नहीं।

प्रथम सुधार अर्थात् स्वाभाविक अवस्थाएं

अब हम क़ुर्आन करीम के तीनों सुधारों में से प्रथम सुधार का जो निम्न स्तर की स्वाभाविक अवस्थाओं के संबंध में है वर्णन करते हैं और यह सुधार शिष्टाचार के विभिन्न क्षेत्रों में से वह क्षेत्र है जिसे शिष्टाचार (अदब) का नाम दिया जाता है अर्थात् वह शिष्टता जिस का पालन करना असभ्य लोगों को उनकी स्वाभाविक अवस्थाओं को खान-पान तथा विवाह आदि, रहन-सहन की बातों में सन्तुलन पर केन्द्रित करती है तथा इस निकृष्ट जीवन से मुक्ति प्रदान करती है जो राक्षसों, पशुओं तथा हिंसक पशुओं के समान हो जैसा कि अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में

समस्त आचरणों के बारे में कहता है -

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَ
خٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ
اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ
الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۡ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۡ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ
اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ ①

لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ ②

وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ ③

اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ ...... وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ
مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ ④

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ⑤

---

① सूरह अन्निसा - 24
② सूरह अन्निसा - 20
③ सूरह अन्निसा - 23
④ सूरह अलमाइदह - 6
⑤ सूरह अन्निसा - 30

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ ①

لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ط ②

فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ج

وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ط ③

وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ص ④

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ط ⑤

اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ○ ⑥

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَ الْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَ مَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ قف وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ ⑦

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ط قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ لا ⑧

---

① सूरह अलअन्आम - 152
② सूरह अन्नूर - 28
③ सूरह अन्नूर - 29
④ सूरह अलबक़रह - 190
⑤ सूरह अन्निसा - 87
⑥ सूरह अलमाइदह - 91
⑦ सूरह अलमाइदह - 4
⑧ सूरह अलमाइदह - 5

اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ
وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا ①

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ ②

وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ③

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝ ④

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ ⑤

تَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ⑥

وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ ⑦

وَفِيْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ ⑧

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ
مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ
مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝ ⑨

---

① सूरह अलमुजादलः - 12
② सूरह अलआराफ़ - 32
③ सूरह अलअहज़ाब - 71
④ सूरह अलमुदस्सिर - 5, 6
⑤ सूरह लुक़मान - 20
⑥ सूरह अलबक़रह - 198
⑦ सूरह अलमाइदह - 7
⑧ सूरह अज़्ज़ारियात - 20
⑨ सूरह अन्निसा - 4

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً [1]

अनुवाद :- अर्थात् तुम पर तुम्हारी माताएं अवैध (हराम) की गईं और इसी प्रकार तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी ख़ालाएं (मासियां) और तुम्हारी भतीजियां और तुम्हारी भानजियां और तुम्हारी वे माताएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीक बहनें और तुम्हारी पत्नियों की माएं (सासें) और तुम्हारी पत्नियों के पहले पतियों से लड़कियां जिन से तुम सम्भोग कर चुके हो और यदि तुम ने उनसे सम्भोग नहीं किया तो कोई पाप नहीं और तुम्हारे सगे बेटों की पत्नियां और इसी प्रकार एक ही समय में दो बहनें। ये सब काम जो पहले होते थे आज तुम पर अवैध किए गए। तुम्हारे लिए यह भी वैध न होगा कि बलात् स्त्रियों के वारिस बन जाओ, यह भी वैध नहीं कि तुम उन स्त्रियों को निकाह में लाओ जो तुम्हारे पिताओं की पत्नियां थीं जो पहले हो चुका वह हो चुका। चरित्रवान स्त्रियां जो तुम्हारी सजातीय हों या तुम से पहले अहले किताब में से तुम्हारे लिए वैध हैं कि उनसे विवाह करो परन्तु जब महर निर्धारित होकर निकाह हो जाए। परन्तु दुराचार और गुप्त मित्रता कदापि वैध नहीं। अरब के असभ्य लोगों में जिस व्यक्ति के सन्तान न होती थी कुछ में यह रिवाज था कि उनकी पत्नी सन्तान के लिए दूसरे से मित्रता करती थी। क़ुर्आन करीम ने इस बात को अवैध कर दिया मुसाफ़िहत (दुराचार) इसी कुप्रथा का दूसरा नाम है।

पुनः कहा कि तुम आत्महत्या न करो अपनी सन्तान का वध न करो तथा दूसरे के घरों में असभ्य लोगों की तरह स्वयं बिना आज्ञा प्रवेश न करो, आज्ञा लेना आवश्यक है और जब तुम दूसरे के घरों में जाओ तो प्रवेश करते ही अस्सलामो अलैकुम कहो और यदि उन घरों में कोई न हो तो जब तक कोई घर वाला आज्ञा न दे उन घरों में मत जाओ और घर का स्वामी यह कहे कि वापस चले जाओ तो

[1] सूरह अन्निसा - 5

तुम वापस चले जाओ तथा घरों में दीवारों पर से कूद कर न जाया करो वरन् घरों में उन घरों के दरवाज़ों में से जाओ और यदि तुम्हें कोई सलाम कहे तो उसे उस से अच्छा सलाम कहो तथा शराब और जुआ, मूर्तिपूजा और शकुन लेना ये सब अपवित्र और शैतानी कार्य हैं इनसे बचो। मृतक पशु का मांस मत खाओ, सुअर का मांस मत खाओ, मूर्तियों के चढ़ावे मत खाओ, गिरकर मरा हुआ मत खाओ, सींग लगने से मरा हुआ मत खाओ, हिंसक पशुओं का चीर-फाड़ किया हुआ मत खाओ, मूर्ति पर चढ़ाया हुआ मत खाओ क्योंकि ये सब मुरदार (मृतक) का आदेश रखते हैं। यदि ये लोग पूछें कि फिर क्या खाएं ? तो यह उत्तर दे कि संसार की समस्त पवित्र वस्तुएं खाओ केवल मृतक और मृतक के समान तथा अपवित्र वस्तुएं मत खाओ।

यदि सभाओं में तुम्हें कहा जाए कि खुलकर बैठो अर्थात् दूसरों को स्थान दो तो शीघ्र स्थान खुला कर दो ताकि दूसरे बैठें और यदि कहा जाए कि तुम उठ जाओ तो फिर बिना कहा सुनी के उठ जाओ। मांस, दाल आदि सब वस्तुएं पवित्र हों निःसन्देह खाओ परन्तु एक ओर की अधिकता न करो तथा अपव्यय और आवश्यकता से अधिक खाने से स्वयं को बचाओ। व्यर्थ बातें मत किया करो, यथोचित बात किया करो, अपने वस्त्र स्वच्छ रखो, शरीर और घर को और मुहल्ले को तथा प्रत्येक स्थान को जहां तुम्हारा उठना बैठना हो गन्दगी तथा मलिनता से सुरक्षित रखो अर्थात् स्नान करते रहो और घरों को स्वच्छ रखने की आदत डालो (समय की आवश्यकता के अपवाद के) चलने में भी न बहुत तीव्र चलो और न बहुत धीमी गति से। मध्यम गति पर दृष्टि रखो, न बहुत ऊंचा बोला करो न बहुत नीचा, जब यात्रा करो तो हर प्रकार से यात्रा का प्रबन्ध कर लिया करो और पर्याप्त पाथेय (मार्ग का खाना और व्यय) ले लिया करो ताकि भीख मांगने से बचो, पत्नी से संभोग करने के उपरान्त स्नान कर लिया करो, जब भोजन करो तो

मांगने वाले को भी दे दिया करो और कुत्ते को भी डाल दिया करो और दूसरे पक्षियों को भी। यदि संभव हो तो अनाथ लड़कियां जिन का तुम पालन-पोषण करते हो उन से निकाह करने में कोई आपत्ति नहीं, परन्तु यदि तुम देखो कि चूंकि वे लावारिस हैं कदाचित तुम्हारा हृदय उन पर अत्याचार करे तो माता-पिता और संबंधियों वाली स्त्रियों से विवाह करो जो तुम्हारा सम्मान करें और उनका तुम्हें भय रहे। एक, दो, तीन, चार तक कर सकते हो इस शर्त पर कि न्याय करो और यदि न्याय नहीं कर सकते तो फिर एक ही को पर्याप्त समझो यद्यपि तुम्हें आवश्यकता ही क्यों न पड़ जाए। चार की जो सीमा निर्धारित कर दी गई है वह इस हित से है ताकि तुम पुरानी आदतों के कारण सीमा का उल्लंघन न करो अर्थात् सैकड़ों स्त्रियों से विवाह न करने लग जाओ या यह कि व्यभिचार की ओर न झुक जाओ तथा अपनी पत्नियों को महर दो।

अतः क़ुर्आन शरीफ़ की शिक्षानुसार यह प्रथम सुधार है जिसमें मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं को असभ्य आचरणों से हटा कर मानवता के सामान तथा सभ्यता की ओर प्रवृत्त किया गया है। इस शिक्षा में अभी उच्च आचरणों की कुछ चर्चा नहीं हुई अपितु ये केवल मानवता के नियम हैं।

हम उल्लेख कर चुके हैं कि इस शिक्षा की यह आवश्यकता इसलिए पड़ी थी कि हमारे नबी[स.अ.व.] जिस जाति के सुधार के लिए आए थे वह असभ्यता में समस्त जातियों से अग्रसर थी। उनमें किसी भी पहलू से मानवता का कोई आचरण शेष नहीं रहा था। अतः आवश्यक था कि सर्वप्रथम उन्हें मानवता के बाह्य आचरणों की शिक्षा दी जाती।

सुअर का हराम (निषेध) होना

यहां एक विशेष बात स्मरण रखने योग्य है और वह यह है कि सुअर का मांस खाने का जो निषेध किया गया है ख़ुदा ने आरंभ से उसके नाम में ही हराम की ओर संकेत किया है अरबी भाषा में सुअर को ख़िन्ज़ीर

कहते हैं। ख़िन्ज़ीर का शब्द ख़िन्ज़ और अर की संधि से बना है जिसके अर्थ हैं कि मैं इसे बहुत अपवित्र और ख़राब देखता हूं। 'ख़िन्ज़' के अर्थ बहुत बुरा 'अर' के अर्थ "मैं देखता हूं"। अतः इस प्राणी का नाम जो ख़ुदा तआला ने आरंभ से रखा है वही इसकी अपवित्रता को प्रमाणित करता है और बड़ा विचित्र संयोग यह है कि हिन्दी में इस प्राणी को सुअर कहते हैं। यह शब्द भी 'सू' और 'अर' से बना है जिसके अर्थ ये हैं कि मैं इसको बहुत बुरा देखता हूं। इस से आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि 'सू' का शब्द अरबी क्योंकर हो सकता है क्योंकि हमने अपनी पुस्तक 'मिननुर्रहमान' में सिद्ध किया है कि समस्त भाषाओं की जननी अरबी भाषा है और अरबी के शब्द प्रत्येक भाषा में न केवल एक-दो अपितु हज़ारों मिले हुए हैं। अतः सुअर अरबी शब्द है इसीलिए हिन्दी में सुअर का अनुवाद 'बुरा' है। इसलिए इस प्राणी को 'बुरा' कहते हैं। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि उस युग में जबकि समस्त संसार की भाषा अरबी थी, इस देश में यह नाम इस प्राणी का अरबी में प्रसिद्ध था जो ख़िन्ज़ीर का समानार्थक है फिर अब तक यादगार शेष रह गई। हां यह संभव है कि संस्कृत में इसके निकट-निकट यही शब्द परिवर्तित होकर कुछ और बन गया हो परन्तु सही शब्द यही है क्योंकि अपने नामकरण का कारण साथ रखता है जिस पर शब्द ख़िन्ज़ीर ठोस गवाह है और यह अर्थ जो इस शब्द के हैं अर्थात् बहुत ख़राब। इसकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं। इस बात का किसे ज्ञान नहीं कि यह प्राणी प्रथम श्रेणी का गन्दगी खाने वाला एवं निर्लज्ज और बेहया है। अब इसके निषेध होने का कारण स्पष्ट है कि प्रकृति का नियम यही चाहता है कि ऐसे गन्दे और ख़राब प्राणी के मांस का प्रभाव शरीर और आत्मा पर भी अपवित्र ही हो क्योंकि हम सिद्ध कर चुके हैं कि भोजन का भी मनुष्य की आत्मा पर अवश्य प्रभाव होता है। अतः इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ऐसे दुष्ट का प्रभाव भी बुरा ही पड़ेगा। जैसा कि यूनानी वैद्यों ने इस्लाम से पूर्व ही यह रहस्य प्रकट

किया है कि इस प्राणी का मांस विशेष तौर पर लज्जा की विशेषता को कम करता है और निर्लज्जता को बढ़ाता है तथा सुअर का खाना भी इस शरीअत में निषिद्ध है कि मृतक पशु खाने वाले को भी अपने रंग में लाता है तथा बाह्य स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है और जिन पशुओं का रक्त अन्दर ही रहता है जैसा गला घोंटा हुआ या लाठी से मारा हुआ। यह समस्त पशु वास्तव में मुरदार (मृतक) के आदेश में ही हैं। क्या मुर्दे का रक्त अन्दर रहने से अपनी स्थिति पर रह सकता है ? नहीं अपितु आर्द्र होने के कारण बहुत शीघ्र दूषित हो जाएगा और अपनी दुर्गन्ध से समस्त मांस को ख़राब करेगा तथा रक्त के कीटाणु जो नवीन अन्वेषण से भी सिद्ध हुए हैं मरकर शरीर में एक विषाक्त दुर्गन्ध फैला देंगे।

द्वितीय सुधार
मनुष्य की नैतिक अवस्थाएं

दूसरा भाग सुधार का क़ुर्आन की शिक्षानुसार यह है कि स्वाभाविक अवस्थाओं को उचित शर्तों के साथ प्रतिबंधित करके उच्चकोटि के शिष्टाचार तक पहुंचाया जाए। अतः स्पष्ट रहे कि यह भाग बहुत बड़ा है। यदि इस भाग को हम विस्तारपूर्वक वर्णन करें अर्थात् समस्त वे शिष्टाचार यहां लिखना चाहें जो क़ुर्आन करीम ने वर्णन किए तो यह लेख इतना विशाल हो जाएगा कि समय इसके दसवें भाग के लिए भी पर्याप्त न होगा। इसलिए उच्चकोटि के कुछ शिष्टाचार नमूने के तौर पर वर्णन किए जाते हैं।

अतः ज्ञात होना चाहिए कि शिष्टाचार दो प्रकार के हैं। **प्रथम** वे शिष्टाचार जिनके माध्यम से मनुष्य बुराई त्यागने पर समर्थ होता है द्वितीय वे शिष्टाचार जिनके माध्यम से मनुष्य भलाई पहुंचाने पर समर्थ होता है। बुराई त्यागने के अर्थ में वे शिष्टाचार सम्मिलित हैं जिनके द्वारा मनुष्य प्रयत्न करता है कि ताकि अपनी जीभ या अपने हाथ या अपनी आंख या अपने किसी अंग द्वारा दूसरे के धन और सम्मान या

प्राण को हानि न पहुंचाए अथवा हानि पहुंचाने या मान-हानि का इरादा न करे तथा भलाई पहुंचाने के अर्थ में समस्त वे शिष्टाचार सम्मिलित हैं जिनके द्वारा मनुष्य प्रयत्न करता है कि अपनी जीभ या अपने हाथ या अपने धन या अपने ज्ञान अथवा किसी अन्य माध्यम से दूसरे के धन या सम्मान को लाभ पहुंचा सके या उसके प्रताप या सम्मान को प्रकट करने का इरादा कर सके या यदि किसी ने उस पर कोई अत्याचार किया था तो वह अत्याचारी जिस दण्ड का पात्र था उसको क्षमा कर सके तथा इस प्रकार उसको कष्ट और शारीरिक अज़ाब तथा आर्थिक क्षतिपूर्ति से सुरक्षित रहने का लाभ पहुंचा सके या उसे ऐसा दण्ड दे सके जो वास्तव में उसके लिए सरासर दया है।

दुराचार के त्याग से संबंधित शिष्टाचार - जननेद्रिय नियंत्रण

अतः स्पष्ट हो कि वे शिष्टाचार जो बुराई त्यागने के लिए वास्तविक स्त्रष्टा ने निर्धारित किए वे अरबी भाषा में जो समस्त मानव विचारों तथा बनावट एवं शिष्टाचार को प्रकट करने के लिए अपने अन्दर एक अकेला शब्द रखती है। चार नाम दिए गए हैं। अतः

प्रथम शिष्टाचार - इहसान (اِحصان) नामक है और इस शब्द से अभिप्राय वह विशेष नेक आचरण है जो पुरुष और स्त्री की सन्तानोत्पत्ति की शक्ति से संबंध रखता है और मुहसिन (محصن) या मुहसिना उस पुरुष या उस स्त्री को कहा जाएगा जो व्यभिचार या उसकी प्रारंभिक क्रियाओं से पृथक रह कर उस व्यभिचार से स्वयं को नियंत्रण में रखें। जिसका परिणाम दोनों के लिए इस संसार में अपमान और प्रताड़ना और परलोक में आख़िरत का अज़ाब और संबंधियों के लिए अपमान के अतिरिक्त बहुत बड़ी हानि है। उदाहरणतया जो व्यक्ति किसी की पत्नी से अवैध हरकत करने वाला हो या उदाहरणतया व्यभिचार तो नहीं परन्तु उसकी प्रारंभिक क्रियाएं पुरुष और स्त्री दोनों

से प्रकट हों तो कुछ सन्देह नहीं कि उस स्वाभिमानी पीड़ित पुरुष की ऐसी पत्नी को जो व्यभिचार कराने पर सहमत हो गई थी या व्यभिचार भी करा चुकी थी तलाक़ देनी पड़ेगी तथा बच्चों पर भी यदि उस स्त्री के पेट से होंगे बड़ी फूट पड़ेगी और घर का स्वामी यह समस्त हानि उस पतिता के कारण सहन करेगा।

यहां स्मरण रहे यह शिष्टाचार जिसका नाम इहसान या सतीत्व है अर्थात् शुभ आचरण यह इसी अवस्था में शिष्टाचार कहलाएगा जबकि ऐसा व्यक्ति जो बुरी दृष्टि से या व्यभिचार की शक्ति अपने अन्दर रखता है अर्थात् प्रकृति ने वे शक्तियां उसे दे रखी हैं जिन के द्वारा उस अपराध को किया जा सकता है इस बुरे कर्म से स्वयं को बचाए और यदि बच्चा होने के कारण या नपुंसक होने या बहुत बूढ़ा होने के कारण उसमें यह शक्ति मौजूद न हो तो ऐसी स्थिति में हम उसे इस शिष्टाचार से जिसका नाम इहसान या सतीत्व है की संज्ञा नहीं दे सकते। हां यह अवश्य है कि सतीत्व या इहसान की इसमें एक स्वाभाविक अवस्था है परन्तु हम बारम्बार लिख चुके हैं कि स्वाभाविक अवस्थाओं को शिष्टाचार की संज्ञा क्यों नहीं दी जा सकती अपितु उस समय शिष्टाचार की श्रृंखला में सम्मिलित की जाएंगी जबकि बुद्धि की छत्र-छाया में होकर यथास्थान जारी हों या जारी होने की योग्यता पैदा कर लें। अतः जैसा कि मैं उल्लेख कर चुका हूं कि बच्चे और नपुंसक और ऐसे लोग जो किसी युक्ति से स्वयं को नपुंसक कर लें इस शिष्टाचार का चरितार्थ नहीं ठहर सकते यद्यपि प्रत्यक्ष में सतीत्व और इहसान के रंग में अपना जीवन व्यतीत करें अपितु समस्त परिस्थितियों में उनके सतीत्व और इहसान का नाम स्वाभाविक अवस्था होगा न कि कुछ और। चूंकि यह अपवित्र कार्य और उसकी प्राथमिक क्रियाएं जिस प्रकार पुरुष से हो सकती हैं उसी प्रकार स्त्री से भी हो सकती हैं। अतः ख़ुदा की पवित्र किताब क़ुर्आन शरीफ़ में पुरुष-स्त्री दोनों के लिए यह शिक्षा दी गई है :-

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ...... وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۠...... وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ۭ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ [1]

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ۝ [2]

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا [3]

وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ...... فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ [4]

अर्थात् ईमानदारों को जो पुरुष हैं कह दे कि आंखों को उन स्त्रियों को जिनसे निकाह वैध है बचाए रखें और ऐसी स्त्रियों को खुले तौर से न देखें जो कामवासना को उत्तेजित करने का कारण हो सकती हों तथा ऐसे अवसरों पर स्वप्निल दृष्टि की आदत डालें और अपने गुप्त अंगों को यथासंभव बचाएं। इसी प्रकार कानों को भी ऐसी स्त्रियों से जिन से निकाह वैध हैं बचाएं अर्थात् पराई स्त्रियों के गाने-बजाने और मधुर एवं सुरीली आवाज़ें न सुनें उनकी सुन्दरता के क़िस्से न सुनें। यह

① सूरह अन्नूर - 31-32
② सूरह बनी इस्राईल - 33
③ सूरह अन्नूर - 34
④ सूरह अलहदीद - 28

दृष्टि और हृदय की पवित्रता रहने के लिए उत्तम उपाय है। इसी प्रकार ईमानदार और मोमिन स्त्रियों को कह दे कि वे भी अपनी आंखों को उन पुरुषों को देखने से बचाएं जिनसे निकाह वैध हैं और अपने कानों को भी ऐसे पुरुषों से बचाएं अर्थात् उनकी कामोत्तेजक आवाज़ें न सुनें और अपने गुप्तांगों को पर्दे में रखें और अपने सौन्दर्य वाले अंगों को किसी ऐसे पुरुष के समक्ष न खोलें जिनसे निकाह वैध है और अपनी ओढ़नी को सर पर इस प्रकार लें कि गर्दन से होकर सर पर आ जाए अर्थात् गर्दन और दोनों कान तथा सर और कनपटियां सब चादर के पर्दे में रहें तथा अपने पैरों को पृथ्वी पर नर्तकियों के समान न मारें। यह वह उपाय है जिसका पालन करना ठोकर से बचा सकता है।

दूसरा उपाय बचने के लिए यह है कि ख़ुदा तआला की ओर ध्यान दें और उस से दुआ करें ताकि ठोकर से बचाए और भूल से मुक्ति दे। व्यभिचार के निकट मत जाओ अर्थात् ऐसे आयोजनों से दूर रहो जिनसे हृदय में यह विचार भी जन्म ले सकता हो तथा उन मार्गों को धारण न करो जिन से उस पाप के होने की संभावना हो। जो व्यभिचार करता है वह बुराई को चरम सीमा तक पहुंचा देता है। व्यभिचार का मार्ग बहुत बुरा है अर्थात् अभीष्ट लक्ष्य में बाधक है और तुम्हारे अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बहुत ख़तरनाक है और जो निकाह न कर सके तो चाहिए कि वह अपनी पवित्रता को दूसरे उपायों से बचाए। उदाहरणतया रोज़ा रखे या कम खाए या अपनी शारीरिक शक्तियों को कम करने के लिए कठोर परिश्रम वाले कार्य करे। लोगों ने ये भी उपाय निकाले हैं कि वे हमेशा जानबूझ कर अविवाहित रहें या नपुंसक बनें और किसी ढंग से सन्यास धारण करें परन्तु हमने मनुष्य पर ये आदेश अनिवार्य नहीं किए। इसी लिए वे इन बिदअतों एवं कुप्रथाओं को पूर्ण रूप से निभा नहीं सके। ख़ुदा का यह कहना कि हमारा यह आदेश नहीं कि लोग नपुंसक बनें। यह इस बात की ओर संकेत है कि यदि ख़ुदा का आदेश होता तो

सब लोग इस आदेश का पालन करने में समर्थ होते तो ऐसी अवस्था में लोगों की सन्तान की समाप्ति हो कर संसार का कभी का अन्त हो चुका होता तथा यदि इस प्रकार से ही पवित्रता एवं संयम प्राप्त करना हो कि पुरुष के लिंग को काट दें तो यह एक दृष्टि से अर्थात् दूसरे शब्दों में स्रष्टा पर आक्षेप है जिसने वह अंग बनाया तथा जबकि पुण्य का समस्त आधार इस बात पर है कि एक शक्ति विद्यमान हो और फिर मनुष्य ख़ुदा तआला से भयभीत होकर इस शक्ति की दूषित भावनाओं तथा अनुचित उत्तेजनाओं का मुकाबला करता रहे और उसके लाभों से लाभान्वित होकर दो प्रकार का पुण्य प्राप्त करे। अतः स्पष्ट है कि ऐसे अंग को नष्ट कर देने में दोनों पुण्यों से वंचित रहा। पुण्य तो विपरीत भावना के होते हुए और फिर उसके विपरीत संघर्ष करने से प्राप्त होता है, परन्तु जिसमें बच्चे के समान वह शक्ति ही नहीं रही उसे क्या पुण्य प्राप्त होगा। क्या बच्चे को अपने संयम का पुण्य प्राप्त हो सकता है ?

सच्चरित्र एवं सदाचारी रहने के लिए पांच उपाय

इन आयतों में ख़ुदा तआला ने ख़ुल्क़, इहसान अर्थात् सच्चरित्रता तथा शुद्ध आचरण प्राप्ति के लिए केवल उच्च शिक्षा ही नहीं दी अपितु मनुष्य को सदाचारी रहने के लिए पांच उपाय भी बता दिए हैं वे ये हैं -

1. अपनी आंखों को उस से जिस से निकाह वैध है दृष्टि डालने से बचाना।
2. कानों को जिन पुरुषों / स्त्रियों से निकाह वैध है की आवाज़ सुनने से बचाना।
3. जिन पुरुषों / स्त्रियों से निकाह वैध है की कहानियां न सुनना।
4. ऐसे समस्त आयोजनों जिनमें इस दुष्कर्म के पैदा होने की संभावना हो स्वयं को बचाना।
5. यदि निकाह न हो तो रोज़े रखना इत्यादि।

यहां हम बड़े दावे के साथ कहते हैं कि यह उच्च शिक्षा इन सब उपायों के साथ जो क़ुर्आन शरीफ़ ने वर्णन की है केवल इस्लाम ही से विशेष्य है। यहां यह बात स्मरण रखने के योग्य है और वह यह है कि चूंकि मनुष्य की वह स्वाभाविक अवस्था जो काम-वासनाओं का स्रोत है जिस से मनुष्य बिना किसी पूर्ण परिवर्तन के पृथक नहीं हो सकता यही है कि उसकी काम-भावनाएं अवसर एवं स्थान अपने अनुकूल पाकर उत्तेजित होने से नहीं रह सकतीं या यों कहो कि बड़े ख़तरे में पड़ जाती हैं। इसलिए ख़ुदा तआला ने हमें यह शिक्षा नहीं दी कि हम उन स्त्रियों को जिन से निकाह वैध है निःसंकोच देख तो लिया करें तथा उनके सम्पूर्ण सौन्दर्यों के दर्शन भी कर लिया करें और उनके नृत्य आदि के समस्त भाव भी देख लें परन्तु पवित्र दृष्टि से देखें ! और न हमें यह शिक्षा दी है कि हम उन पराई युवा स्त्रियों का गाना बजाना सुन लें और उनकी सुन्दरता के किस्से भी सुना करें परन्तु पवित्र भावना से सुनें अपितु हमें चेतावनी है कि हम उन स्त्रियों को जिन से निकाह वैध है और उनके सौन्दर्य के स्थानों को कदापि न देखें न पवित्र दृष्टि से और न अपवित्र दृष्टि से तथा उनकी सुरीली आवाज़ें और उनकी सुन्दरता के किस्से न सुनें। न पवित्र विचार से न अपवित्र विचार से अपितु हमें चाहिए कि उनके सुनने और देखने से घृणा रखें उसी प्रकार जैसे कि मृतक पशु का मांस खाने से घृणा करते हैं ताकि ठोकर न खाएं क्योंकि आवश्यक है कि स्वच्छन्द दृष्टि से किसी समय ठोकरें लगें। अतः चूंकि ख़ुदा तआला चाहता है कि हमारे नेत्र, हृदय तथा हमारी भावनाएं सब पवित्र रहें। इसलिए उसने यह उच्च श्रेणी की शिक्षा दी। इसमें क्या सन्देह है कि स्वच्छन्दता ठोकर का कारण हो जाती है। यदि हम एक भूखे कुत्ते के आगे नर्म-नर्म रोटियां रख दें और फिर हम आशा रखें कि उस कुत्ते के हृदय में उन रोटियों के खाने का विचार तक उत्पन्न न हो तो हम अपने इस विचार में ग़लती पर हैं। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि

कामवासना संबंधी शक्तियों को गुप्त कार्यवाहियों का अवसर भी न मिले और ऐसा कोई भी आयोजन सामने न आए जिस से इस प्रकार की बुरी क्रियाएं उत्पन्न हो सकें।

इस्लामी पर्दे की यही फ़िलास्फ़ी है और यही शरीअत का आदेश है। **ख़ुदा की किताब** क़ुर्आन में पर्दे से अभिप्राय यह नहीं कि केवल स्त्रियों को क़ैदियों की तरह क़ैद में रखा जाए। यह उन मूर्खों का विचार है जिनको इस्लामी सिद्धान्तों का ज्ञान नहीं अपितु अभीष्ट यह है कि स्त्री-पुरुष दोनों को स्वतंत्रतापूर्वक परस्पर देखने तथा अपनी सुन्दरता दिखाने से रोका जाए क्योंकि इसमें दोनों की भलाई है। अन्त में यह भी स्मरण रहे कि उचटती दृष्टि से अनुचित दृष्टि डालने से स्वयं को बचा लेना और दूसरी उचित दर्शनीय वस्तुओं को देखना। इस पद्धति को अरबी भाषा में 'ग़ज़्ज़ेबसर' (दृष्टि को नीचे रखना) कहते हैं और प्रत्येक संयमी जो अपने हृदय को पवित्र रखना चाहता है उसे नहीं चाहिए कि पशुओं की भांति जिस ओर चाहे निःसंकोच दृष्टि उठाकर देखता अपितु उसके लिए इस सामाजिक जीवन में दृष्टि को नीचे रखने का अभ्यस्त होना आवश्यक है। यह वह शुभ आचरण है जिससे उसकी यह स्वाभाविक प्रवृत्ति एक महान आचरण के रूप में आ जाएगी और उसकी सामाजिक आवश्यकता में भी अन्तर नहीं आएगा। यही वह शिष्टाचार है जिसे इहसान और इफ़्फ़त (संयम और सदाचार) कहते हैं।

बुराई-त्यागने के प्रकारों में से दूसरा प्रकार वह शिष्टाचार है जिसे अमानत और ईमानदारी कहते हैं अर्थात् दूसरे के धन पर शरारत और बुरे विचार से अधिकार करके उसको कष्ट पहुंचाने पर सहमत न होना।

अतः स्पष्ट हो कि अमानत और ईमानदारी मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं में से एक अवस्था है। इसीलिए एक दूध पीता बच्चा भी जो अपनी अल्पायु के कारण अपनी स्वाभाविक सादगी पर होता है तथा अल्पायु के कारण अभी बुरी आदतों का अभ्यस्त नहीं होता दूसरों की

वस्तुओं से इतनी घृणा रखता है कि दूसरी स्त्री का दूध भी कठिनाई से पीता है। यदि उस बेसुधी के समय में कोई और दूध पिलाने वाली नियुक्त न हो तो चेतना के समय में उसे दूसरी स्त्री का दूध पिलाना नितान्त कठिन हो जाता है और वह अपने प्राण पर बहुत कष्ट उठाता है तथा संभव है कि उस कष्ट से मरने के निकट हो जाए किन्तु दूसरी स्त्री के दूध से स्वाभाविक तौर पर अप्रसन्न होता है। इतनी घृणा का क्या रहस्य है ? यही कि वह मां को छोड़कर दूसरे की वस्तु की ओर मुख करने से स्वाभाविक तौर पर घृणा करता है। अतः हम जब एक गंभीर दृष्टि से बच्चे की इस आदत को देखते और उस पर विचार करते हैं और विचार करते-करते उसके इस स्वभाव की तह तक चले जाते हैं तो हम पर बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि यह स्वभाव कि दूसरे की वस्तु से इतनी घृणा करता है यहां तक कि अपने प्राणों को ख़तरे में डाल लेता है। यही अमानत और ईमानदारी की जड़ है तथा ईमानदारी के शिष्टाचार में कोई व्यक्ति सच्चा नहीं ठहर सकता जब तक बच्चे के समान अन्य के धन के बारे में भी उसके हृदय में सच्ची नफ़रत और घृणा पैदा न हो जाए, परन्तु बच्चा इस स्वभाव को यथास्थान प्रयोग नहीं करता तथा अपनी मूर्खता के कारण बहुत से कष्ट सहन कर लेता है। अतः उसका यह स्वभाव केवल एक स्वाभाविक अवस्था है जिसे वह सहसा प्रकट करता है इसलिए यह क्रिया उसके शिष्टाचार में सम्मिलित नहीं हो सकती। यदि मानव-प्रकृति में अमानत और ईमानदारी के शिष्टाचार का वही वास्तविक मूल है तथापि जैसा कि शिशु इस अनुचित क्रिया से धार्मिक और ईमानदार नहीं कहला सकता, इसी प्रकार वह व्यक्ति भी इस शिष्टाचार से विभूषित नहीं हो सकता जो इस स्वाभाविक मूल प्रवृत्ति का यथास्थान प्रयोग नहीं करता अमीन (धरोहर को सुरक्षित रखने वाला) और ईमानदार बनना बहुत कठिन है जब तक मनुष्य समस्त पहलुओं का पालन करे अमीन और ईमानदार नहीं हो सकता। इसमें अल्लाह तआला

ने उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित आयतों में अमानत का ढंग समझाया है और वह यह है :-

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ○ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ○ ①

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۖ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ○ اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ○ ②

अनुवाद - अर्थात् यदि कोई तुम में से ऐसा धनवान हो जो बुद्धि न रखता हो। उदाहरणतया अनाथ या अवयस्क हो और भय हो कि वह अपनी मूर्खता से अपने धन को नष्ट कर देगा तो तुम (बतौर कोर्ट आफ़ वार्ड्स के) वह समस्त धन जिस पर व्यापार और आजीविका का सिलसिला चलता है उन मूर्खों के सुपुर्द मत करो तथा उस धन में से आवश्यकतानुसार उनके भोजन और वस्त्रों के लिए दे दिया करो और उन्हें शुभकर्मों की अच्छी बातें समझाते रहो अर्थात् ऐसी बातें जिन से उनकी बुद्धि और समझ बढ़े तथा एक प्रकार से उनका यथायोग्य

① सूरह अन्निसा - 6, 7

② सूरह अन्निसा - 10, 11

प्रशिक्षण हो जाए तथा अनपढ़ अनुभवहीन न रहें। यदि वे व्यापारी के बेटे हैं तो उन्हें व्यापार के ढंग सिखाओ और यदि कोई अन्य व्यवसाय रखते हों तो उस व्यवसाय के यथायोग्य उनको परिपक्व कर दो। अतः उन्हें साथ-साथ शिक्षा देते जाओ तथा अपनी शिक्षा की कभी-कभी परीक्षा भी लेते जाओ कि तुम ने जो कुछ सिखाया उन्होंने समझा भी है या नहीं। फिर जब विवाह के योग्य हो जाएं अर्थात् आयु लगभग अठारह वर्ष तक पहुंच जाए और तुम देखो कि उन में अपने धन के प्रबन्ध की बौद्धिक शक्ति पैदा हो गई है तो उनका धन उनके सुपुर्द कर दो और अपव्यय के तौर पर उनका धन व्यय न करो और न इस भय से धन को शीघ्रता से खर्च करो कि यदि ये बड़े हो जाएंगे तो अपना धन ले लेंगे। जो व्यक्ति धनवान हो उसके लिए उचित नहीं कि उसके धन में से कुछ मज़दूरी ले परन्तु एक निर्धन व्यक्ति उचित मज़दूरी ले सकता है।

अरब में धन के संरक्षकों के लिए यह रीति प्रसिद्ध थी कि यदि अनाथों के संरक्षक उन के धन में से लेना चाहते तो यथासंभव यह नियम जारी रखते कि अनाथ के धन को व्यापार में लगाने से जो कुछ लाभ हो उसमें से स्वयं भी लेते। मूल पूंजी को नष्ट न करते। अतः इसी परम्परा की ओर संकेत है कि तुम भी ऐसा करो और फिर कहा कि जब तुम अनाथों के धन वापस करने लगो तो गवाहों के समक्ष उन्हें उनका धन वापस दो और जो व्यक्ति मृत्यु के निकट हो तथा उसके बच्चे कमज़ोर और अल्पायु के हों तो उसे ऐसी वसीयत नहीं करनी चाहिए कि जिसमें बच्चों के अधिकार को हानि पहुंचे। जो लोग इस प्रकार अनाथ का धन खाते हैं जिससे अनाथ पर अत्याचार हो जाए तो वह धन नहीं अपितु अग्नि खाते हैं और अन्त में भस्म कर देने वाली अग्नि में डाले जाएंगे।

अतः देखो ख़ुदा तआला ने अमानत और ईमानदारी के कितने

पहलू बताए। इसलिए वास्तविक ईमानदारी और अमानत वही है जो इन समस्त पहलुओं की दृष्टि से हो और यदि बुद्धिमत्ता के नियंत्रण द्वारा ईमानदारी में इन समस्त पहलुओं को दृष्टिगत न रखा हो तो ऐसी ईमानदारी और अमानत में अनेक प्रकार से गुप्त बेईमानी छुपी होगी।

फिर दूसरे स्थान पर कहा -

وَلَا تَأْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ ①

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ②

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ③

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ④

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ ⑤

وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ⑥

अर्थात् परस्पर एक दूसरे के माल को अवैध तौर पर मत खाया

① सूरह अलबक़रह - 189
② सूरह अन्निसा - 59
③ सूरह अलअन्फ़ाल - 59
④ सूरह बनी इस्राईल - 36
⑤ सूरह अश्शुअरा - 184
⑥ सूरह अन्निसा - 3

करो और न अपने धन को शासकों को रिश्वत के तौर पर पहुंचाया करो ताकि इस प्रकार से शासकों के सहयोग से दूसरे के धन को दबा लो। धरोहरों को उनके मालिकों को वापस दे दिया करो। ख़ुदा ग़बन (बेईमानी) करने वालों को मित्र नहीं रखता। जब तुम मापो तो पूरा मापो, जब तुम तोलो तो पूरी और दोषरहित तुला से तोलो तथा किसी प्रकार से लोगों को उनके धन की हानि न पहुंचाओ तथा उपद्रव की नीयत से पृथ्वी पर भ्रमण न करो अर्थात् इस नीयत से कि चोरी करें या डाका डालें या किसी की जेब कतरें या किसी अन्य अवैध ढंग से पराए माल पर कब्ज़ा करें। तत्पश्चात् कहा कि तुम अच्छी वस्तुओं के बदले में बुरी और निकृष्ट वस्तुएं न दिया करो अर्थात् जिस प्रकार दूसरों का धन दबा लेना अवैध है इसी प्रकार ख़राब और विकृत वस्तुएं बेचना या उत्तम वस्तु के बदले में बुरी और निकृष्ट वस्तुएं न दिया करो अर्थात् जिस प्रकार दूसरों का धन दबा लेना अवैध है इसी प्रकार ख़राब वस्तुएं बेचना, उत्तम वस्तु के बदले में बुरी वस्तु देना भी अवैध है।

इन समस्त आयतों में ख़ुदा तआला ने बेईमानी के समस्त ढंग वर्णन कर दिए तथा ख़ुदा का कलाम (वाणी) प्रत्येक दृष्टि से ऐसा पूर्ण है कि जिसमें किसी बेईमानी का कोई अंश शेष नहीं रहा। केवल यह नहीं कहा कि तू चोरी न कर, ताकि एक मूर्ख यह न समझ ले कि केवल चोरी मेरे लिए अवैध है परन्तु अन्य सभी दुष्कर्म मेरे लिए वैध हैं। इस सर्वांगपूर्ण वाक्य में यह सूक्ष्म तत्त्व निहित है जिसके द्वारा समस्त अवैध ढंगों को निषेध कर दिया गया है। इसलिए यदि कोई इस प्रतिभा से अमानत और ईमानदारी की कुछ बातों का प्रदर्शन भी करे तो उसकी यह क्रिया उसकी ईमानदारी के अन्तर्गत नहीं आ सकती अपितु एक स्वाभाविक क्रिया होगी जो विवेक और प्रतिभा से रिक्त है।

तीसरा प्रकार बुराई त्यागने का शिष्टाचार का वह प्रकार है जिसे अरबी में हुदना और हौन कहते हैं अर्थात् दूसरे को अत्याचार के मार्ग से शारीरिक पीड़ा न पहुंचाना तथा बुराई से रिक्त मनुष्य होना तथा मैत्री

के साथ जीवन व्यतीत करना। अत: नि:सन्देह मैत्री भाव एक उच्च श्रेणी का शिष्टाचार है और मानवता के लिए यथासंभव आवश्यक। इस शिष्टाचार के अनुरूप बच्चे में जो स्वाभाविक मूल प्रवृत्ति होती है जिस के संतुलन से यह शिष्टाचार बनता है उल्फ़त है अर्थात् अनुराग है। यह तो स्पष्ट है कि मनुष्य केवल स्वाभाविक अवस्था में अर्थात् उस अवस्था में कि जब मनुष्य बुद्धि से अपरिचित होता है मैत्री के विषय को समझ नहीं सकता और न युद्ध के अर्थ को समझ सकता है। अत: उस समय मित्रता की एक वृत्ति उसमें पाई जाती है वही मैत्री भाव का मूल है परन्तु चूंकि वह बुद्धि, विचार और हृदय की विशेष प्रेरणा से धारण नहीं की जाती इसलिए उसे शिष्टाचार नहीं कहा जा सकता अपितु शिष्टाचार तो तब कहा जाएगा कि जब मनुष्य निश्चयपूर्वक स्वयं को सरल स्वभाव बना कर मैत्री भाव के शिष्टाचार को यथास्थान प्रयोग करे स्थिति के विरुद्ध प्रयोग करने से बचे। इसमें अल्लाह तआला यह शिक्षा देता है :-

وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ①

وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ②

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا ③

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا ④

وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ⑤

---

① सूरह अलअन्फ़ाल - 2
② सूरह अन्निसा - 129
③ सूरह अलअन्फ़ाल - 62
④ सूरह अलफ़ुरक़ान - 64
⑤ सूरह अलफ़ुरक़ान - 73

اِدۡفَعۡ بِالَّتِیۡ ہِیَ اَحۡسَنُ فَاِذَا الَّذِیۡ بَیۡنَکَ وَ بَیۡنَہٗ عَدَاوَۃٌ کَاَنَّہٗ وَلِیٌّ حَمِیۡمٌ ○ [1]

अतः आपस में मैत्री भाव अपनाओ। मैत्री में भलाई है। जब वे मैत्री (सुलह) की ओर झुकें तो तुम भी झुक जाओ। ख़ुदा के नेक बन्दे सुलह करने के साथ पृथ्वी पर चलते हैं और यदि वे कोई ऐसी व्यर्थ बात किसी से सुनें जो युद्ध और लड़ाई की एक भूमिका हो तो बुज़ुर्गों के समान उसकी उपेक्षा करके चले जाते हैं और छोटी-छोटी बात पर लड़ना आरंभ नहीं कर देते अर्थात् जब तक कोई अधिक कष्ट न पहुंचे उस समय तक लड़ाई करने को अच्छा नहीं समझते तथा सुलह करने के अवसर को पहचानने का यही सिद्धान्त है कि छोटी-छोटी बातों को विचार में न लाएं और क्षमा कर दें। लग़्व का शब्द जो इस आयत में आया है। अतः स्पष्ट रहे कि अरबी भाषा में लग़्व उस क्रिया को कहते हैं कि उदाहरणतया एक व्यक्ति शरारत से ऐसी व्यर्थ बातें करे या कष्ट पहुंचाने की नीयत से उससे ऐसा कृत्य प्रकट हो कि वास्तव में उससे कुछ ऐसी हानि या क्षति नहीं पहुंचती। अतः सुलह करने का यह लक्षण है कि ऐसे बेहूदा कष्ट को क्षमा करें और बुज़ुर्गों जैसे आचरण का पालन करें परन्तु यदि कष्ट केवल लग़्व तो न हो परन्तु उससे वास्तविक तौर पर प्राण या धन या सम्मान को हानि पहुंचे तो मैत्री भाव के शिष्टाचार का इस से कुछ संबंध नहीं अपितु यदि ऐसे पाप को क्षमा किया जाए तो इस शिष्टाचार का नाम अफ़्व (क्षमा) है। जिसे ख़ुदा ने चाहा तो इसके पश्चात् वर्णन किया जाएगा। तत्पश्चात ख़ुदा का कथन है कि यदि कोई व्यक्ति शरारत से कुछ बकवास करे तो तुम नेकी के साथ उसे सुलह करने वाले उत्तर दो तब इस आचरण से शत्रु भी मित्र हो जाएगा। अतः सुलह करने के ढंग द्वारा इस प्रकार क्षमा करना केवल इस श्रेणी की बुराई है जिस से कोई हानि न पहुंची हो केवल शत्रु की बकवास हो।

[1] सूरह हा मीम अस्सज्दह - 35

चौथा प्रकार बुराई त्यागने के शिष्टाचार में से रिफ़्क़ (नर्मी) और अच्छी बात कहना है और यह शिष्टाचार जिस स्वाभाविक अवस्था से उत्पन्न होता है उसका नाम तलाक़त अर्थात् हंसमुख स्वभाव है। बच्चा जब तक बात करने पर समर्थ नहीं होता नर्मी और अच्छी बात के स्थान पर हंसमुख स्वभाव का प्रदर्शन करता है। यही इस बात का प्रमाण है कि नर्मी की जड़ जहां से यह शाखा निकलती है हंसमुख स्वभाव है। हंसमुख होना एक शक्ति है और नर्मी एक शिष्टाचार है जो इस शक्ति को यथास्थान प्रयोग करने से पैदा हो जाता है। इसमें ख़ुदा तआला की शिक्षा यह है :-

وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا ①

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ ②

اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ ...... وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ③

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ○ ④

---

① सूरह अलबक़रह - 84

② सूरह अलहुजुरात - 12

③ सूरह अलहुजुरात - 13 ④ सूरह बनी इस्राईल - 37

अनुवाद :- अर्थात् लोगों को वे बातें कहो जो वास्तव में अच्छी हों। एक जाति दूसरी जाति से उपहास न करे संभव है कि जिनसे उपहास किया गया है वही अच्छी हो। कुछ महिलाएं कुछ अन्य महिलाओं से उपहास न करें। हो सकता है कि जिनसे उपहास किया गया है वही श्रेष्ठ हों। दोष मत लगाओ, अपने लोगों के बुरे-बुरे नाम मत रखो, बदगुमानी की बातें मत करो और न दोषों को कुरेद-कुरेद कर पूछो, एक दूसरे की शिकायत मत करो, किसी के बारे में वह आरोप या इल्ज़ाम मत लगाओ जिसका तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं और स्मरण रखो कि प्रत्येक अंग से हिसाब लिया जाएगा तथा कान, आंख और हृदय प्रत्येक से पूछा जाएगा।

भलाई पहुंचाने के प्रकार

अब बुराई त्यागने के प्रकार समाप्त हो चुके। अब हम भलाई पहुंचाने के प्रकारों का वर्णन करते हैं दूसरा प्रकार उन शिष्टाचारों का जो भलाई पहुंचाने से संबंध रखते हैं। उनमें से **प्रथम शिष्टाचार अफ़्व (क्षमा) है।** अर्थात किसी के पाप को **क्षमा** कर देना। इसमें भलाई पहुंचाना यह है कि जो पाप करता है वह एक हानि पहुंचाता है और इस योग्य होता है कि उसको भी हानि पहुंचाई जाए, दण्ड दिलाया जाए, बन्दी बनाया जाए, जुर्माना कराया जाए या स्वयं ही उस पर हाथ उठाया जाए। अतः उसको क्षमा कर देना उचित हो तो उसके पक्ष में भलाई पहुंचाना है। इसमें क़ुरआन करीम की शिक्षा यह है :-

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط ①

جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ج فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ط ②

अर्थात् नेक मनुष्य वे हैं जो क्रोध के स्थान पर अपना क्रोध पी जाते हैं और क्षमा करने के स्थान पर पाप को क्षमा करते हैं। अपराध का दण्ड उतना ही दिया जाए जितना अपराध किया गया हो परन्तु जो

① सूरह आले इमरान - 135 ② सूरह अश्शूरा - 41

व्यक्ति पाप को क्षमा कर दे और ऐसे अवसर पर क्षमा कर दे कि उससे कोई सुधार होता हो, कोई बुराई पैदा न होती हो अर्थात् बिल्कुल क्षमा के स्थान पर हो न कि अन्य स्थान पर तो उसका वह प्रतिफल पाएगा।

इस आयत से स्पष्ट है कि क़ुर्आन की शिक्षा यह नहीं कि अकारण और हर स्थान पर बुराई का मुकाबला न किया जाए तथा उपद्रवियों और अत्याचारियों को दण्ड न दिया जाए अपितु यह शिक्षा है कि देखना चाहिए वह स्थान एवं अवसर क्षमा करने का है या दण्ड देने का। अतः ऐसे अवसर पर अपराधी तथा समाज के लिए जो कुछ वास्तव में अच्छा और कल्याणकारी हो वही बात अपनाई जाए। एक समय अपराधी पाप क्षमा करने से तौबा करता है* तथा किसी समय पाप क्षमा करने से और भी निडर हो जाता है। अतः ख़ुदा तआला कहता है कि **अन्धों की तरह केवल पाप क्षमा करने की आदत मत डालो** अपितु ध्यानपूर्वक देख लिया करो कि वास्तविक नेकी किस बात में है क्षमा करने में या दण्ड देने में। अतः जो बात यथास्थान तथा यथावसर हो वही करो।

लोगों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि जैसे कुछ लोग द्वेषभाव पर बहुत लोलुप होते हैं यहां तक कि दादों-परदादों के द्वेषों को स्मरण रखते हैं। इसी प्रकार कुछ लोग क्षमा और नर्मी को चरम सीमा तक पहुंचा देते हैं तथा कभी-कभी इस आदत की अधिकता से निर्लज्जता तक पहुंच जाती है और ऐसी लज्जाजनक शालीनता और क्षमा का उनसे प्रदर्शन होता है जो सरासर स्वाभिमान और मर्यादा के सर्वथा विपरीत होता है अपितु ऐसा करके अपनी सच्चरित्रता पर स्वयं धब्बा लगाते हैं तथा ऐसी क्षमा का परिणाम यह होता है कि सब लोग त्राहि-त्राहि कर उठते हैं। इन्हीं ख़राबियों की दृष्टि से **क़ुर्आन करीम** में प्रत्येक शिष्टाचार के लिए स्थान एवं अवसर की शर्त लगा दी है और ऐसे शिष्टाचार की स्वीकृति

* प्रथम संस्करण में लकीर खींचा हुआ वाक्य लिखने से रह गया है जब कि मूल मसौदा तथा रिपोर्ट में यह वाक्य मौजूद है। (प्रकाशक)

नहीं दी जो असमय प्रदर्शित हों।

स्मरण रहे कि अकेली क्षमा को शिष्टाचार नहीं कह सकते अपितु वह एक स्वाभाविक शक्ति है जो बच्चों में भी पाई जाती है। बच्चे को जिसके हाथ से चोट लग जाए चाहे शरारत से ही लगे कुछ समय के पश्चात् इस बात को भुला देता है और फिर उसके पास प्रेम से जाता है और यदि ऐसे व्यक्ति ने उसके वध करने का भी इरादा किया हो तब भी केवल मीठी बात पर प्रसन्न हो जाता है। अतः ऐसी क्षमा किसी भी प्रकार शिष्टाचार में सम्मिलित नहीं होगी। शिष्टाचार में उसी रूप में सम्मिलित होगी जब हम उसे यथा अवसर प्रयोग करेंगे अन्यथा केवल एक स्वाभाविक शक्ति होगी। संसार में ऐसे लोग बहुत कम हैं जो स्वाभाविक शक्ति और शिष्टाचार में अन्तर कर सकते हैं। हम बार-बार कह चुके हैं कि वास्तविक शिष्टाचार और स्वाभाविक अवस्थाओं में यह अन्तर है कि शिष्टाचार हमेशा स्थान और अवसर की पाबंदी अपने साथ रखता है और स्वाभाविक शक्ति असमय भी प्रकट हो जाती है। यों तो पशुओं में गाय में भी कोई बुराई नहीं है और बकरी भी हृदय की ग़रीब है परन्तु हम उनको केवल इसी कारण से यह नहीं कह सकते कि उनमें इस आचरण की विशेषता विद्यमान है क्योंकि उनको समय और अवसर को समझने की बुद्धि नहीं दी गई। ख़ुदा की नीति तथा ख़ुदा की सच्ची और पूर्ण किताब ने प्रत्येक शिष्टाचार के साथ स्थान और अवसर की शर्त लगा दी है।

दूसरा शिष्टाचार भलाई पहुंचाने के शिष्टाचारों में से **अदल** (न्याय) है और **तीसरा अहसान** (उपकार) और चौथा 'ईताए ज़िलक़ुर्बा' (निकट संबंधियों को देना तथा सहायता) जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰى وَ يَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ[1]

① सूरह अन्नहल - 91

अर्थात् अल्लाह तआला का यह आदेश है कि भलाई के बदले भलाई करो और यदि न्याय से बढ़कर उपकार का अवसर और स्थान हो तो वहां उपकार करो और यदि उपकार से बढ़कर निकट संबंधियों की तरह स्वाभाविक जोश से नेकी करने का अवसर हो तो वहां स्वाभाविक सहानुभूति से नेकी करो। ख़ुदा तआला इस से मना करता है कि तुम संतुलन की सीमाओं का अतिक्रमण करो या उपकार के बारे में तुम से अनुचित क्रियाएं प्रदर्शित हों क्योंकि ये क्रियाएं बुद्धिसंगत नहीं अर्थात् यह कि तुम असमय उपकार करो या यथासमय उपकार करने से संकोच करो या यह कि तुम अवसर पर निकट संबंधियों को धन आदि देने तथा सहायता करने के शिष्टाचार में कुछ कमी करने लगो या सीमा से अधिक दयावृष्टि करो। इस आयत में भलाई पहुंचाने की तीन श्रेणियों का वर्णन है -

प्रथम यह श्रेणी कि भलाई के बदले में भलाई की जाए। यह तो निम्न कोटि का पुण्य है और साधारण श्रेणी का सुशील मनुष्य भी इस शिष्टाचार का प्रदर्शन कर सकता है कि अपने भलाई करने वालों के साथ भलाई करता रहे।

दूसरी श्रेणी इस से कुछ कठिन है और वह यह कि भलाई में स्वयं ही पहल करना और किसी के हक़ के बिना उपकार के तौर पर उसे लाभ पहुंचाना। यह शिष्टाचार मध्यम श्रेणी का है। अधिकतर लोग ग़रीबों पर उपकार करते हैं तथा उपकार में यह एक गुप्त दोष है कि उपकार करने वाला सोचता है कि मैंने उपकार किया है और कम से कम वह अपने उपकार के बदले में कृतज्ञता या दुआ चाहता है और यदि कोई कृतज्ञ उसका विरोधी हो तो उसका नाम कृतघ्न रखता है। कभी अपने उपकार के कारण उस पर सामर्थ्य से अधिक भार डाल देता है और उस को अपना उपकार स्मरण कराता है जैसा कि अल्लाह तआला ने उपकार करने वालों को सतर्क करने के लिए कहा है :-

لَا تُبۡطِلُوۡا صَدَقٰتِكُمۡ بِالۡمَنِّ وَالۡاَذٰى ۙ ①

① सूरह अलबक़रह - 265

अर्थात् हे उपकार करने वालो ! अपने दान-पुण्यों को जिन की नींव सत्य पर होनी चाहिए उपकार स्मरण कराने और कष्ट देने के साथ नष्ट मत करो। अर्थात् सदक़े (दान) का शब्द सिद्क़ से बना है। अतः यदि हृदय में सत्य और निष्कपटता न रहे तो वह दान, दान नहीं रहता अपितु एक दिखावे का कार्य होता है। इसलिए उपकारी में यह एक दोष होता है कि कभी क्रोध में आकर अपना उपकार भी स्मरण करा देता है। इसी कारण ख़ुदा तआला ने उपकारियों को सतर्क किया।

तीसरी श्रेणी भलाई पहुंचाने की ख़ुदा तआला ने यह वर्णन की है कि उपकार का विचार बिल्कुल न हो और न कृतज्ञता पर दृष्टि हो अपितु एक ऐसी सहानुभूति के आवेग से भलाई की जाए जैसा कि एक बहुत निकट संबंधी उदाहरणतया मां मात्र सहानुभूति के जोश से अपने बेटे से भलाई करती है यह भलाई पहुंचाने की वह अन्तिम श्रेणी है जिससे आगे उन्नति करना संभव नहीं, परन्तु ख़ुदा तआला ने भलाई पहुंचाने के इन समस्त प्रकारों को स्थान और अवसर से सम्बद्ध कर दिया है और कथित आयत में स्पष्ट तौर पर कह दिया है कि यदि ये भलाइयां अपने अपने स्थान पर प्रयुक्त नहीं होंगी तो फिर ये बुराइयां हो जाएंगी, न्याय के स्थान पर अश्लीलताएं हो जाएंगी अर्थात् सीमा का इतना अतिक्रमण करना कि अपवित्र स्थिति हो जाए और ऐसा ही उपकार के स्थान पर अनुपकार की स्थिति निकल आएगी जिसे बुद्धि एवं आत्मा कभी स्वीकार नहीं कर सकती तथा यह सीमा का अतिक्रमण निकट संबंधियों की सहायता करने के क्षेत्र में भी उचित नहीं। अपितु बग़य बन जाएगा अर्थात् वह बेमौका सहानुभूति का जोश एक बुरी स्थिति को जन्म देगा। वास्तव में बग़य उस वर्षा को कहते हैं जो सीमा से अधिक बरस जाए और खेतों को नष्ट कर दे और या उचित हक़ से अधिक करना भी बग़य है। इसलिए इन तीनों में से जो यथासमय जारी नहीं होगा

वही बुरा आचरण हो जाएगा। इसीलिए इन तीनों के साथ अवसर और स्थान की शर्त लगा दी है। यहां स्मरण रहे कि अकेला न्याय या उपकार या निकट संबंधियों से हमदर्दी को शिष्टाचार नहीं कह सकते अपितु मनुष्य में ये सब स्वाभाविक अवस्थाएं तथा स्वाभाविक शक्तियां हैं कि जो बच्चों में भी बुद्धि के अस्तित्व से पूर्व पाई जाती हैं परन्तु शिष्टाचार के लिए बुद्धि शर्त है तथा यह शर्त है कि प्रत्येक स्वाभाविक शक्ति यथावसर प्रयोग हो।

फिर **उपकार** (इहसान) के बारे में और भी आवश्यक निर्देश **क़ुर्आन शरीफ़** में है और सभी अलिफ़ लाम के साथ जो विशेष्य करने के लिए आता है प्रयोग करके अवसर और स्थान को दृष्टिगत रखने की ओर संकेत किया है, जैसा कि उसका कथन है :-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ ...... وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ ①

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ ②

وَاَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ③

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۚ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ○ ④

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ○ اِنَّمَا

---

① सूरह अलबक़रह - 268
② सूरह अलबक़रह - 265
③ सूरह अलबक़रह - 196
④ सूरह अद्दहर - 6, 7

نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ○ ①

وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ ②

اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ③

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ④

وَفِىْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ⑤

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ ⑥

وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً ⑦

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑧

---

① सूरह अद्दहर - 9, 10
② सूरह अलबक़रह - 178
③ सूरह अलफ़ुरक़ान - 68
④ सूरह अर्रअद - 22
⑤ सूरह अज़्ज़ारियात - 20
⑥ सूरह आले इमरान - 135
⑦ सूरह अर्रअद - 23
⑧ सूरह अत्तौबह - 60

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ①

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ②

وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ ③

अनुवाद - यह है कि हे ईमान वालो ! तुम उस धन में से लोगों को दान, उपकार, पुण्य इत्यादि के रूप में दो। जो तुम्हारी पवित्र कमाई है अर्थात् जिसमें चोरी, रिश्वत, बेईमानी या ग़बन का धन या अत्याचार के धन की मिलावट नहीं तथा तुम्हारे हृदय से यह कुविचार दूर रहे कि अपवित्र धन लोगों को दान के रूप में दो। दूसरी बात यह है कि अपने दान-पुण्य और हमदर्दी को उपकार जताकर और कष्ट देकर नष्ट मत करो अर्थात् अपने कृतज्ञ को कभी यह न जताओ कि हमने तुझे यह दिया था और न उसको कष्ट दो कि इस प्रकार तुम्हारा उपकार नष्ट होगा और न ऐसा ढंग धारण करो कि तुम अपने धन को दिखावे के लिए व्यय करो। ख़ुदा की प्रजा से उपकार करो कि ख़ुदा उपकार करने वालों को मित्र रखता है। जो लोग वास्तविक कल्याण

① सूरह आले इमरान - 93

② सूरह बनी इस्राईल - 27

③ सूरह अन्निसा - 37, 38

और भलाई करने वाले हैं उनको वे प्याले पिलाए जाएंगे जिनमें काफ़ूर मिला हुआ होगा अर्थात् संसार की जलन, उत्कंठाएं तथा अपवित्र इच्छाएं उनके हृदय से दूर कर दी जाएंगी। काफ़ूर कफ़र से निकला है और कफ़र अरबी शब्दकोश में दबाने और ढकने को कहते हैं। तात्पर्य यह कि उनकी अवैध भावनाएं दबा दी जाएंगी और पवित्र हृदय वाले हो जाएंगे और अध्यात्म ज्ञान की शीतलता उन्हें पहुंचेगी।

पुनः ख़ुदा का कथन है कि वे लोग प्रलय के दिन उस झरने का जल पिएंगे जिसका वे आज अपने हाथ से निर्माण कर रहे हैं। यहां स्वर्ग की फ़िलास्फ़ी का एक गहरा रहस्य बताया है जिसे समझना हो समझ ले।

तत्पश्चात् कहा कि वास्तविक अर्थों में भलाई करने वालों का यह स्वभाव है कि वे मात्र ख़ुदा के प्रेम के लिए वह भोजन जो आप पसन्द करते हैं दरिद्रों, अनाथों तथा क़ैदियों को खिलाते हैं और कहते हैं कि हम तुम पर कोई उपकार नहीं करते अपितु यह कार्य केवल इसलिए करते हैं कि ख़ुदा हम से प्रसन्न हो तथा यह सेवा उसके मुख के लिए है हम तुम से न तो कोई बदला चाहते हैं और न यह चाहते हैं कि तुम हमारा आभार प्रकट करते फिरो। यह इस बात की ओर संकेत है कि भलाई पहुंचाने का तीसरा प्रकार जो मात्र सहानुभूति के आवेग से है वे उसे पूर्ण करते हैं। सच्चे कल्याणकारी लोगों का यह स्वभाव होता है कि ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए अपने निकट संबंधियों की अपने धन से सहायता करते हैं तथा उस धन में से अनाथों की प्रतिज्ञा, उनका पोषण तथा शिक्षा आदि पर व्यय करते रहते हैं और दरिद्रों को दरिद्रता तथा भूख से बचाते हैं। यात्रियों तथा मांगने वालों की सेवा करते हैं और उस धन को दासों को मुक्त कराने के लिए और ऋणी लोगों को ऋण से मुक्त कराने के लिए भी देते हैं तथा अपने दैनिक व्ययों में न तो अपव्यय करते हैं और न ही कृपणता का प्रदर्शन करते हैं वरन् मध्य मार्ग पर चलते हैं। मिलने के स्थान पर मिलते हैं और

ख़ुदा से डरते हैं, उनके धन में मांगने वालों और न बोलने वालों का भी भाग होता है। न बोलने वालों से अभिप्राय कुत्ते, बिल्लियां, चिड़ियां, बैल, गधे, बकरियां तथा अन्य वस्तुएं हैं। वे कष्टों तथा कम आय होने पर और दुर्भिक्ष के समय में दान देने में कृपणता नहीं दिखाते अपितु आय की कमी की दशा में भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करते हैं। वे कभी गुप्त दान देते हैं और कभी प्रत्यक्ष। गुप्त इसलिए ताकि दिखावे से बचें और प्रत्यक्ष इसलिए ताकि दूसरों को प्रेरणा दें। दान-पुण्य इत्यादि पर जो धन दिया जाए उसमें यह ध्यान रहना चाहिए कि प्रथम जितने दीन एवं दरिद्र हैं उनको दिया जाए। हां जो दान में आए धन की देख-रेख करें या उसके लिए व्यवस्था एवं प्रबन्ध करें उनको दान के धन से कुछ धन मिल सकता है तथा किसी को बुराई से बचाने के लिए भी इस धन में से दे सकते हैं। इसी प्रकार वह धन दासों को मुक्त कराने के लिए तथा दीनों, ऋणियों तथा आपदाग्रस्त लोगों की सहायता के लिए तथा इसी प्रकार के अन्य कार्यों में जो मात्र ख़ुदा के लिए हों वह धन व्यय होगा। तुम वास्तविक पुण्य को कदापि प्राप्त नहीं कर सकते जब तक कि मानव जाति की हमदर्दी में वह धन व्यय न करो जो तुम्हारा प्रिय धन है। निर्धनों का अधिकार उन्हें दो, दरिद्रों को दान दो, यात्रियों की सेवा करो और व्यर्थ के ख़र्चों से स्वयं को बचाओ अर्थात् विवाह-शादियों में और भांति-भांति के भोग-विलास के अवसरों पर और लड़का पैदा होने की रस्मों में जो अपव्यय किया जाता है उस से स्वयं को बचाओ, तुम माता-पिता से भलाई करो, निकट संबंधियों से, अनाथों से, दरिद्रों से तथा पड़ोसी से जो तुम्हारा निकटस्थ है और पड़ोसी जो अपरिचित है और यात्री से, नौकर, दास, घोड़े, बकरी, बैल, गाय तथा अन्य पशुओं आदि से जो तुम्हारे अधिकार में हों अच्छा व्यवहार करो क्योंकि ख़ुदा को जो तुम्हारा ख़ुदा है यही आदतें पसन्द हैं। वह उपेक्षा करने वालों और स्वार्थियों से प्रेम नहीं करता और ऐसे लोगों को नहीं चाहता

जो कृपण हैं तथा लोगों को कृपणता (कंजूसी) की शिक्षा देते हैं और अपने धन को गुप्त रखते हैं अर्थात् दीन-दुखी लोगों को कहते हैं कि हमारे पास कुछ नहीं।

वास्तविक वीरता

मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं में से एक अवस्था वह है जिसे वीरता की संज्ञा दी जाती है जैसा कि दूध पीता बच्चा भी इसी शक्ति के कारण कभी अग्नि में हाथ डालने लगता है, क्योंकि मनुष्य का बच्चा मानवता के प्रभुत्व के स्वाभाविक जौहर के कारण भयभीत करने वाले नमूनों से पूर्व किसी वस्तु से भी नहीं डरता। इसी अवस्था में मनुष्य सर्वथा निर्भीक होकर शेरों तथा अन्य जंगली दरिन्दों का भी मुक़ाबला करता है तथा कई लोगों से लड़ने के लिए अकेला निकलता है तथा लोग जानते हैं कि बड़ा बहादुर है परन्तु यह केवल एक स्वाभाविक अवस्था है जो अन्य दरिन्दों में पाई जाती है अपितु कुत्तों में भी पाई जाती है तथा वास्तविक वीरता जो स्थान और अवसर के साथ विशेष है और जो उच्चकोटि के शिष्टाचारों में से एक शिष्टाचार है और वह समय और स्थिति की उन क्रियाओं का नाम है जिनका नाम ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम में इस प्रकार पर आया है :-

وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ ①

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ ②

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ③

---

① सूरह अलबक़रह - 178

② सूरह अर्रअद - 23

③ सूरह आले इमरान - 174

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ [1]

अर्थात पराक्रमी वे हैं कि जब लड़ाई का अवसर आ पड़े तो भागते नहीं। उनका धैर्य लड़ाई और कठिनाइयों के समय में ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए होता है तथा उसके चेहरे के अभिलाषी होते हैं न कि वीरता प्रदर्शन के। उन्हें डराया जाता है कि लोग तुम्हें दण्ड देने के लिए सहमत हो गए हैं। अतः तुम लोगों से डरो। अतः डराने से उनका ईमान और भी बढ़ता है और कहते हैं कि ख़ुदा हमें पर्याप्त है अर्थात् उनकी वीरता कुत्तों और दरिन्दों के समान नहीं होती जो केवल स्वाभाविक आवेग पर आधारित हो जिसका झुकाव एक ही पहलू पर हो अपितु उनकी वीरता दो पहलू रखती है। कभी तो वे अपनी व्यक्तिगत वीरता से अपनी कामभावनाओं का मुकाबला करते हैं और उन पर विजय प्राप्त करते हैं और कभी जब देखते हैं कि शत्रु का मुक़ाबला हित में है तो न केवल मनोवेग से अपितु सच्चाई की सहायता के लिए शत्रु का मुक़ाबला करते हैं परन्तु न स्वयं पर भरोसा करके अपितु ख़ुदा पर भरोसा करके वीरता का प्रदर्शन करते हैं तथा उनकी वीरता में आडम्बर और अभिमान नहीं होता और न मनोवृत्ति का अनुसरण अपितु हर प्रकार से ख़ुदा की प्रसन्नता ही प्रमुख होती है।

इन आयतों में यह समझाया गया है कि वास्तविक वीरता का मूल धैर्य और दृढ़ता है और कामभावना या विपत्ति जो शत्रुओं के समान आक्रमण करे उसके मुक़ाबले पर कदम जमाए रखना तथा कायर होकर भाग न जाना यही वीरता है। अतः मनुष्य और दरिन्दे की वीरता में बड़ा अन्तर है। दरिन्दा एक ही पहलू पर अपने आवेग और बर्बरता से काम लेता है और मनुष्य जो वास्तविक वीरता रखता है वह समय और स्थिति के अनुसार संघर्ष करता है अथवा उसे छोड़ देता है।

---

(1) सूरह अलअन्फ़ाल - 48

सच्चाई

मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं में से जो अवस्था उसकी स्वाभाविक विशेषता है एक सच्चाई है। मनुष्य जब तक कोई स्वार्थपूर्ण उद्देश्य उसका प्रेरक न हो झूठ बोलना नहीं चाहता तथा झूठ अपनाने में अपने हृदय में एक प्रकार की घृणा और संकोच पाता है। इसी कारण से जिस व्यक्ति का स्पष्ट झूठ सिद्ध हो जाए उस से अप्रसन्न होता है और उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता है, परन्तु केवल यही स्वाभाविक अवस्था शिष्टाचार में सम्मिलित नहीं हो सकती अपितु बच्चे और पागल भी इसके पाबन्द रह सकते हैं। अत: वास्तविकता यही है कि जब तक मनुष्य इन स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से पृथक न हो जो सच बोलने में बाधक होते हैं तब तक वास्तविक तौर पर सत्यवादी नहीं ठहर सकता, क्योंकि यदि मनुष्य केवल ऐसी बातों में सत्य बोले जिनमें उसकी कुछ हानि नहीं तथा अपने सम्मान, धन अथवा प्राण की क्षति के समय झूठ बोल जाए और सत्य बोलने से मौन रहे तो उसे पागलों और बच्चों पर क्या श्रेष्ठता है ? क्या पागल और अवयस्क लड़के भी ऐसा सत्य नहीं बोलते ? संसार में ऐसा कोई भी नहीं होगा कि जो बिना किसी प्रेरणा के अकारण झूठ बोले। अत: ऐसा सत्य जो किसी हानि के समय छोड़ा जाए वास्तविक शिष्टाचार में कदापि सम्मिलित नहीं होगा। सत्य बोलने का बड़ा स्थान और अवसर वही है जिस में अपने प्राण, धन अथवा सम्मान का भय हो। इसमें ख़ुदा की शिक्षा यह है :-

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ①

وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ②

① सूरह अलहज्ज - 31

② सूरह अलबक़रह - 283

وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۖ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ۖ ①

وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ ②

كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ ③

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ۖ ④

وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ ⑤

وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝ ⑥

لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ⑦

अनुवाद :- मूर्तियों की पूजा और झूठ बोलने से बचो अर्थात् झूठ भी एक मूर्ति है जिस पर भरोसा करने वाला ख़ुदा का भरोसा त्याग देता है। अतः झूठ बोलने से ख़ुदा भी हाथ से जाता है। फिर कहा कि जब तुम सच्ची गवाही के लिए बुलाए जाओ तो जाने से इन्कार मत करो, तथा सच्ची गवाही को मत छुपाओ और जो छुपाएगा उस का हृदय पापी है तथा जब तुम बोलो तो वही बात मुख पर लाओ जो बिल्कुल सत्य और न्याय की बात है यद्यपि तुम अपने किसी निकट संबंधी पर

---

① सूरह अलबक़रह - 284
② सूरह अलअन्आम - 153
③ सूरह अन्निसा - 136
④ सूरह अलमाइदह - 9
⑤ सूरह अलअहज़ाब - 36
⑥ सूरह अलअस्र - 4
⑦ सूरह अलफ़ुरक़ान - 73

गवाही दो। सत्य और न्याय पर स्थापित हो जाओ तथा चाहिए कि तुम्हारी प्रत्येक गवाही ख़ुदा के लिए हो। झूठ मत बोलो यद्यपि सत्य बोलने से तुम्हारे प्राणों को क्षति पहुंचे या उस से तुम्हारे माता-पिता को क्षति पहुंचे अथवा अन्य निकट संबंधियों को जैसे बेटे इत्यादि को, और चाहिए कि किसी जाति की शत्रुता तुम्हें सच्ची गवाही में बाधक न हो। सच्चे पुरुष और सच्ची स्त्रियां बड़े-बड़े प्रतिफल पाएंगे। उनकी आदत है कि दूसरों को भी सत्य बोलने की नसीहत करते हैं तथा झूठों की सभाओं में नहीं बैठते।

धैर्य

मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं में से एक धैर्य है जो उसे उन संकटों, रोगों तथा दुःखों पर करना पड़ता है जो उस पर हमेशा आते रहते हैं तथा मनुष्य बहुत कुछ रोने-पीटने के पश्चात् धैर्य धारण करता है परन्तु यह ज्ञात होना चाहिए कि ख़ुदा की पवित्र किताब के अनुसार वह धैर्य शिष्टाचार में नहीं है अपितु वह एक अवस्था है जो थक जाने के पश्चात् आवश्यक तौर पर प्रकट हो जाती है अर्थात् मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं में से यह भी एक अवस्था है कि वह संकट के आने के समय पहले रोता-पीटता, चिल्लाता है अन्ततः बहुत सी गर्मी निकाल कर जोश थम जाता है और चरम सीमा तक पहुंच कर पीछे हटना पड़ता है। अतः ये दोनों क्रियाएं स्वाभाविक अवस्थाएं हैं इनका शिष्टाचार से कुछ संबंध नहीं अपितु इसके संबंध में शिष्टाचार यह है कि जब कोई वस्तु अपने हाथ से जाती रहे तो उस वस्तु को ख़ुदा तआला की अमानत समझ कर मुख पर कोई शिकायत न लाए और यह कह कर कि ख़ुदा का था, ख़ुदा ने ले लिया और हम उसकी प्रसन्नता के साथ प्रसन्न हैं। इस शिष्टाचार के संबंध में ख़ुदा तआला का पवित्र कलाम क़ुर्आन शरीफ़ हमें यह शिक्षा देता है :-

وَلَنَبۡلُوَنَّكُمۡ بِشَیۡءٍ مِّنَ الۡخَوۡفِ وَالۡجُوۡعِ وَنَقۡصٍ مِّنَ الۡاَمۡوَالِ
وَالۡاَنۡفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیۡنَ ۙ الَّذِیۡنَ اِذَاۤ اَصَابَتۡهُمۡ
مُّصِیۡبَةٌ ۙ قَالُوۡۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡهِ رٰجِعُوۡنَ ؕ اُولٰٓئِكَ عَلَیۡهِمۡ صَلَوٰتٌ
مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُهۡتَدُوۡنَ ①

अर्थात् हे मोमिनो ! हम तुम्हें इस प्रकार से परखते रहेंगे कि तुम पर कभी कोई भयावह अवस्था व्याप्त होगी और कभी ग़रीबी और भूख तुम्हारे साथ लगी होगी और कभी तुम्हारी आर्थिक हानि होगी और कभी प्राणों पर आपदा आएगी और कभी अपने प्रयासों में विफल होगे तथा तुम्हारे प्रयत्नों के यथायोग्य परिणाम नहीं निकलेंगे और कभी तुम्हारी प्रिय सन्तान मृत्यु का शिकार होगी। अतः उन लोगों को ख़ुशख़बरी हो कि जब उन्हें कोई संकट पहुंचे तो वे कहते हैं कि हम ख़ुदा की वस्तुएं और उसकी धरोहरें तथा उसके दास हैं अतः सत्य यही है कि जिसकी धरोहर है उसकी ओर लौटे। यही लोग हैं जिन पर ख़ुदा की कृपाएं हैं और यही लोग हैं जो ख़ुदा के मार्ग को पा गए।

अतः इस शिष्टाचार का नाम धैर्य तथा ख़ुदा की प्रसन्नता के साथ प्रसन्न होना है और एक प्रकार से इस शिष्टाचार का नाम न्याय भी है, क्योंकि जब ख़ुदा तआला मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन में उसकी इच्छा के अनुसार काम करता है एवं हज़ारों बातें उसकी इच्छानुसार प्रकट करता है और मनुष्य की इच्छानुसार उसे इतनी ने'मतें दे रखी हैं कि मनुष्य उन्हें गिन नहीं सकता तो फिर यह न्यायसंगत शर्त नहीं कि यदि वह कभी अपनी इच्छानुसार भी कराना चाहे तो मनुष्य मुख फेर ले और उसकी इच्छा के साथ सहमत न हो तथा वाद-विवाद करे या अधर्मी और पथ-भ्रष्ट हो जाए।

---

① सूरह अलबक़रह - 156 से 158

प्रजा की सहानुभूति

मनुष्य की स्वाभाविक बातों में से जो उसके स्वभाव के साथ संलग्न हैं प्रजा की सहानुभूति का आवेग जो उसकी प्रवृति में है। जातिगत समर्थन का जोश स्वाभाविक तौर पर प्रत्येक धर्म के लोगों में पाया जाता है और प्राय: देखा गया है कि अधिकतर लोग स्वाभाविक मनोवेगों के अधीन होकर अपनी सजातीय हमदर्दी के निमित्त दूसरों पर अत्याचार कर देते हैं जैसे उन्हें मानव नहीं समझते। अत: इस अवस्था को शिष्टाचार नहीं कह सकते। यह केवल एक स्वाभाविक आवेग है और यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो यह अवस्था कौवों आदि पक्षियों में भी पाई जाती है कि एक कौवे के मरने पर हज़ारों कौवे एकत्र हो जाते हैं, परन्तु यह वृत्ति मनुष्य के शिष्टाचार में उस समय सम्मिलित होगी जबकि यह सहानुभूति न्याय यथास्थान एवं यथावसर हो। उस समय यह एक महान शिष्टाचार होगा, जिसका नाम अरबी में 'मवासात' और फ़ारसी में हमदर्दी है। इसी की ओर अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ में संकेत किया है :-

تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۠ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۠ ①

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ ②

وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ③

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝ ④

① सूरह अलमाइदह - 3
② सूरह अन्निसा - 105
③ सूरह अन्निसा - 106
④ सूरह अन्निसा - 108

अर्थात् अपनी जाति की हमदर्दी और सहायता केवल शुभ कार्यों में करनी चाहिए तथा अत्याचार और ज़ुल्म के कार्यों में उनकी सहायता कदापि नहीं करनी चाहिए। तथा जाति की हमदर्दी में तत्पर रहो, थको मत और ग़बन करने वालों की ओर से न झगड़ो। जो ग़बन करने से नहीं रुकते ख़ुदा तआला ग़बन करने वालों को मित्र नहीं रखता।

एक सर्वोत्कृष्ट अस्तित्व की खोज

मनुष्य की स्वाभाविक अवस्थाओं में से एक अवस्था एक सर्वोत्कृष्ट हस्ती की खोज है जो उसके स्वभाव का अनिवार्य अंग है जिसके लिए मनुष्य के अन्तःकरण में एक आकर्षण मौजूद है और इस खोज का प्रभाव उसी समय से महसूस होने लगता है जब कि बच्चा मां के गर्भ से बाहर आता है, क्योंकि बच्चा पैदा होते ही सर्वप्रथम अपनी अध्यात्मिक विशेषता का जो प्रदर्शन करता है वह यही है कि मां की ओर झुकता है तथा स्वाभाविक तौर पर मां का प्रेम रखता है और फिर ज्यों-ज्यों उसकी ज्ञानेन्द्रियों का विकास होता जाता है तथा प्रकृति भी निखरती जाती है यह प्रेम का आकर्षण जो उसके अन्दर निहित था अपना रंग-रूप स्पष्ट तौर पर दिखाता चला जाता है फिर तो यह होता है कि अपनी मां की गोद के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं आराम नहीं पाता और उसका पूर्ण आराम उसी के महरबान आंचल में होता है और यदि मां से पृथक कर दिया जाए तथा दूर डाल दिया जाए तो उसका समस्त आराम समाप्त हो जाता है, यद्यपि उसके आगे ने'मतों का एक ढेर डाल दिया जाए तब भी वह अपनी सच्ची ख़ुशी मां के आंचल में ही देखता है तथा उसके बिना किसी प्रकार आराम नहीं पाता। अतः वह प्रेम का आकर्षण जो उसे अपनी मां के प्रति पैदा होता है वह क्या वस्तु है ?

वास्तव में यह वही आकर्षण है जो **वास्तविक उपास्य** के लिए

बच्चे की प्रकृति में रखा गया है अपितु प्रत्येक स्थान पर जो मनुष्य प्रेम संबंध पैदा करता है वास्तव में वही आकर्षण काम कर रहा है और प्रत्येक स्थान पर जो यह **प्रेमपूर्ण जोश** दिखाता है वास्तव में वह उसी प्रेम का एक प्रतिबिम्ब है जैसे दूसरी वस्तुओं को उठा-उठा कर एक खोई हुई वस्तु को खोज रहा है जिसका अब नाम भूल गया है। अतः मनुष्य का धन या सन्तान या पत्नी से प्रेम करना या किसी मधुर स्वर के गीत की ओर उसकी आत्मा का आकर्षित होते जाना वास्तव में उसी **खोए हुए प्रियतम** की खोज है। चूंकि मनुष्य इस सूक्ष्म से सूक्ष्म हस्ती को जो अग्नि के समान प्रत्येक में गुप्त और सब पर छुपी है अपनी भौतिक आंखों से देख नहीं सकता और न अपनी अपूर्ण बुद्धि से उसे पा सकता है। इसलिए उसकी पहचान के बारे में मनुष्य को बड़ी-बड़ी ग़लतियां लगी हैं और भूलों के कारण उसका अधिकार दूसरों को दिया गया है। ख़ुदा ने क़ुर्आन करीम में यह कितना उत्तम उदाहरण दिया है कि संसार एक ऐसे शीशमहल के समान है जिसकी पृथ्वी का फ़र्श नितान्त उज्ज्वल शीशों से बनाया गया है और फिर उन शीशों के नीचे पानी छोड़ा गया जो बड़े वेग से चल रहा है। अब प्रत्येक दृष्टि जो शीशों पर पड़ती है वह अपनी ग़लती से उन शीशों को भी पानी समझ लेती है और फिर मनुष्य उन शीशों पर चलने से ऐसा डरता है जैसा कि पानी से डरना चाहिए जबकि वह वास्तव में शीशे हैं परन्तु साफ़ और उज्ज्वल। अतः ये बड़े-बड़े ग्रह जो दिखाई देते हैं जैसे सूर्य और चन्द्रमा आदि ये वही साफ शीशे हैं जिनकी ग़लती से उपासना की गई तथा उनके नीचे एक उच्च शक्ति काम कर रही है जो उन शीशों के पर्दे में पानी के समान बड़ी तीव्रता से चल रही है और सृष्टिपूजकों की दृष्टि की यह ग़लती है कि इन्हीं शीशों की ओर सम्बद्ध कर रहे हैं जो उनके **नीचे की शक्ति** दिखा रही है। इस आयत की यही व्याख्या है :-

اِنَّهٗ صَرۡحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنۡ قَوَارِيۡرَ ①

अतः चूंकि ख़ुदा तआला की हस्ती अत्यन्त प्रकाशमान होने के बावजूद फिर भी नितान्त गुप्त है। इसलिए उसकी पहचान के लिए केवल यह भौतिक व्यवस्था जो हमारी दृष्टि के सामने है पर्याप्त न थी तथा यही कारण है कि ऐसी व्यवस्था पर निर्भर रहने वाले इसके बावजूद कि इस सुदृढ़ एवं प्रौढ़ व्यवस्था को जो सैकड़ों चमत्कारों पर आधारित है बहुत ध्यानपूर्वक देखते रहे अपितु खगोल, भौतिकी तथा दर्शनशास्त्र में वे महान कौशल दिखाए कि जैसे पृथ्वी और आकाश के अन्दर घुस गए परन्तु फिर भी सन्देह एवं संशयों से मुक्ति न पा सके और उनके अधिकांश लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की ग़लतियों में लिप्त हो गए और निरर्थक भ्रमों में पड़कर कहीं के कहीं चले गए। यदि उस सृष्टि के रचयिता के अस्तित्व की ओर उनका कुछ ध्यान गया भी तो मात्र इतना कि उच्चतम और श्रेष्ठ व्यवस्था को देखकर उनके हृदय में यह आया कि इस श्रेष्ठ सृष्टि का जो नीतिगत व्यवस्था अपने साथ रखती है कोई स्रष्टा अवश्य होना चाहिए परन्तु स्पष्ट है कि यह विचार अपूर्ण और ज्ञान दोषपूर्ण है क्योंकि यह कहना कि इस सृष्टि के लिए एक स्रष्टा की आवश्यकता है इस दूसरे कथन से कदापि समान नहीं हो सकता कि वह ख़ुदा वास्तव में है भी। अतः यह उनका अनुमानित ज्ञान था जो हृदय को सन्तुष्टि और मन को शान्ति प्रदान नहीं कर सकता और न संदेहों को हृदय से पूर्णतया दूर कर सकता है और न यह ऐसा प्याला है जिस से पूर्ण अध्यात्म ज्ञान की प्यास बुझ सके जो मानव-प्रकृति को लगाई गई अपितु ऐसा अपूर्ण अध्यात्म ज्ञान नितान्त ख़तरनाक होता है क्योंकि बहुत शोर डालने के पश्चात् फिर अन्ततः सब कुछ व्यर्थ सिद्ध होता है और परिणाम कुछ नहीं निकलता।

इसलिए जब तक ख़ुदा तआला स्वयं अपने मौजूद होने को अपनी

---

① सूरह अन्नमल - 45

पवित्र वाणी द्वारा प्रकट न करे जैसा कि उसने अपनी क्रिया से प्रकट किया तब तक केवल क्रिया का देखना सन्तोष नहीं दे सकता है। उदाहरणतया यदि हम ऐसी कोठरी को देखें जिसमें यह बात विचित्र हो कि अन्दर से कुंडियां लगाई गई हैं तो इस कार्य से हम सर्वप्रथम यह अवश्य विचार करेंगे कि कोई मनुष्य अन्दर है जिसने अन्दर से कुंडी को लगाया है क्योंकि बाहर से अन्दर की ज़ंजीरों को लगाना असंभव है, परन्तु जब एक अवधि तक अपितु वर्षों तक बारम्बार आवाज़ देने के बावजूद उस मनुष्य की ओर से कोई आवाज़ न आए तो अन्त में हमारी यह राय कि कोई अन्दर है बदल जाएगी और यह सोचेंगे कि अन्दर कोई नहीं अपितु किसी कूटनीति से अन्दर की कुन्डियां लगाई गई हैं। यह दशा उन दार्शनिकों की है जिन्होंने इस जगत की केवल बाह्य घटनाओं तक ही अपनी विचार शक्ति को सीमित कर दिया है। यह बड़ी भूल है कि ख़ुदा को एक मृतक के समान समझा जाए, जिसको क़ब्र से निकालना केवल मनुष्य का कार्य है। यदि ख़ुदा ऐसा है कि केवल मानव-प्रयास ने उसका पता लगाया है तो ऐसे ख़ुदा के बारे में हमारी समस्त आशाएं व्यर्थ हैं अपितु ख़ुदा तो वही है जो सदैव से तथा अनादिकाल से स्वयं **"मैं मौजूद हूं"** कह कर लोगों को अपनी ओर बुलाता रहा है। यह बड़ी धृष्टता होगी कि हम ऐसा सोचें कि उसे पहचानने में मनुष्य का उस पर उपकार है और यदि दार्शनिक न होते तो जैसे वह गुप्त का गुप्त ही रहता तथा यह कहना कि ख़ुदा क्योंकर बोल सकता है, क्या उसकी जीभ है ? यह भी एक बड़ी निर्लज्जता है। क्या उसने भौतिक हाथों के बिना समस्त सौर जगत तथा पृथ्वी की रचना नहीं की, क्या वह भौतिक आंखों के बिना समस्त संसार को नहीं देखता, क्या वह भौतिक कानों के बिना हमारी आवाज़ें नहीं सुनता। अतः क्या यह आवश्यक न था कि इसी प्रकार वह बात भी करे। यह बात कदापि उचित नहीं कि ख़ुदा का बोलना आगे नहीं अपितु पीछे रह गया है। हम उसके वार्तालाप एवं सम्बोधन को किसी युग विशेष तक सीमित नहीं

कर सकते। नि:सन्देह वह अब भी ढूंढने वालों को इल्हामी झरने से तृप्त करने को तैयार है जैसा कि पहले था और अब भी उसके वरदान के ऐसे द्वार खुले हैं जैसे कि पहले थे। हां मनुष्य की आवश्यकताएं अपनी चरम सीमा पर पहुंचकर शरीअतें (धर्म-विधान) और नियम भी अपनी चरम सीमा को पहुंच गए तथा समस्त रिसालतें और नुबुव्वतें अपने अन्तिम बिन्दु पर आकर जो हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] का अस्तित्व था अपनी सर्वांगपूर्ण सम्पूर्णता को पहुंच गईं।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.] का अरब में प्रादुर्भाव : एक नीति

इस अन्तिम प्रकाश का अरब से प्रकट होना नीति से रिक्त न था। अरब वह बनी इस्राईल की जाति थी जो इस्राईल से पृथक होकर ख़ुदा की नीति से फ़ारान के जंगलों में डाल दी गई थी तथा फ़ारान के अर्थ हैं दो भागने वाले। अत: जिनको स्वयं हज़रत इब्राहीम[अ.] ने बनी इस्राईल से पृथक कर दिया था उनका तौरात की शरीअत में कुछ भाग नहीं रहा था, जैसा कि लिखा है कि वे इस्हाक़ के साथ हिस्सा नहीं पाएंगे।

अत: संबंध रखने वालों ने उन्हें छोड़ दिया और किसी दूसरे से उनका संबंध और रिश्ता न था तथा अन्य समस्त देशों में कुछ-कुछ इबादतों की रस्में और आदेश पाए जाते थे, जिससे ज्ञात होता है कि उनको किसी समय नबियों की शिक्षा पहुंची थी, परन्तु केवल अरब का देश ही एक ऐसा देश था जो इन शिक्षाओं से बिल्कुल अपरिचित था तथा समस्त संसार से पिछड़ा हुआ था। इसलिए अन्त में उनकी बारी आई और उसकी नुबुव्वत सार्वभौमिक ठहरी ताकि समस्त देशों को उन वरदानों से पुन: लाभान्वित करे और जो विकार आ गया था उसे दूर करे। अत: पवित्र क़ुर्आन जैसे पूर्ण ग्रन्थ के पश्चात् किस ग्रन्थ की प्रतीक्षा करें जिसने मानव सुधार का समस्त उत्तरदायित्व अपने हाथ में ले लिया और प्राचीन ग्रन्थों के समान

केवल एक जाति से ही अपना संबंध स्थापित नहीं किया अपितु समस्त जातियों का सुधार चाहा तथा लोगों के प्रशिक्षण के समस्त चरण वर्णन किए। जंगली लोगों को मानवता के नियम सिखाए। फिर मानवीय रूप प्रदान करने के पश्चात् उच्चकोटि के शिष्टाचार का पाठ पढ़ाया।

क़ुर्आन करीम का संसार पर उपकार

संसार पर यह उपकार क़ुर्आन ने ही किया कि स्वाभाविक अवस्थाओं तथा उच्चकोटि के शिष्टाचारों में अन्तर करके दिखाया और जब स्वाभाविक अवस्थाओं से निकालकर उच्चकोटि के शिष्टाचार के उच्च स्थान तक पहुंचाया तो केवल उसी को पर्याप्त न समझा अपितु जो अन्य कठिन कार्य शेष था अर्थात् अध्यात्मिक अवस्थाओं के स्तर तक पहुंचने के लिए पवित्र अध्यात्म ज्ञान के मार्ग खोल दिए और न केवल खोल दिए अपितु लाखों लोगों को उस तक पहुंचा भी दिया। अतः इस प्रकार से तीनों प्रकार की शिक्षा जिसका मैं पहले वर्णन कर चुका हूं बड़ी सफलतापूर्वक वर्णन की है। अतः चूंकि वह समस्त शिक्षाओं का जिन पर धार्मिक प्रशिक्षणों की आवश्यकताओं का आधार है प्रत्येक प्रकार से सम्पूर्ण है इसलिए उसने यह दावा किया कि मैंने ही धार्मिक शिक्षा के क्षेत्र को चरम सीमा तक पहुंचाया। जैसा कि उसका कथन है :-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ط [1]

अर्थात् आज मैंने तुम्हारा धर्म पूर्ण किया और तुम पर अपनी ने'मत को पूरा कर दिया और मैं तुम्हारा धर्म इस्लाम ठहरा कर प्रसन्न हुआ अर्थात् धर्म का परम लक्ष्य वह बात है जो इस्लाम के अर्थ में पाई

[1] सूरह अलमाइदह - 4

जाती है अर्थात् यह कि केवल ख़ुदा के लिए हो जाना और अपनी मुक्ति अपने अस्तित्व की क़ुर्बानी से चाहना, न किसी अन्य मार्ग से। इस नीयत तथा इस इरादे को क्रियात्मक रूप में प्रदर्शित कर देना। यह वह बिन्दु है जिस पर समस्त विशेषताओं का अन्त होता है। अतः जिस ख़ुदा को दार्शनिकों ने न पहचाना **क़ुर्आन ने उस सच्चे ख़ुदा का पता बताया**। क़ुर्आन ने ख़ुदा की पहचान प्रदान करने के लिए दो उपाय रखे हैं। **प्रथम** - वह उपाय जिसके अनुसार मानव बुद्धि बौद्धिक तर्कों को पैदा करने में बहुत सुदृढ़ और प्रकाशमान हो जाती है और ग़लती करने से बच जाती है तथा **द्वितीय** अध्यात्मिक उपाय यह है कि जिसे हम तीसरे प्रश्न के उत्तर में ख़ुदा ने चाहा तो वर्णन करेंगे।

अल्लाह तआला के अस्तित्व के प्रमाण

अब देखिए कि बौद्धिक तौर पर क़ुर्आन शरीफ़ में ख़ुदा के अस्तित्व पर क्या-क्या उत्तम और अद्वितीय प्रमाण दिए हैं। जैसा कि एक स्थान पर कहा है :-

رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى [1]

अर्थात् ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने प्रत्येक वस्तु को यथायोग्य जन्म दिया फिर उस वस्तु को यथावश्यक विकसित होने का मार्ग भी प्रदर्शित किया। अब यदि आयत के भावार्थ पर दृष्टि रख कर मनुष्य से लेकर समस्त जलचरों और थलचरों और पक्षियों तक की बनावट को देखा जाए तो ख़ुदा की क़ुदरत याद आती है कि प्रत्येक वस्तु की बनावट उसके अनुरूप ही विदित होती है। पाठक स्वयं विचार कर लें क्योंकि यह विषय बहुत विशाल है।

ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर दूसरा प्रमाण क़ुर्आन शरीफ़ ने ख़ुदा तआला का समस्त कारणों का कारण होना ठहराया है।

---

[1] सूरह ताहा - 51

जैसा कि उसका कथन है :-

وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ①

अर्थात् समस्त कारणों और जिन का कोई कारण हो का सम्पूर्ण क्रम तेरे रब्ब पर समाप्त हो जाता है। विवरण इस प्रमाण का यह है कि गहरी दृष्टि डालने से ज्ञात होगा कि ये संसार की समस्त वस्तुएं कारणों तथा जिन के लिए कारण हैं के क्रम में सम्बद्ध हैं। इसी कारण संसार में भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्याएं पैदा हो गई हैं क्योंकि सृष्टियों का कोई भाग व्यवस्था से बाहर नहीं। इस सृष्टि रूपी वृक्ष में उसका कोई भाग जड़ के स्थान पर कार्यरत है तथा कोई शाखा के रूप में। यह तो स्पष्ट है कि कारण का आधार या तो स्वयं वह कारण ही होगा या उसका अस्तित्व किसी दूसरे कारण के अस्तित्व पर निर्भर होगा और फिर यह दूसरा कारण किसी अन्य कारण पर इसी प्रकार कारणों का क्रम आगे भी है। यह तो उचित नहीं कि इस सीमित संसार में कारणों और कार्यों का क्रम कहीं जाकर समाप्त न हो तथा असीम हो तो अनिवार्य तौर पर मानना पड़ा कि यह क्रम अवश्य किसी अन्तिम कारण पर जाकर समाप्त हो जाता है। अतः जिस पर इस समस्त सृष्टि का अन्त है वही ख़ुदा है। आंख खोल कर देख लो कि आयत وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى अपने संक्षिप्त शब्दों में किस प्रकार इस उपरोक्त प्रमाण को स्पष्ट कर रही है जिसका अर्थ यह है कि सम्पूर्ण क्रम का चरम बिन्दु तेरा रब्ब ही है। फिर अपने अस्तित्व पर एक और प्रमाण यह दिया जैसा कि उसका कथन है :-

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ

وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ②

---

① सूरह अन्नज्म - 43

② सूरह यासीन - 41

अर्थात् सूर्य चन्द्रमा को पकड़ नहीं सकता और न रात जो चन्द्रमा को प्रकट करने वाली है दिन पर जो सूर्य को प्रकटन करने वाला है कुछ आधिपत्य कर सकती है अर्थात् इनमें से कोई अपनी निर्धारित सीमा से बाहर नहीं जाता। यदि उन के पीछे कोई व्यवस्थापक न हो तो यह समस्त सृष्टिक्रम अस्त-व्यस्त हो जाए। यह तर्क खगोल शास्त्र पर विचार करने वालों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है क्योंकि आकाशीय ग्रहों के इतनी बड़ी शान वाले असंख्य गोले हैं जिनके तनिक अस्त-व्यस्त होने से समस्त संसार का विनाश हो सकता है। यह ख़ुदा की कैसी सच्ची क़ुदरत है कि वे न परस्पर टकराते हैं और न बाल भर गति बदलते और न इतनी अवधि तक काम देने से कुछ घिसे और न उनके कल-पुर्ज़ों में कुछ विकार आया। यदि सर पर कोई संरक्षक नहीं तो क्योंकर इतना विशाल कारखाना असंख्य वर्षों से स्वयं चल रहा है। इन्हीं नीतियों की ओर संकेत करके ख़ुदा तआला का दूसरे स्थान पर कथन है :-

اَفِی اللّٰہِ شَکٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ ①

अर्थात् क्या ख़ुदा के अस्तित्व में सन्देह हो सकता है जिसने ऐसे आकाश और ऐसी पृथ्वी बनाई।

फिर ख़ुदा तआला अपने अस्तित्व पर एक और सूक्ष्म प्रमाण देता है और वह यह है :-

کُلُّ مَنْ عَلَیْھَا فَانٍ ۚ وَّ یَبْقٰی وَجْہُ رَبِّکَ ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِکْرَامِ ۚ ②

अर्थात् प्रत्येक वस्तु नाशवान है और जो शेष रहने वाला अनश्वर है वह ख़ुदा है जो प्रताप वाला और महान है।

देखिए यदि हम कल्पना कर लें कि ऐसा हो जाए कि पृथ्वी टुकड़े-टुकड़े हो जाए और आकाशीय ग्रह भी टुकड़े-टुकड़े हो जाएं

① सूरह इब्राहीम - 11
② सूरह अर्रहमान - 27, 28

और इन को समाप्त करने वाली ऐसी वायु चले जो उन वस्तुओं के समस्त निशान मिटा दे परन्तु फिर भी बुद्धि इस बात को मानती और स्वीकार करती है अपितु सही अन्तरात्मा उसे अवश्य समझती है कि इस समस्त वस्तुओं के मिट जाने के पश्चात् भी एक वस्तु शेष रह जाए जिस पर मृत्यु न आए और अपनी पहली अवस्था पर यथावत् रहे। अतः वह वही ख़ुदा है जिसने समस्त नाशवान वस्तुओं को पैदा किया और स्वयं मृत्यु के हस्तक्षेप से सुरक्षित रहा।

पुनः अपने अस्तित्व पर एक और प्रमाण क़ुर्आन शरीफ़ में प्रस्तुत करता है -

اَلَسۡتُ بِرَبِّکُمۡ ؕ قَالُوۡا بَلٰی ①

अर्थात् मैंने रूहों (आत्माओं) को कहा कि क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं ? उन्होंने कहा क्यों नहीं।

इस आयत में ख़ुदा तआला क़िस्से के रंग में रूहों (आत्माओं) की उस विशेषता का वर्णन करता है जो उसने उनकी प्रकृति में रखी हुई है और वह यह है कि कोई आत्मा अपनी प्रकृति एवं स्वभाव की दृष्टि से ख़ुदा तआला का इन्कार नहीं कर सकती। केवल इन्कार करने वालों को अपने विचार में प्रमाण न मिलने के कारण इन्कार है परन्तु इस इन्कार के बावजूद वे इस बात को मानते हैं कि प्रत्येक नवीन बात के लिए एक नवीन बात निकालने वाला अवश्य है। संसार में ऐसा कोई मूर्ख नहीं कि यदि उदाहरणतया उसके शरीर में कोई रोग प्रकट हो तो वह इस बात पर आग्रह करे कि इसके पीछे इस रोग के प्रकट होने का कोई कारण नहीं। यदि संसार का यह सिलसिला कारण और कार्य से सम्बद्ध न होता तो समय से पूर्व यह बता देना कि अमुक तिथि को तूफ़ान आएगा या आंधी अथवा सूर्य या चन्द्र ग्रहण होगा

① सूरह अलआराफ़ - 173

या अमुक समय रोगी मर जाएगा या अमुक समय तक रोग के साथ एक अमुक रोग लग जाएगा। ये समस्त बातें असंभव हो जातीं। अतः ऐसा अन्वेषक यद्यपि ख़ुदा के अस्तित्व का इक़रार नहीं करता परन्तु एक प्रकार से तो उसने इक़रार कर ही दिया कि वह भी हमारे समान परिणामों के लिए कारणों की खोज में है। अतः यह भी एक प्रकार का इक़रार है यद्यपि पूर्ण इक़रार नहीं। इसके अतिरिक्त यदि किसी उपाय से ख़ुदा के अस्तित्व के एक इन्कारी को ऐसे तौर पर बेहोश किया जाए कि वह इस घटिया जीवन के विचारों से बिल्कुल पृथक होकर और समस्त इरादों से निलंबित होकर उच्च हस्ती के अधीन हो जाए तो वह इस अवस्था में ख़ुदा के अस्तित्व को स्वीकार करेगा, इन्कार नहीं करेगा जैसा कि इस पर बड़े-बड़े अनुभवी लोगों का अनुभव साक्षी है। अतः ऐसी ही अवस्था की ओर इस आयत में संकेत है और आयत का तात्पर्य यह है कि ख़ुदा के अस्तित्व का इन्कार केवल इस अधम जीवन तक है अन्यथा मूल स्वभाव में उस हस्ती के प्रति स्वीकृति भरी हुई है।

ख़ुदा तआला की विशेषताएं

ये अल्लाह तआला के अस्तित्व के प्रमाण हैं जिनका हम ने उदाहरण के रूप में उल्लेख किया है। तत्पश्चात् यह भी ज्ञात होना चाहिए कि जिस ख़ुदा की ओर से हमें क़ुर्आन शरीफ़ ने बुलाया है उसकी उसने ये विशेषताएं बताई हैं :-

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیۡ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ۚ عٰلِمُ الۡغَیۡبِ وَ الشَّہَادَۃِ ۚ ہُوَ الرَّحۡمٰنُ الرَّحِیۡمُ ①

مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ②

① सूरह अलहश्र - 23

② सूरह अलफ़ातिहः - 4

اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ①

هُوَاللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ③

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ ④

اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ ⑤

اَلْحَىُّ الْقَيُّوْمُ ⑥

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝ ⑦

अर्थात् वह ख़ुदा जो एक तथा भागीदाररहित है जिसके अतिरिक्त कोई भी उपासना एवं अनुसरण के योग्य नहीं। यह इसलिए कहा कि

---

① सूरह अलहश्र - 24
② सूरह अलहश्र - 25
③ सूरह अलबक़रः - 21
④ सूरह अलफ़ातिहः - 2-4
⑤ सूरह अलबक़रः - 187
⑥ सूरह अलबक़रः - 256
⑦ सूरह अलइख़्लास - 2-5

यदि वह भागीदाररहित न हो तो कदाचित उसकी शक्ति पर शत्रु की शक्ति विजयी हो जाए। ऐसी स्थिति में ख़ुदा की ख़ुदाई ख़तरे में रहेगी और यह जो कहा कि उसके अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं। इस से तात्पर्य यह है कि वह ऐसा पूर्ण ख़ुदा है जिसकी विशेषताएं और गुण तथा कौशल ऐसे उच्च कोटि के और बुलन्द हैं कि यदि संसार की समस्त वस्तुओं में से पूर्ण विशेषताओं के कारण एक ख़ुदा को चुनना चाहें या हृदय में अच्छे से अच्छी और उच्च से उच्च ख़ुदा की विशेषताएं मान लें तो वह सर्वोत्तम ख़ुदा कि जिस से बढ़कर कोई उच्च नहीं हो सकता। वही ख़ुदा है जिसकी उपासना में किसी निकृष्ट को भागीदार बनाना अन्याय है। पुनः कहा हे कि वह अन्तर्यामी है अर्थात् अपनी हस्ती को स्वयं ही जानता है। उसके अस्तित्व को कोई परिधि में नहीं ले सकता। हम सूर्य, चन्द्रमा और प्रत्येक सृष्टि को सर से पैर तक देख सकते हैं परन्तु ख़ुदा का सरापा देखने में असमर्थ हैं। पुनः कहा कि वह आलिमुश्शहादह है अर्थात् कोई वस्तु उसकी दृष्टि से पर्दे में नहीं है। यह उचित नहीं कि वह ख़ुदा कहला कर फिर वस्तुओं के ज्ञान से लापरवाह हो। वह इस संसार के कण-कण पर अपनी दृष्टि रखता है परन्तु मनुष्य नहीं रख सकता। वह जानता है कि कब इस व्यवस्था को तोड़ देगा और प्रलय ले आएगा। उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि ऐसा कब होगा ? अतः वही ख़ुदा है जो इन समस्त समयों को जानता है। पुनः कहा - هوالرحمـن अर्थात् वह प्राणियों की हस्ती और उनके कार्यों से पहले मात्र अपनी कृपा से न किसी उद्देश्य से और न किसी कर्मफल से उनके लिए आराम के सामान उपलब्ध करता है। जैसा कि सूर्य और पृथ्वी और अन्य समस्त वस्तुओं को हमारे अस्तित्व तथा हमारे कर्मों के अस्तित्व से पूर्व हमारे लिए बना दिया। इस कृपा दान का नाम ख़ुदा की किताब में रहमानियत (कृपालुता) है तथा इस कार्य की दृष्टि से ख़ुदा तआला रहमान (कृपालु) कहलाता है। फिर उसका

कथन है कि **अर्रहीम**। अर्थात् वह ख़ुदा शुभ कर्मों का शुभ प्रतिफल देता है तथा किसी के परिश्रम को व्यर्थ नहीं करता। इस कार्य की दृष्टि से **रहीम** (दयालु) कहलाता है और इस विशेषता को रहीमियत (दयालुता) की संज्ञा दी गई है। फिर कहा - **मालिके यौमिद्दीन** अर्थात् वह ख़ुदा प्रत्येक का प्रतिफल अपने हाथ में रखता है उसका कोई ऐसा व्यवस्थापक नहीं जिसे उसने पृथ्वी और आकाश का शासन सौंप दिया हो और स्वयं पृथक होकर बैठा हो और कुछ न करता हो तथा वही व्यवस्थापक सब कुछ प्रतिफल और दण्ड देता हो या भविष्य में देने वाला हो। पुनः कहा - اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ (अलमलिकुल क़ुद्दूस) अर्थात् वह ख़ुदा बादशाह है जिस पर कोई दोष नहीं। यह स्पष्ट है कि मानवीय शासन दोषरहित नहीं। यदि उदाहरणतया समस्त प्रजा देश से निष्कासित हो कर दूसरे देश की ओर पलायन कर जाए तो फिर बादशाही स्थापित नहीं रह सकती या यदि समस्त प्रजा दुर्भिक्ष का शिकार हो जाए तो फिर राजस्व कहां से आए और यदि शासन में रहने वाले लोग उस से बहस आरंभ कर दें कि तुझ में हम से अधिक क्या है तो वह अपनी कौन सी योग्यता सिद्ध करे। अतः ख़ुदा तआला की बादशाही ऐसी नहीं है। वह एक पल में समस्त देशों को समाप्त करके अन्य सृष्टियां पैदा कर सकता है। यदि वह ऐसा स्रष्टा और शक्तिशाली न होता तो फिर अन्याय के अतिरिक्त उसकी बादशाहत न चल सकती क्योंकि वह संसार को एक बार क्षमा और मुक्ति देकर फिर दूसरा संसार कहां से लाता। क्या मुक्ति प्राप्त लोगों को संसार में भेजने के लिए फिर पकड़ता और अन्याय के मार्ग से अपनी क्षमा और मुक्ति प्रदान करने को वापस लेता तो ऐसी अवस्था में उसकी ख़ुदाई में अन्तर आता और सांसारिक बादशाहों के समान दोषी बादशाह होता जो संसार के लिए नियम बनाते हैं, बात-बात पर बिगड़ते हैं तथा अपने स्वार्थ के अवसरों पर जब देखते हैं कि अन्याय के बिना चारा

नहीं जो अन्याय एवं अत्याचार को मां का दूध समझ कर पी लेते हैं। उदाहरणतया बादशाही क़ानून वैध रखता है कि एक जलयान को बचाने के लिए एक नौका के सवारों को तबाही में डाल दिया जाए और नष्ट किया जाए, परन्तु ख़ुदा के सामने तो यह विवशता नहीं आनी चाहिए। यदि ख़ुदा पूर्ण शक्तिशाली, शून्य से पैदा करने वाला न होता तो वह या तो शक्तिहीन राजाओं के समान शक्ति के स्थान पर अत्याचार से काम लेता और या न्यायकर्ता बन कर ख़ुदाई को ही छोड़ बैठता अपितु ख़ुदा का जलयान समस्त शक्तियों के साथ सच्चे न्याय पर चल रहा है।

पुनः कहा है - السلام (अस्सलाम) अर्थात् वह ख़ुदा जो समस्त दोषों, विपत्तियों और संकटों से सुरक्षित है अपितु सुरक्षा देने वाला है इसके अर्थ ही स्पष्ट हैं, क्योंकि यदि वह स्वयं ही संकटों में पड़ता, लोगों के हाथ से मारा जाता तथा अपने इरादों में असफल रहता तो इस बुरे आदर्श को देखकर हृदय किस प्रकार सन्तोष धारण करते कि ऐसा ख़ुदा हमें अवश्य ही संकटों से मुक्ति देगा। अतः अल्लाह तआला झूठे उपास्यों के विषय में कहता है :-

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّ لَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ○ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ○ ①

जिन लोगों को तुम ख़ुदा बनाए बैठे हो वे तो ऐसे हैं कि यदि सब मिलकर एक मक्खी पैदा करना चाहें तो कभी पैदा न कर सकें यद्यपि एक दूसरे की सहायता भी करें अपितु यदि मक्खी उनकी वस्तु छीन

① सूरह अलहज्ज - 74-75

कर ले जाए तो उनमें शक्ति नहीं कि वे मक्खी से वह वस्तु वापस ले सकें। उनके उपासक बुद्धि तथा शक्ति से कमज़ोर हैं। क्या ख़ुदा ऐसे हुआ करते हैं ? ख़ुदा तो वह है जो समस्त शक्तिशाली लोगों से अधिक शक्तिशाली और सब पर विजय पाने वाला है। न उसे कोई पकड़ सके, न मार सके। जो लोग ऐसी ग़लतियों में पड़ते हैं वे ख़ुदा के महत्त्व को नहीं समझते तथा नहीं जानते कि ख़ुदा कैसा होना चाहिए। पुनः कहा कि ख़ुदा शान्ति प्रदान करने वाला और अपने चमत्कारों तथा अपने एक होने पर प्रमाण देने वाला है। यह इस बात की ओर संकेत है कि सच्चे ख़ुदा पर विश्वास रखने वाला किसी सभा में लज्जित नहीं हो सकता और न ख़ुदा के सामने लज्जित होगा, क्योंकि उसके पास शक्तिशाली प्रमाण होते हैं, परन्तु कृत्रिम ख़ुदा का मानने वाला बड़ी द्विविधा और कठिनाई में फंसा होता है वह प्रमाणों का वर्णन करने के स्थान पर प्रत्येक निरर्थक बात को रहस्य में सम्मिलित करता है ताकि उपहास न हो तथा प्रमाणित ग़लतियों को गुप्त रखना चाहता है।

अल्लाह तआला का कथन है कि -

اَلْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ ①

अर्थात् वह सब का रक्षक है और सब पर विजयी तथा बिगड़े हुए कार्यों को बनाने वाला और उसका अस्तित्व अत्यन्त निःस्पृह है। (अर्थात उसे किसी सहायक की आवश्यकता नहीं) तत्पश्चात कहा -

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ ②

अर्थात् वह ऐसा ख़ुदा है कि वह शरीरों का भी पैदा करने वाला तथा आत्माओं का भी पैदा करने वाला है। गर्भाशय में शिशु को आकृति देने वाला (जैसी चाहे शक्लें बनाने वाला) है। समस्त शुभ नाम जिनकी

---

① सूरह अलहश्र - 24

② सूरह अलहश्र - 25

कल्पना की जा सकती है सब उसी के नाम हैं। पुनः कथन है कि -

يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

अर्थात् आकाश के लोग भी उसके नाम की पवित्रता को स्मरण करते हैं और पृथ्वी पर रहने वाले लोग भी। इस आयत में यह संकेत किया गया है कि आकाशीय ग्रहों में आबादी है और वे लोग भी ख़ुदा के निर्देशों का पालन करते हैं और पुनः कहा

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ②

अर्थात् ख़ुदा बड़ा सामर्थ्यवान है। यह उपासकों के लिए सांत्वना की बात है क्योंकि यदि ख़ुदा तआला असमर्थ हो और समर्थ न हो तो ऐसे ख़ुदा से क्यों आशा रखें। पुनः उसका कथन है -

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ③

اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ ④

अर्थात् वही ख़ुदा है जो समस्त लोकों का प्रतिपालक, कृपालु, दयालु और प्रतिफल तथा दण्ड के दिन का स्वयं मालिक है इस अधिकार को किसी के हाथ में नहीं दिया, प्रत्येक पुकारने वाले की पुकार को सुनने वाला तथा उत्तर देने वाला है अर्थात् दुआओं का स्वीकार करने वाला। पुनः कहा -

---

① सूरह अलहश्र - 25
② सूरह अलबक़र: - 21
③ सूरह अलफ़ातिह: - 2-4
④ सूरह अलबक़र: - 187

اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ[1]

अर्थात् हमेशा रहने वाला और समस्त प्राणों का प्राण और सब के अस्तित्व का सहारा। यह इसलिए कहा कि वह अजर-अमर न हो तो उसके जीवन के बारे में भी संशय रहेगा कि कदाचित हम से पूर्व मृत्यु को प्राप्त न हो जाए। पुनः कहा -

वह ख़ुदा अकेला ख़ुदा है। न वह किसी का बेटा और न कोई उसका बेटा, और न कोई उसके समान और न कोई उसका सजातीय।

स्मरण रहे कि ख़ुदा तआला के एकेश्वरवाद को उचित रूप से स्वीकार करना तथा उसमें कमी-बेशी न करना यह वह न्याय है जिसे मनुष्य अपने वास्तविक स्वामी के लिए करता है। यह समस्त भाग नैतिक शिक्षा का है जो क़ुर्आन करीम की शिक्षा में से लिया गया। इसमें नियम यह है कि ख़ुदा तआला ने समस्त शिष्टाचारों को न्यूनाधिकता से बचाया है और प्रत्येक शिष्टाचार को इस अवस्था में शिष्टाचार की संज्ञा दी है कि जब अपनी वास्तविक और उचित सीमा से कम या अधिक न हो। यह तो स्पष्ट है कि वास्तविक भलाई वही होती है जो दो सीमाओं के मध्य में होती है अर्थात् कमी-बेशी या न्यूनाधिकता के मध्य होती है। प्रत्येक आदत जो मध्य की ओर आकर्षित करे और मध्य स्थल पर स्थापित करे वही पूर्ण सदाचार को जन्म देती है। स्थान और अवसर का पहचानना एक मध्य मार्ग है। उदाहरणतया यदि कृषक अपना बीज समय से पूर्व बो दे या समय गुज़र जाने के पश्चात् बोए। दोनों अवस्थाओं में वह मध्य मार्ग को छोड़ता है। कल्याण, सत्य और नीति सब मध्य मार्ग में है और मध्य अवसरवादिता में या यों समझ लो कि सत्य वह वस्तु है जो सदैव दो विरोधी असत्यों के मध्य में होती है तथा इसमें कुछ सन्देह नहीं कि उचित अवसर को समझ लेना मनुष्य को मध्य में रखता है और ख़ुदा को पहचानने के संबंध में मध्य की पहचान यह है कि ख़ुदा की विशेषताएं वर्णन करने में

[1] सूरह अलबक़र: - 256

न तो नकारात्मक विशेषताओं के पक्ष की ओर झुक जाए और न ख़ुदा की भौतिक वस्तुओं के समान ठहराए। यही पद्धति क़ुर्आन शरीफ़ ने ख़ुदा तआला की विशेषताओं के वर्णन करने में अपनाई है। वरन् वह यह भी कहता है कि ख़ुदा देखता, सुनता, जानता, बोलता और वार्तालाप करता है और फिर सृष्टि की समानता से बचाने के लिए यह भी कहता है

अर्थात् ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं में उसका कोई भागीदार नहीं उसके लिए सृष्टि (मख़्लूक़) से उपमाएं मत दो। अतः ख़ुदा की हस्ती को उपमा तथा दोषरहित करने के बीच-बीच रखना यही मध्य मार्ग है। अतः **इस्लाम** की सम्पूर्ण शिक्षा संतुलन वाली शिक्षा है। सूरह फ़ातिहा भी संतुलन का निर्देश देती है क्योंकि ख़ुदा तआला का कथन है

غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّينَ [3]

मग़ज़ूब अलैहिम से अभिप्राय वे लोग हैं जो ख़ुदा तआला के विरुद्ध क्रोध की शक्ति का प्रयोग करके हिंसावृत्ति का अनुसरण करते हैं और 'ज़्वाल्लीन' से अभिप्राय वे लोग हैं जो पशुओं वाली शक्तियों का अनुसरण करते हैं और मध्यमार्ग वह है जिसे शब्द اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से याद किया है। अतः इस मुबारक उम्मत के लिए क़ुर्आन शरीफ़ में मध्य मार्ग का निर्देश है। ख़ुदा तआला ने तौरात में प्रतिशोध संबंधी बातों पर बल दिया था और इंजील में क्षमा और माफ़ी पर बल दिया था और इस उम्मत को अवसर पहचानने तथा मध्य की शिक्षा मिली।

---

① सूरह अश्शूरा - 12

② सूरह अन्नहल - 75

③ सूरह अलफ़ातिहः - 7

अतः अल्लाह तआला का कथन है :-

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا ①

अर्थात् हम ने तुम्हें मध्य पर अमल करने वाले बनाया और तुम्हें मध्य की शिक्षा दी। अतः सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो मध्य मार्ग पर चलते हैं।

خَيْرُ الْاُمُوْرِ اَوْسَطُهَا ②

आध्यात्मिक अवस्थाएं

तीसरा प्रश्न अर्थात् यह कि **आध्यात्मिक अवस्थाएं क्या हैं ?** स्पष्ट रहे कि हम इस से पूर्व वर्णन कर चुके हैं कि क़ुर्आन करीम के निर्देशानुसार आध्यात्मिक अवस्थाओं का स्रोत और उद्गम सात्त्विक वृत्ति (जो आत्मा में सन्तोष पैदा करती है) है जो मनुष्य को चरित्रवान होने की श्रेणी से ख़ुदा वाला होने की श्रेणी तक पहुंचाती है। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ۝ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ۝ ③

अर्थात् ख़ुदा के साथ आराम प्राप्त मनोवृत्ति ! अपने रब्ब की ओर वापस चली आ। वह तुझ से प्रसन्न तू उस से प्रसन्न। अतः मेरे बन्दों में सम्मिलित हो जा और मेरे स्वर्ग के अन्दर आ जा।

यहां उचित है कि हम आध्यात्मिक अवस्थाओं का वर्णन करने के लिए इस आयत की व्याख्या किसी सीमा तक स्पष्टतापूर्वक वर्णन करें। अतः स्मरण रखना चाहिए कि उच्च श्रेणी की आध्यात्मिक

① सूरह अलबक़रः - 144
② तफ़्सीर क़ुरतबी, भाग - 2 पृष्ठ 154
③ सूरह अलफ़ज्र - 28-31

अवस्था मनुष्य के इस भौतिक जीवन में यह है कि ख़ुदा के साथ आराम पा जाए तथा उसका सम्पूर्ण सन्तोष, हर्ष और आनन्द ख़ुदा में ही हो जाए। यही वह अवस्था है जिसे दूसरे शब्दों में **स्वर्गीय जीवन** कहा जाता है। इस अवस्था में मनुष्य अपनी पूर्ण निष्ठा, शुद्धता और वफ़ा के बदले में एक नक़द स्वर्ग पा लेता है तथा दूसरे लोगों की दृष्टि वादा दिए गए स्वर्ग पर होती है तथा यह मौजूद स्वर्ग में प्रवेश करता है। इसी श्रेणी पर पहुंचकर मनुष्य समझता है कि वह इबादत जिस का बोझ उसके सर पर डाला गया है वास्तव में वही एक ऐसा भोजन है जिस से उसकी आत्मा पोषण पाती है और जिस पर उसके आध्यात्मिक जीवन की बड़ी भारी निर्भरता है और उसके परिणाम की प्राप्ति किसी अन्य लोक में नहीं अपितु इसी जगत में प्राप्त होती है कि वे समस्त भर्त्सनाएं जो मनुष्य की राजसिक वृत्ति द्वारा मनुष्य के अपवित्र जीवन पर पड़ती हैं और फिर भी शुभ इच्छाओं को भली प्रकार उभार नहीं सकतीं और बुरी इच्छाओं से घृणा नहीं दिला सकतीं और न कल्याण करने पर ठहरने की पूर्ण शक्ति प्रदान कर सकती हैं उस पवित्र प्रेरणा से परिवर्तित हो जाती हैं जो सात्त्विक वृत्ति के पोषण और विकास का प्रारंभिक रूप होती हैं। इस श्रेणी पर पहुंचकर समय आ जाता है कि मनुष्य पूर्ण कल्याण प्राप्त करे और अब समस्त कामभावनाएं स्वयं शिथिल होने लगती हैं और आत्मा पर एक ऐसी शाक्तिदायिनी वायु चलने लगती है जिस से मनुष्य को पहले दोषों पर शर्मिन्दगी होने लगती है। उस समय मानवीय प्रकृति पर एक बड़ी क्रान्ति आती है तथा स्वभाव में एक महान परिवर्तन पैदा होता है और मनुष्य अपनी पूर्व अवस्थाओं से बहुत ही दूर जा पड़ता है, उसे स्वच्छ और साफ किया जाता है तथा ख़ुदा नेकी के प्रेम को अपने हाथ से उसके हृदय पर अंकित कर देता है और बुराई की दुर्गन्ध अपने हाथ से उसके हृदय से बाहर फेंक देता है, सच्चाई की समस्त सेना हृदय

रूपी शहर में आ जाती है और स्वभाव के समस्त मंडपों पर सच्चाई का आधिपत्य हो जाता है और सत्य की विजय होती है और असत्य भाग जाता है तथा अपने शस्त्र फेंक देता है। उस व्यक्ति के हृदय पर ख़ुदा का हाथ होता है तथा प्रत्येक क़दम ख़ुदा की छत्र छाया में चलता है। अतः ख़ुदा तआला निम्नलिखित आयतों में इन्हीं बातों की ओर संकेत करता है :-

اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ط ①

حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ط اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ ②

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ط اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ③

अर्थात् ख़ुदा ने मोमिनों के हृदय में ईमान को अपने हाथ से लिख दिया है और जिब्राईल के द्वारा उनकी सहायता की। हे मोमिनो ! उसने ईमान को तुम्हारा प्रियतम बना दिया और उसका अलौकिक सौन्दर्य एवं सुन्दरता तुम्हारे हृदय में बैठा दी तथा कुफ़्र, दुराचार तथा पाप के प्रति तुम्हारे हृदय में घृणा उत्पन्न कर दी और बुरे मार्गों का घृणित होना तुम्हारे हृदय में जमा दिया। यह सब कुछ ख़ुदा की कृपा और दया से हुआ। सत्य आया और असत्य भाग गया और असत्य सत्य के सामने कब ठहर सकता था।

अतः ये समस्त संकेत उस आध्यात्मिक अवस्था की ओर हैं जो

① सूरह अलमुजादलह - 23

② सूरह अलहुजुरात - 8-9

③ सूरह बनी इस्राईल - 82

तीसरी श्रेणी पर मनुष्य को प्राप्त होती है और मनुष्य को आंखों का सच्चा प्रकाश कभी नहीं मिल सकता जब तक उसे यह अवस्था प्राप्त न हो तथा ख़ुदा तआला ने यह जो कहा है कि मैंने उनके हृदय में ईमान अपने हाथ से लिखा और जिब्राईल से उनकी सहायता की। यह इस बात की ओर संकेत है कि मनुष्य को सच्चाई, पवित्रता एवं शुद्धता कभी प्राप्त नहीं हो सकती जब तक आकाशीय सहायता उसके साथ न हो। राजसिक वृत्ति की श्रेणी पर मनुष्य की यह दशा होती है कि बार-बार पश्चाताप करता और बार-बार गिरता है अपितु प्रायः अपनी सामर्थ्य से निराश हो जाता है तथा अपने रोग को असाध्य समझ लेता है। और एक समय तक ऐसा ही रहता है और फिर जब निर्धारित समय पूर्ण हो जाता है तो रात या दिन को सहसा एक ज्योति उस पर उतरती है तथा उस ज्योति में ख़ुदाई शक्ति निहित होती है। उस ज्योति के आने के साथ ही उसके अन्दर एक अद्भुत परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है तथा इस अलौकिक परिवर्तन के पीछे एक अगोचर तथा शक्तिशाली सत्ता के हाथ का आभास होता है तथा एक विचित्र अवस्था सामने आ जाती है। उस समय मनुष्य को ज्ञात होता है कि वह स्वयं ख़ुदा है तथा आंखों में वह ज्योति आ जाती है जो पहले नहीं थी परन्तु उस मार्ग को क्योंकर प्राप्त करें और उस ज्योति को क्योंकर पाएं। अतः ज्ञात होना चाहिए कि इस संसार में जिसे घटनाओं के संसार का नाम दिया जाता है। प्रत्येक परिणाम के लिए एक कारण है और प्रत्येक क्रिया के लिए एक प्रेरक है और प्रत्येक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक मार्ग है जिसे सिराते-मुस्तक़ीम (सद्मार्ग) कहते हैं। संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जो उन नियमों की पाबन्दी किए बिना प्राप्त हो सके जो प्रकृति ने अनादिकाल से उसके लिए निर्धारित कर रखे हैं। प्रकृति का नियम बता रहा है कि प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति के लिए एक सद्मार्ग है तथा उसकी प्राप्ति उस स्वाभाविक मार्ग पर चलकर ही हो सकती है। उदाहरणतया यदि हम एक अन्धकारमय कमरे में बैठे हों और सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता हो तो

हमारे लिए यह सद्मार्ग (सिराते मुस्तक़ीम) है कि हम उस खिड़की को खोल दें जो सूर्य की ओर है। तब सहसा सूर्य का प्रकाश अन्दर आकर हमें प्रकाशित कर देगा। अतः स्पष्ट है कि इसी प्रकार ख़ुदा के सच्चे और वास्तविक वरदान पाने के लिए भी कोई खिड़की होगी तथा पवित्र आध्यात्मिकता की प्राप्ति के लिए कोई विशेष उपाय होगा और वह यह है कि आध्यात्मिक बातों के लिए सद्मार्ग की खोज करें जैसा कि हम अपने जीवन की समस्त बातों में अपनी सफलताओं के लिए सद्मार्ग की खोज करते रहते हैं परन्तु क्या वह यह उपाय है कि हम केवल अपनी ही बुद्धि के बल पर और अपनी ही स्वयं निर्मित बातों से ख़ुदा के मिलन की खोज करें ? क्या मात्र हमारे अपने ही तर्क एवं अपनी ही दार्शनिकता से उसके वे द्वार हम पर खुल सकते हैं जिनका खुलना उसके शक्तिशाली हाथ पर निर्भर है। निश्चय समझो कि यह बिल्कुल उचित नहीं है। हम उस जीवित तथा सदैव स्थापित रहने वाले (ख़ुदा) को मात्र अपनी ही युक्तियों से कदापि नहीं पा सकते अपितु उस मार्ग में सद्मार्ग केवल यह है कि प्रथम हम अपना जीवन अपनी समस्त शक्तियों के साथ ख़ुदा तआला के मार्ग में समर्पित करके फिर ख़ुदा के मिलने के लिए दुआ में तत्पर रहें ताकि ख़ुदा को ख़ुदा के ही माध्यम से पाएं।

एक प्यारी दुआ

दुआओं में सर्वप्रिय दुआ जो हमें ख़ुदा से मांगने और उसके समक्ष अपनी आवश्यकताएं रखने का उचित समय एवं अवसर सिखाती है और स्वाभाविक आध्यात्मिक आवेग का नक़्शा हमारे सामने रखती है वह दुआ है जो दयालु ख़ुदा ने अपनी पवित्र पुस्तक क़ुर्आन करीम में अर्थात् सूरह फ़ातिहा में हमें सिखाई है और वह यह है -

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ○ [1]

समस्त पवित्र प्रशंसाएं जो हो सकती हैं उस ख़ुदा के लिए हैं जो

① सूरह अलफातिहः - 1-2

समस्त लोकों का स्त्रष्टा और प्रतिपालक है

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ ①

वही ख़ुदा जो हमारे कर्मों से पूर्व अपनी कृपा से साधन जुटाने वाला है और हमारे कर्मों के पश्चात् दया के साथ प्रतिफल देने वाला है।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ ②

वह ख़ुदा जो प्रतिफल (हिसाब-किताब) के दिवस का वही एक स्वामी है किसी अन्य को वह दिन नहीं सौंपा गया।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ ③

हे उक्त समस्त विशेषताओं के स्वामी ! हम तेरी ही उपासना करते हैं और हम प्रत्येक कार्य में तुझ से ही शक्ति चाहते हैं। यहां हम के शब्द से उपासना का इक़रार करना इस बात की ओर संकेत करता है कि हमारी समस्त शक्तियाँ तेरी उपासना में लगी हुई हैं और तेरी चौखट पर झुके हुए हैं क्योंकि मनुष्य अपनी आन्तरिक शक्तियों की दृष्टि से एक जमाअत तथा एक उम्मत है। इस प्रकार समस्त शक्तियों से (तन, मन, धन से) ख़ुदा को सज्दह करना यही वह अवस्था है जिसे इस्लाम कहते हैं।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ④

हमें अपने सीधे मार्ग पर चला और उस पर दृढ़ता प्रदान करके उन लोगों का मार्ग दिखा जिन पर तेरा इनाम है और तेरी कृपा के पात्र हो गए हैं।

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ ⑤

---

① सूरह अलफ़ातिहः - 3
② सूरह अलफ़ातिहः - 4
③ सूरह अलफ़ातिहः - 5
④ सूरह अलफ़ातिहः - 6-7
⑤ सूरह अलफ़ातिहः - 7

और हमें उन लोगों के मार्गों से बचा जिन पर तेरा प्रकोप है और जो तुझ तक नहीं पहुंच सके तथा मार्ग से भटक गए। तथास्तु। हे ख़ुदा ऐसा ही कर।

ये आयतें समझा रही हैं कि ख़ुदा तआला के इनाम जो दूसरे शब्दों में वरदान कहलाते हैं उन्हीं पर उतरते हैं जो ख़ुदा के मार्ग में अपने जीवन की क़ुरबानी देकर और अपना सम्पूर्ण अस्तित्व उसके मार्ग में समर्पित करके तथा उसकी प्रसन्नता में लीन होकर फिर इस कारण दुआ में लगे रहते हैं ताकि मनुष्य को जो कुछ आध्यात्मिक ने'मतों, उसके सानिध्य, मिलन तथा उसके वार्तालापों एवं सम्बोधनों में से मिल सकता है वह सब उनको मिले और इस दुआ के साथ अपनी समस्त शक्तियों से उपासनाएं करते हैं तथा पाप से बचते और ख़ुदा के द्वार पर पड़े रहते हैं। जहां तक उनके लिए संभव है स्वयं को बुराई से बचाते हैं तथा ख़ुदा के प्रकोप के मार्गों से दूर रहते है। चूंकि वे एक उच्च साहस और श्रद्धा के साथ ख़ुदा को ढूंढते हैं, इसलिए उसे पा लेते हैं, वे ख़ुदा की पवित्र पहचान के प्यालों से तृप्त किए जाते हैं। इस आयत में जो दृढ़ता का वर्णन किया यह इस बात की ओर संकेत है कि सच्चा और पूर्ण वरदान जो आध्यात्मिक जगत तक पहुंचाता है पूर्ण दृढ़ता से सम्बद्ध है तथा पूर्ण दृढ़ता से अभिप्राय श्रद्धा और निष्ठा की एक ऐसी अवस्था है जिसे कोई परीक्षा हानि न पहुंचा सके अर्थात् ऐसा संबंध हो जिसे न तलवार काट सके न अग्नि जला सके और न कोई दूसरी विपत्ति हानि पहुंचा सके। प्रियजनों की मौतें उससे पृथक न कर सकें, प्रियजनों का वियोग उसमें विघ्न न डाल सके, अपमान का भय कुछ रोब न डाल सके, भयावह दुखों से मारा जाना हृदय को लेशमात्र भी भयभीत न कर सके। अतः यह द्वार बहुत संकीर्ण है और यह मार्ग जहां से गुज़रना बहुत दुष्कर है। कठिनाइयों से भरा है कि खेद, सौ बार खेद !!

अल्लाह तआला इसी की ओर इन आयतों में संकेत करता है :-

قُلۡ اِنۡ کَانَ اٰبَآؤُکُمۡ وَاَبۡنَآؤُکُمۡ وَاِخۡوَانُکُمۡ وَاَزۡوَاجُکُمۡ وَ عَشِیۡرَتُکُمۡ وَ اَمۡوَالُ ۣاقۡتَرَفۡتُمُوۡهَا وَتِجَارَۃٌ تَخۡشَوۡنَ کَسَادَهَا وَ مَسٰکِنُ تَرۡضَوۡنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَیۡکُمۡ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَجِهَادٍ فِیۡ سَبِیۡلِهٖ فَتَرَبَّصُوۡا حَتّٰی یَاۡتِیَ اللّٰهُ بِاَمۡرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهۡدِی الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِیۡنَ ○ [1]

अर्थात् उन्हें कह दे कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारी बिरादरी और तुम्हारे वे धन जो तुम ने परिश्रम से कमाए हैं और तुम्हारा व्यापार जिसके बन्द होने का तुम्हें भय है तथा तुम्हारी हवेलियां जो तुम्हें प्रिय हैं ख़ुदा और उसके रसूल से तथा उसके मार्ग में अपने प्राण न्यौछावर करने से अधिक प्रिय हैं तो तुम उस समय की प्रतीक्षा करो जब तक कि ख़ुदा तआला आदेश जारी करे तथा ख़ुदा दुष्कर्मियों को कभी अपना मार्ग नहीं दिखाएगा।

इन आयतों से स्पष्ट होता है कि जो लोग ख़ुदा की प्रसन्नता को छोड़ कर अपने संबंधियों तथा धन से प्रेम करते हैं और ख़ुदा की दृष्टि में दुराचारी हैं वे अवश्य तबाह होंगे, क्योंकि उन्होंने ग़ैर को ख़ुदा पर प्राथमिकता दी। यह वह तीसरी श्रेणी है जिसमें वह व्यक्ति ख़ुदा वाला बनता है जो उसके लिए हज़ारों विपत्तियों में स्वयं को डाल दे और ख़ुदा की ओर ऐसी श्रद्धा और निष्कपटता से झुक जाए कि ख़ुदा के अतिरिक्त उसका कोई न रहे जैसे सब मर गए। अतः सत्य तो यह है कि जब तक हम स्वयं न मरें जीवित ख़ुदा दिखाई नहीं दे सकता। ख़ुदा

---

① सूरह अत्तौबः - 24

के प्रकट होने का वही दिन होता है कि जब हमारे भौतिक जीवन पर मृत्यु आ जाए। हम उस समय तक अंधे हैं जब तक ग़ैर को देखने से अंधे न हो जाएं। हम मुर्दा हैं जब तक ख़ुदा के हाथ में मुर्दे की तरह न हो जाएं। जब हमारा मुंह ठीक-ठीक उसके सामने पड़ेगा तब वह वास्तविक दृढ़ता जो समस्त कामभावनाओं का दमन करके उन पर विजयी होती है हमें प्राप्त नहीं होगी और यही वह दृढ़ता हे जिससे कामवासना के जीवन पर मृत्यु आ जाती है।

हमारी दृढ़ता यह है कि जैसा कि ख़ुदा का कथन है कि :-

بَلٰی ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ ①

अर्थात् यह कि क़ुरबानी (बलि) के समान मेरे आगे अपनी गर्दन रख दो। इसी प्रकार हम उस समय दृढ़ता की श्रेणी प्राप्त कर सकेंगे जब हमारे अस्तित्व के समस्त टुकड़े और हमारी मनोवृति की सम्पूर्ण शक्तियां इसी कार्य में तत्पर हो जाएं और हमारी मृत्यु और हमारा जीवन उसी के लिए हो जाए, जैसा कि उसका कथन है :-

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ ②

अर्थात् कह ! मेरी नमाज़, मेरा बलिदान, मेरा जीवन, मेरा मरण सब ख़ुदा के लिए है और जब मनुष्य का प्रेम ख़ुदा के प्रति इस सीमा तक पहुंच जाए कि उसका मरना और जीवित रहना अपने लिए नहीं अपितु ख़ुदा ही के लिए हो जाए। तब ख़ुदा जो हमेशा से प्रेम करने वालों के साथ प्रेम करता आया है उस पर अपने प्रेम को उतारता है और इन दोनों प्रेमों के संयोग से मनुष्य के अन्तःकरण में एक प्रकाश जन्म लेता है जिसे संसार नहीं पहचानता और न समझ सकता है और सदात्माओं और ख़ुदा के भेजे हुए पुरुषों का इसीलिए वध हुआ

① सूरह अलबक़रः - 113

② सूरह अलअन्आम - 163

कि संसार ने उनको नहीं पहचाना। वे इसीलिए धोखेबाज़ और स्वार्थी कहलाए कि संसार उन के प्रकाशमान चेहरे को देख न सका जैसा कि उसका कथन है :

يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝[1]

अर्थात् वे लोग जो इन्कारी हैं तेरी ओर देखते तो हैं परन्तु उन्हें दिखाई नहीं देता।

अत: जब वह प्रकाश पैदा होता है तो उस प्रकाश के जन्म लेने के दिन से एक सांसारिक व्यक्ति आध्यात्मिक पुरुष हो जाता है। वह जो प्रत्येक अस्तित्व का स्वामी है उसके अन्दर बोलता है और अपनी झलकियां दिखाता है तथा उसके हृदय को जो पवित्र प्रेम से ओत-प्रोत है अपनी राजधानी बनाता है और तभी से यह व्यक्ति एक अलौकिक परिवर्तन पा कर एक नया व्यक्ति हो जाता है। वह इसके लिए एक नया ख़ुदा हो जाता है और नए स्वभावों तथा नियम प्रकट करता है। यह नहीं कि वह एक नया ख़ुदा है या स्वभाव नवीन है, परन्तु वही ख़ुदा सामान्य स्वभावों से बिलकुल भिन्न होता है जिससे सांसारिक दर्शनशास्त्र सर्वथा अपरिचित है और यह व्यक्ति जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝[2]

अर्थात् मनुष्यों में से वे उच्च श्रेणी के मनुष्य हैं जो ख़ुदा की प्रसन्नता में लीन हो जाते हैं। वे अपने प्राण बेचते हैं और ख़ुदा की इच्छा को ख़रीदते हैं। यही वे लोग हैं जिन पर ख़ुदा की दया है। इसी

---

① सूरह अलआराफ़ - 199

② सूरह अलबक़र: - 208

प्रकार वह व्यक्ति जो आध्यात्मिक अवस्था की श्रेणी तक पहुंच गया है ख़ुदा के मार्ग में क़ुर्बान हो जाता है।

ख़ुदा तआला इस आयत में कहता है कि समस्त दुखों से वह व्यक्ति मुक्ति पाता है जो मेरे मार्ग में प्राण को बेच देता है और कठिन परिश्रम के साथ अपनी इस अवस्था का प्रमाण देता है कि वह ख़ुदा का है और अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को एक ऐसी वस्तु समझता है जो ख़ुदा की आज्ञाकारिता और सृष्टि की सेवा के लिए बनाई गई है और फिर वास्तविक शुभ कर्म जो प्रत्येक शक्ति से संबंधित हैं ऐसी रुचि तथा हार्दिक विनय से करता है कि जैसे वह अपने आज्ञाकारी होने के दर्पण में अपने वास्तविक प्रियतम को देख रहा है तथा उसका इरादा ख़ुदा तआला के इरादे के समरूप हो जाता है और समस्त आनन्द उसके आज्ञापालन में पाता है और समस्त शुभ कर्म कष्ट द्वारा नहीं अपितु आनंद और सुख के आकर्षण से प्रकट होने लगते हैं वह नक़द स्वर्ग है जो आध्यात्मिक मनुष्य को इसी जीवन में मिलता है और वह स्वर्ग जो मृत्योपरान्त मिलेगा, वह वास्तव में इसी का प्रतिबिम्ब और प्रतीक है जिसे परलोक में ख़ुदा की क़ुदरत साकार रूप धारण करके दिखाएगी। इसी की ओर संकेत करते हुए अल्लाह तआला कहता है :-

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ①

وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ②

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۚ

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ③

① सूरह अर्रहमान - 47

② सूरह अद्दहर - 22

③ सूरह अद्दहर - 6-7

وَ يُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۚ ○ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ○[1]

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَ اَغْلٰلًا وَّ سَعِيْرًا ○[2]

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَ اَضَلُّ سَبِيْلًا ○[3]

अर्थात् जो व्यक्ति ख़ुदा तआला से भयभीत है और उसकी श्रेष्ठता और प्रताप के पद से डरा हुआ है उसके लिए दो स्वर्ग हैं। एक यह लोक और दूसरा परलोक। ऐसे लोग जो ख़ुदा में लीन हैं ख़ुदा ने उन्हें वह शरबत पिलाया है जिसने उनके हृदय और विचारों तथा श्रद्धा को पवित्र कर दिया। नेक बन्दे वह शरबत पी रहे हैं जिसमें कपूर की मिलावट है और वे उस झरने से पीते है जिसे वे स्वयं ही चीरते हैं।

काफ़ूरी (कपूर) और ज़ंजबीली (सोंठ) शरबत की वास्तविकता

मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूं कि काफ़ूर (कपूर) का शब्द इस आयत में इसलिए लिया गया है कि अरबी शब्दकोश में "कफ़र" दबाने और ढकने को कहते हैं। अतः यह इस बात की ओर संकेत है कि उन्होंने ऐसी निष्कपटता से सब को त्याग कर तथा ख़ुदा की ओर प्रवृत्त होने का मधुर रसपान किया है कि सांसारिक प्रेमाग्नि बिल्कुल ठण्डी पड़ गई है। यह नियम की बात है कि समस्त आवेग हृदय की

① सूरह अद्दहर - 18-19
② सूरह अद्दहर - 5
③ सूरह बनी इस्राईल - 73

भावनाओं से ही जन्म लेते हैं और जब हृदय दूषित विचारों से बहुत ही दूर चला जाए और उन से कुछ संबंध भी शेष न रहें तो वे आवेग भी शनैः शनैः कम होने लगते हैं यहां तक कि मिट जाते हैं। अतः यहां ख़ुदा तआला का उद्देश्य यही है और वह इस आयत में यही समझाता है कि उसकी ओर पूर्णरूप से झुक गए वे कामभावनाओं से बहुत ही दूर निकल गए तथा ख़ुदा की ओर ऐसे झुक गए कि संसारिक दौड़-धूप से उनके हृदय ठण्डे हो गए और उनके आवेग इस प्रकार दब गए जैसे कि कपूर विषैले तत्वों को दबा देता है।

फिर फ़रमाया कि वे लोग उस कपूरी प्याले के पश्चात् वे प्याले पीते हैं जिन में सोंठ की मिलौनी है। अतः ज्ञात होना चाहिए कि ज़ंजबील (सोंठ) दो शब्दों से मिश्रित है। अर्थात् ज़ना और जबल से। ज़ना अरबी शब्दकोश में ऊपर चढ़ने को कहते हैं और जबल पर्वत को। इसके मिश्रित अर्थ ये हैं कि पर्वत पर चढ़ गया। अतः ज्ञात होना चाहिए कि एक विषैले रोग के दूर होने के पश्चात पूर्ण रूप से स्वस्थ होने तक दो अवस्थाएं आती हैं।

एक वह अवस्था जबकि विषैले तत्त्व (पीप) की तीव्रता सर्वथा जाती रहती है और भयानक तत्त्वों का जोश सुधार की ओर जाने लगता है और कई अवस्थाओं का अनुमान भली भांति गुज़र जाता है और एक विनाशकारी तूफान जो उठा था नीचे दब जाता है परन्तु अभी तक अंगों में कमज़ोरी शेष होती है, कोई शक्ति का कार्य नहीं हो सकता। अभी मुर्दों के समान गिरता-पड़ता चलता है और दूसरी वह अवस्था है कि जब वास्तविक स्वास्थ्य अपनी पूर्व अवस्था में वापस आता और शरीर में शक्ति आ जाती है तथा शक्ति के यथावत् होने से यह उत्साह पैदा हो जाता है कि निःसंकोच पर्वत के ऊपर चढ़ जाए तथा हार्दिक प्रसन्नता से ऊंची घाटियों पर दौड़ता चला जाए। अतः साधन की तीसरी श्रेणी में इस अवस्था के दर्शन होते है। ऐसी अवस्था के

विषय में अल्लाह तआला कथित आयत में संकेत करता है कि नितान्त श्रेणी के ख़ुदा वाले लोग वे प्याले पीते हैं जिनमें ज़ंजबील (सोंठ) मिली हुई है अर्थात् वह आध्यात्मिक अवस्था की पूर्ण शक्ति प्राप्त करके बड़ी-बड़ी घाटियों पर चढ़ जाते हैं और उनके द्वारा बड़े कठिन कार्य सम्पन्न होते हैं और ख़ुदा तआला के मार्ग में आश्चर्यजनक तत्परता प्रदर्शित करते हैं।

ज़ंजबील (सोंठ) का प्रभाव

यहां यह भी स्पष्ट रहे कि चिकित्सा-शास्त्र के अनुसार सोंठ वह औषधि है जो शरीर की आन्तरिक गर्मी को बहुत शक्ति देती है तथा दस्तों को रोकती है और उसका नाम ज़ंजबील इसीलिए रखा गया है कि जैसे वह निर्बल को ऐसा शक्तिशाली बनाती है तथा ऐसी गर्मी पहुंचाती है जिससे वह पर्वतों पर चढ़ सके। इन आमने-सामने की आयतों को प्रस्तुत करने से जिन में एक स्थान पर कपूर का वर्णन है और एक स्थान पर ज़ंजबील (सोंठ) का। ख़ुदा तआला का यह उद्देश्य है कि अपने बन्दों को समझाए कि जब मनुष्य कामभावनाओं से विमुख होकर नेकी की ओर अग्रसर होता है तो सर्वप्रथम उस अग्रसर होने के पश्चात् यह अवस्था पैदा होती है कि उसके विषैले तत्त्व नीचे दबाए जाते हैं तथा कामभावनाएं कम होने लगती हैं, जैसा कि कपूर विषैले तत्त्वों को दबा लेता है। इसीलिए वह हैज़ा और टायफाइड में लाभप्रद है। फिर जब विषैले तत्त्वों का वेग बिल्कुल जाता रहे और एक कमज़ोर स्वास्थ्य जो दुर्बलता के साथ जुड़ा होता है प्राप्त हो जाए तो फिर दूसरा कठिन कार्य यह है कि दुर्बल रोगी सोंठ के शरबत से शक्ति पाता है तथा सोंठ का शरबत ख़ुदा तआला की सुन्दरता एवं सौन्दर्य की एक झलक है जो आत्मा का भोजन है। जब इस झलक से मनुष्य शक्ति ग्रहण करता है तो फिर बुलन्द और ऊंची घाटियों पर चढ़ने के योग्य हो जाता है तथा ख़ुदा तआला के मार्ग में ऐसे आश्चर्यजनक

कठिन कार्य प्रदर्शित करता है कि जब तक यह प्रेमाग्नि किसी के हृदय में उत्पन्न न हो ऐसे कार्य कदापि प्रदर्शित नहीं कर सकता। अतः ख़ुदा तआला ने यहां इन दोनों अवस्थाओं को समझाने के लिए अरबी भाषा के दो शब्दों से काम लिया है। एक काफ़ूर (कपूर) से जो नीचे दबाने वाले को कहते हैं और दूसरे ज़ंजबील (सोंठ) से जो ऊपर चढ़ने वाले को कहते हैं अतः इस मार्ग में भी साधकों के लिए दो अवस्थाएं हैं।

उपरोक्त आयत का शेष भाग यह है -

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ○[1]

अर्थात् हमने इन्कार करने वालों के लिए जो सच्चाई को स्वीकार करना नहीं चाहते ज़ंजीरें तैयार कर दी हैं और गर्दन के तौक़ और एक भड़कती अग्नि की लपटें। इस आयत का तात्पर्य यह है कि जो लोग सच्चे हृदय से ख़ुदा तआला को नहीं ढूंढते उन पर ख़ुदा की ओर से मार पड़ती है वे संसार की विपत्तियों में ऐसे ग्रस्त रहते हैं कि जैसे पैरों में ज़ंजीरें पड़ी हुई हैं और सांसारिक कार्यों में ऐसे सर झुकाए होते हैं कि जैसे उनकी गर्दन में एक तौक़ है जो उन्हें आकाश की ओर सर नहीं उठाने देता और उनके हृदयों में लोभ और मोह की एक ज्वाला लगी रहती है कि यह धन प्राप्त हो जाए तथा यह सम्पत्ति मिल जाए और अमुक देश हमारे अधिकार में आ जाए और हम अमुक शत्रु पर विजय पाएं। इतना रुपया हो, इतना धन हो। चूंकि ख़ुदा तआला इनको अयोग्य देखता है तथा दुष्कर्मों में व्यस्त पाता है। इसलिए ये तीनों विपत्तियां उनको लगा देता है। यहां इस बात की ओर भी संकेत है कि जब मनुष्य से कोई क्रिया पूर्ण होती है तो उसी के अनुसार ख़ुदा तआला भी अपनी ओर से एक क्रिया करता है। उदाहरणतया मनुष्य जिस समय अपनी कोठरी के समस्त द्वारों को बन्द कर दे तो

[1] सूरह अद्दहर - 5

मनुष्य की ओर से इस क्रिया के पश्चात् ख़ुदा तआला की ओर से यह प्रतिक्रिया होगी कि वह उस कोठरी में अंधकार पैदा कर देगा क्योंकि जो बातें ख़ुदा तआला के प्रकृति के नियम में हमारे कार्यों के लिए एक अनिवार्य परिणाम के तौर पर निश्चित हो चुकी हैं वे सब ख़ुदा तआला के कार्य हैं। कारण यह कि वही सब कारणों का कारण है। इसी प्रकार यदि उदाहरणतया कोई व्यक्ति घातक विष खा ले तो उस की इस क्रिया के पश्चात् ख़ुदा तआला का यह कार्य होगा कि उसे मृत्यु दे देगा। इसी प्रकार यदि कोई ऐसा अनुचित कार्य करे जो किसी असाध्य रोग का कारण हो तो उसकी इस क्रिया के पश्चात् ख़ुदा तआला का यह कार्य होगा कि वह असाध्य रोग उसको पकड़ लेगा। अतः जिस प्रकार हमारे सांसारिक जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है कि हमारी प्रत्येक क्रिया के लिए एक आवश्यक परिणाम है और वह परिणाम ख़ुदा तआला का कार्य है। इसी प्रकार धर्म के संबंध में भी यही नियम है जैसा कि ख़ुदा तआला का इन दो उदाहरणों में स्पष्ट तौर पर कथन है -

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ط ①

فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ط ②

अर्थात् जिन लोगों ने यह कार्य किया कि उन्होंने ख़ुदा तआला की जिज्ञासा में पूरा-पूरा प्रयत्न किया तो इस कार्य के लिए अनिवार्य तौर पर हमारी यह प्रतिक्रिया होगी कि हम उन्हें अपना मार्ग दिखा देंगे तथा जिन लोगों ने टेढ़ापन अपनाया और सद्मार्ग पर चलना न चाहा तो इसके विषय में हमारा कार्य यह होगा कि हम उनके हृदयों को टेढ़ा कर देंगे। फिर इस अवस्था को और अधिक स्पष्ट करने के लिए बताया गया -

① सूरह अन्कबूत - 70

② सूरह अस्सफ़ - 6

مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ○[1]

अर्थात् जो व्यक्ति इस संसार में अन्धा रहा वह आने वाले संसार में भी अन्धा ही होगा अपितु अंधों से भी अधिक निकृष्ट। यह इस बात की ओर संकेत है कि नेक लोगों को ख़ुदा के दर्शन इसी संसार में हो जाते हैं और वह इसी संसार में अपने उस प्रियतम का दर्शन प्राप्त कर लेते हैं जिसके लिए वे सब कुछ खो देते हैं। अतः इस आयत का भावार्थ यही है कि स्वर्ग के जीवन की नींव इसी संसार में पड़ती है और नारकीय अंधेपन की जड़ भी इसी संसार का अपवित्र और अंधकारमय जीवन है और पुनः कहा -

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ط[2]

अर्थात् जो लोग ईमान लाते और शुभ कर्म करते हैं उन बाग़ों के वारिस हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। इस आयत में ख़ुदा तआला ने ईमान को बाग़ के साथ उपमा दी है जिसके नीचे नहरें बहती हैं।

अतः स्पष्ट रहे कि इस स्थान पर एक उच्च श्रेणी की फ़िलास्फ़ी के रूप में बताया गया है कि जो संबंध नहरों का बाग़ के साथ है वही संबंध कर्मों का ईमान के साथ है। अतः जैसा कि कोई बाग़ बिना पानी के हरा भरा नहीं रह सकता। ऐसा ही कोई ईमान बिना शुभ कर्मों के जीवित ईमान नहीं कहला सकता। यदि ईमान हो और कर्म न हों तो वह ईमान तुच्छ है और यदि कर्म हों और ईमान न हो तो वे कर्म

---

[1] सूरह बनी इस्राईल - 73

[2] सूरह अलबक़र: - 26

आडम्बर हैं। इस्लामी स्वर्ग की यही वास्तविकता है कि वह इस संसार के ईमान और कर्म का एक प्रतिबिम्ब है, वह कोई नई वस्तु नहीं जो बाहर से आकर मनुष्य को मिलेगी अपितु मनुष्य का स्वर्ग मनुष्य के अन्दर ही से निकलता है और प्रत्येक का स्वर्ग उसी का ईमान और उसी के शुभ कर्म हैं, जिनका आनन्द इसी संसार में आरंभ हो जाता है और गुप्त तौर पर ईमान और कर्मों के बाग़ दिखाई देते हैं और नहरें भी दिखाई देती हैं परन्तु परलोक में यही बाग़ खुले तौर पर महसूस होंगे। ख़ुदा तआला की पवित्र शिक्षा हमें यही बताती है कि सच्चा, पवित्र, सुदृढ़ तथा पूर्ण ईमान जो ख़ुदा और उसकी विशेषताओं और उसकी इच्छाओं के संबंध में हो। वह सुन्दर स्वर्ग और फल वाला वृक्ष है और शुभ कर्म उस स्वर्ग की नहरें हैं जैसा कि उसका कथन है :-

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۙ تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ ①

अर्थात् वह ईमानी वाक्य (कलिमा) जो प्रत्येक न्यूनाधिकता, दोष, विकार, झूठ और अश्लीलता से पवित्र और प्रत्येक प्रकार से पूर्ण हो उस वृक्ष के समान है जो प्रत्येक दोष से पवित्र हो, जिसकी जड़ पृथ्वी में स्थापित और शाखाएं आकाश में हों और सदैव अपने फल देता हो और उस पर ऐसा समय कभी नहीं आता कि उसकी शाखाओं में फल न हों। इस वर्णन में ख़ुदा तआला ने ईमानी कलिमा को हमेशा फलदार वृक्ष से उपमा देकर उसके तीन लक्षण वर्णन किए :-

(1) **प्रथम** यह कि उसकी जड़ जो मूल भावार्थ से अभिप्राय है मनुष्य की हृदय रूपी पृथ्वी में सुदृढ़ हो अर्थात् मानव-प्रकृति और मानव अन्तरात्मा ने उसकी सच्चाई और वास्तविकता को स्वीकार कर लिया हो।

---

① सूरह इब्राहीम - 25-26

(2) **दूसरा लक्षण** यह है कि उस "कलिमा" की शाखाएं आकाश में हों अर्थात् अपने साथ औचित्य रखता हो और आकाशीय प्रकृति का नियम जो ख़ुदा का कर्म है उसके अनुसार हो। तात्पर्य यह है कि उसके औचित्य और वास्तविकता के तर्क प्रकृति के नियम से निकल सकते हैं तथा वे तर्क ऐसे उच्च हों कि जैसे आकाश में हैं जिन तक आरोप का हाथ नहीं पहुंच सकता।

(3) **तीसरा लक्षण** यह है कि वह फल जो खाने योग्य है अनश्वर और समाप्त होने वाला न हो अर्थात् क्रियात्मक अभ्यास के पश्चात् उसकी बरकतें तथा प्रभाव हमेशा और हर युग में प्रकट होते रहें और संसार उसका अनुभव करता रहे, यह नहीं कि किसी विशेष युग तक प्रकट होकर फिर आगे बन्द हो जाएं।

पुनः कहा :-

مَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ○[1]

अर्थात् अपवित्र कलिमा उस वृक्ष के समान है जो पृथ्वी में से उखड़ा हुआ हो अर्थात् मानव-स्वभाव उसे स्वीकार नहीं करता और वह किसी प्रकार से स्थापित नहीं होता न बौद्धिक तर्कों द्वारा और न कुछ प्रकृति के नियम की दृष्टि से और न अन्तरात्मा की दृष्टि से। केवल क़िस्सा और कहानी के रूप में होता है और जैसा कि क़ुर्आन करीम ने परलोक में ईमान के पवित्र वृक्षों को अंगूर, अनार और उत्तम-उत्तम मेवों से उपमा दी है और वर्णन किया है कि उस दिन वह साक्षात् उन मेवों के रूप में होंगे और दिखाई देंगे। इसी प्रकार बेईमानी के बुरे वृक्ष का नाम परलोक में ज़क़्क़ूम (थूहर) रखा। जैसा कि उसका कथन है :-

① सूरह इब्राहीम - 27

اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْۤ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ۝①

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ۝ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ .... ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ۝②

अर्थात् तुम बताओ कि स्वर्ग के बाग़ अच्छे हैं या ज़क़्क़ूम (थूहर) का वृक्ष जो अत्याचारियों के लिए एक विपत्ति है। वह एक वृक्ष है जो नर्क की जड़ से निकलता है अर्थात् अभिमान और अहंकार से जन्म लेता है। यही नर्क की जड़ है इसका गुच्छा ऐसा है जैसा कि शैतान का सर। शैतान के अर्थ हैं तबाह होने वाला। यह शब्द "शैत" से निकला है। सारांश यह है कि उसका खाना मृत्यु को प्राप्त होना है। पुनः कहा कि थूहर का वृक्ष उन नारकियों का भोजन है जो सोच समझ कर पाप करते हैं। वह भोजन ऐसा है जैसा कि गला हुआ तांबा खोलते हुए पानी के समान पेट में जोश मारने वाला। फिर नारकी को सम्बोधित करके कहता है कि इस वृक्ष को चख। तू सम्मान वाला और बुज़ुर्ग है। यह कलिमा अत्यन्त आक्रोश का है, इसका सारांश यह है कि यदि तू अभिमान न करता तथा अपनी बुज़ुर्गी और सम्मान का ध्यान रखकर सत्य से मुख न फेरता तो आज ये कड़वाहटें तुझे न उठानी पड़तीं। यह आयत इस बात की ओर भी संकेत करती है

---

① सूरह अस्साफ़ात - 63-66

② सूरह अद्दुख़ान - 44-47,50

कि वास्तव में यह शब्द ज़क़्क़ूम का ‘ज़ुक़’ और ‘अम’ से बना है और ‘अम’

اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ۝ ①

का संक्षिप्त रूप है जिस में एक अक्षर आरंभ का और एक अक्षर अन्त का मौजूद है तथा प्रयोग की अधिकता के कारण ज़ाल को ‘ज़’ के साथ बदल दिया है। अतः वर्णन का सारांश यह है कि जैसा कि अल्लाह तआला ने इसी संसार के ईमानी वाक्यों की स्वर्ग के साथ उपमा दी है इसी प्रकार इस संसार के बेईमानी के वाक्य को थूहर के साथ उपमा दी और उसको नर्क का वृक्ष ठहराया तथा स्पष्ट कर दिया कि स्वर्ग और नर्क की जड़ इसी संसार से आरंभ होती है जैसा कि नर्क के अध्याय में एक अन्य स्थान पर कहा है :-

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝ ②

अर्थात् नरक वह अग्नि है कि ख़ुदा का प्रकोप उसका स्रोत है और पाप से भड़कती है। पहले हृदय पर विजय प्राप्त करती है। यह इस बात की ओर संकेत है कि उस अग्नि की वास्तविक जड़ वे शोक और उत्कंठाएं और पीड़ाएं हैं जो हृदय को पकड़ती हैं क्योंकि समस्त आध्यात्मिक अज़ाब सर्वप्रथम हृदय से ही आरंभ होते हैं और फिर समस्त शरीर पर छा जाते हैं। फिर एक स्थान पर पुनः कहा -

وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ③

अर्थात् नर्क की अग्नि का ईंधन जिस से वह अग्नि हमेशा भड़कती रहती है। दो वस्तुएं हैं एक वह मनुष्य जो सच्चे ख़ुदा को

---

① सूरह अद्दुख़ान - 50

② सूरह अलहुमज़: - 7-8

② सूरह अलबक़र: - 25

छोड़ कर अन्य-अन्य वस्तुओं की उपासना करते हैं या उनकी इच्छा से उनकी उपासना की जाती है। जैसा कि कहा -

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ[1]

अर्थात् तुम और तुम्हारे झूठे उपास्य, जो मनुष्य होकर ख़ुदा कहलाते रहे, नर्क में डाले जाएंगे।

(2) नर्क का दूसरा ईंधन मूर्तियां हैं। तात्पर्य यह है कि उन वस्तुओं का अस्तित्व न होता तो नर्क भी न होता। अतः इन समस्त आयतों से स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम में स्वर्ग और नर्क इस भौतिक संसार के समान नहीं है अपितु इन दोनों का स्रोत और उद्‌गम आध्यात्मिक बातें हैं। हां वे वस्तुएं परलोक में स्थूल रूप में दिखाई देंगी परन्तु इस भौतिक संसार में नहीं होंगी।

अल्लाह तआला से पूर्ण आध्यात्मिक संबंध पैदा करने का माध्यम

अब हम पुनः अपने पूर्व विषय की ओर लौटते हुए कहते हैं कि ख़ुदा के साथ आध्यात्मिक तथा पूर्ण संबंध पैदा होने का साधन जो हमें क़ुर्आन करीम ने सिखाया है इस्लाम और फ़ातिहा की दुआ है, अर्थात् प्रथम अपना सम्पूर्ण जीवन ख़ुदा के मार्ग में समर्पित कर देना तथा फिर उस दुआ में लगे रहना जो मुसलमानों को सूरह फ़ातिहा में सिखाई गई है। सम्पूर्ण इस्लाम का सार ये दोनों वस्तुएं हैं। इस्लाम और फ़ातिहा की दुआ, संसार में ख़ुदा तक पहुंचने और वास्तविक मोक्ष का जल पीने के लिए यही एक उत्तम साधन है अपितु यही एकमात्र साधन है जो प्रकृति के नियम ने मनुष्य की उच्चतम उन्नति और ख़ुदा से मिलने के लिए निश्चित किया है और ख़ुदा को वही पाते हैं जो स्वयं को इस्लाम के बोध की आध्यात्मिक अग्नि में डालते हैं और

[1] सूरह अलअंबिया - 99

फ़ातिहा की दुआ में लीन रहते हैं।

इस्लाम क्या वस्तु है ? वही जलती हुई अग्नि जो हमारे निकृष्ट जीवन को भस्म करके और हमारे झूठे उपास्यों को जला कर सच्चे एवं पवित्र उपास्य ख़ुदा के आगे हमारे प्राण, हमारे धन तथा हमारी प्रतिष्ठा की क़ुर्बानी प्रस्तुत करती है। ऐसे झरने में प्रवेश करके हम एक नए जीवन का जल पीते हैं और हमारी समस्त आध्यात्मिक शक्तियां ख़ुदा से इस प्रकार जुड़ जाती हैं जैसे कि एक संबंध को दूसरे संबंध से जोड़ दिया जाता है। बिजली की अग्नि के समान एक अग्नि हमारे अन्दर से निकलती है और एक अग्नि हम पर ऊपर से उतरती है। इन दोनों ज्वालाओं के मिलने से हमारे समस्त लोभ-लालच और अल्लाह के अतिरिक्त का प्रेम भस्म हो जाता है और हम अपने पहले जीवन से मर जाते हैं। इस अवस्था का नाम पवित्र क़ुर्आन की दृष्टि से **इस्लाम** है। इस्लाम से हमारी कामभावनाओं को मृत्यु आती है और फिर दुआ से हम नए सिरे से जीवित होते हैं इस दूसरे जीवन के लिए ख़ुदा के इल्हाम की आवश्यकता है। इसी श्रेणी पर पहुंचने का नाम 'लिक़ा-ए-इलाही' है। अर्थात् ख़ुदा से मिलन तथा उसके दर्शन और उसे देखना है। इस श्रेणी पर पहुंचकर मनुष्य का ख़ुदा से ऐसा मिलाप होता है कि जैसे वह उसकी आंख से देखता है और उसे शक्ति दी जाती है और उसकी समस्त ज्ञानेन्द्रियां और समस्त आन्तरिक शक्तियां प्रकाशित की जाती हैं तथा पवित्र जीवन का आकर्षण बड़े ज़ोर से आरंभ हो जाता है। इसी अवस्था पर आकर ख़ुदा मनुष्य के नेत्र बन जाता है जिसके साथ वह देखता है, जीभ हो जाता है जिसके साथ वह बोलता है और हाथ हो जाता है जिसके साथ वह आक्रमण करता है और कान हो जाता है जिसके साथ वह सुनता है और पैर हो जाता है जिसके साथ वह चलता है। इसी अवस्था की ओर अल्लाह तआला के इस कथन में संकेत है :-

يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ[1]

यह उसका हाथ ख़ुदा तआला का हाथ है जो उनके हाथों पर है और इसी प्रकार ख़ुदा तआला का कथन है -

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ[2]

अर्थात् जो तू ने चलाया तू ने नहीं अपितु ख़ुदा ने चलाया। अतः इस अवस्था पर ख़ुदा तआला के साथ प्रगाढ़ एकता हो जाती है और ख़ुदा तआला की पवित्र इच्छा आत्मा के कण-कण में समा जाती है और वे नैतिक शक्तियां जो कमज़ोर थीं इस श्रेणी में सुदृढ़ पर्वतों के समान अटल दिखाई देती हैं। बुद्धि और विवेक नितान्त कोमलता पर आ जाते हैं। ये अर्थ उस आयत के हैं जैसा कि अल्लाह तआला का कहना है -

وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ[3]

इस अवस्था में प्रेम और अनुराग की नहरें इस प्रकार से जोश मारती हैं कि ख़ुदा तआला के लिए मरना और ख़ुदा तआला के लिए हज़ारों दुःख उठाना तथा अपमानित होना ऐसा सरल हो जाता है कि जैसे एक हल्का सा तिनका तोड़ना है ऐसा व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर खिंचा चला जाता है और वह नहीं जानता कि कौन खींच रहा है। एक परोक्ष का हाथ उसे उठाए फिरता है तथा अल्लाह तआला की इच्छाओं को पूर्ण करना उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य हो जाता है। इस अवस्था में ख़ुदा तआला बहुत ही निकट दिखाई देता है। जैसा कि उसने कहा है -

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ[4]

---

① सूरह अलफ़तह - 11
② सूरह अलअन्फ़ाल - 18
③ सूरह अलमुजादलः - 23
④ सूरह क़ाफ़ - 17

अर्थात् हम उस से उसकी प्राणधमनी से अधिक निकट हैं। ऐसी अवस्था में इस श्रेणी का व्यक्ति ऐसा होता है कि जिस प्रकार फल परिपक्व होकर स्वयं वृक्ष से गिर जाता है। इसी प्रकार इस श्रेणी के व्यक्ति के समस्त निकृष्ट संबंध समाप्त हो जाते हैं। उसका अपने ख़ुदा से ऐसा घनिष्ठ संबंध हो जाता है और वह संसार से दूर चला जाता है और ख़ुदा तआला के वार्तालापों एवं सम्बोधनों से सम्मान पाता है। इस श्रेणी की प्राप्ति के लिए अब भी द्वार खुले हैं जैसे कि पहले खुले हुए थे और अब भी ख़ुदा तआला की विशेष कृपा जिज्ञासुओं को यह ने'मत प्रदान करता है जैसा कि पहले प्रदान करता था, परन्तु यह श्रेणी मात्र मौखिक निरर्थक बातों के साथ प्राप्त नहीं होती और न ही अनर्गल बातों तथा डींगों से यह द्वार खुलता है। चाहने वाले बहुत हैं परन्तु पाने वाले कम। इस का क्या कारण है ? यही कि यह श्रेणी सच्चे परिश्रम, सच्ची तत्परता पर निर्भर है। बातें प्रलय तक किया करो, इससे क्या हो सकता है। सच्चाई से उस अग्नि पर कदम रखना जिसके भय से अन्य लोग भागते हैं। इस मार्ग की पहली शर्त है यदि क्रियात्मक परिश्रम नहीं तो डींगें मारना व्यर्थ है। इस बारे में अल्लाह तआला का कथन है :-

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ○[1]

अर्थात् यदि मेरे बन्दे मेरे संबंध में प्रश्न करें कि वह कहां है तो उन्हें कह कि वह तुम से बहुत ही निकट है (ख़ुदा का कथन है कि) मैं दुआ करने वाले की दुआ सुनता हूं। अतः चाहिए कि वह दुआओं से मेरे मिलाप को खोजें और मुझ पर अटल विश्वास रखें ताकि सफल हों।

① सूरह अलबक़रः - 187

द्वितीय प्रश्न

मृत्योपरान्त मनुष्य की क्या दशा होती है ?

अतः इस प्रश्न के उत्तर में यह निवेदन है कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य की जो भी दशा होती है वास्तव में वह कोई नई दशा नहीं होती वरन् वही सांसारिक जीवन की दशाएं अधिक स्पष्टता से व्यक्त हो जाती हैं। मनुष्य की जो कुछ आस्थाओं तथा कर्मों की स्थिति शुभ या अशुभ होती है वह इस संसार में गुप्त तौर पर उसके अन्दर होती है तथा उसका विषनाशक या विष मानव अस्तित्व पर एक गुप्त प्रभाव डालता है परन्तु आने वाले संसार (परलोक) में ऐसा नहीं रहेगा अपितु वे समस्त परिस्थितियां खुले तौर पर अपना चेहरा दिखाएंगी। इस का नमूना स्वप्नावस्था के संसार में पाया जाता है कि मनुष्य के शरीर पर जिस प्रकार के तत्त्व छाए होते हैं स्वप्न में उसी प्रकार की शारीरिक परिस्थितियां दृष्टिगोचर होती हैं जब कोई तीव्र ज्वर चढ़ने को होता है तो स्वप्न में बहुधा अग्नि और अग्नि की ज्वाला दिखाई देती है तथा इसी प्रकार श्लेष्मा संबंधी ज्वरों तथा नज़्ले के स्राव और ज़ुकाम की अधिकता में मनुष्य स्वयं को जल में देखता है।

अतः जिस प्रकार के रोगों के लिए शरीर ने तैयारी की हो वही परिस्थितियां साक्षात् तौर पर स्वप्न में दृष्टिगोचर हो जाती हैं। अतः स्वप्न के सिलसिले पर विचार करने से प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है कि परलोक में भी ख़ुदा का यही नियम है क्योंकि जिस प्रकार स्वप्न हम में एक विशेष परिवर्तन पैदा करके आध्यात्मिकता को भौतिक रूप में परिवर्तित करके दिखाता है उस लोक में भी ऐसा ही होगा और उस

दिन हमारे कर्म और कर्मों के परिणाम भौतिक रूप में प्रकट होंगे तथा हम जो कुछ इस संसार से गुप्त तौर पर साथ ले जाएंगे वह सब उस दिन हमारे चेहरे पर दिखाई देगा और जैसा कि मनुष्य जो कुछ स्वप्न में भांति-भांति के साक्षात् रूप देखता है वह कभी नहीं सोचता कि ये अवास्तविक रूप हैं अपितु उन्हें वास्तविक वस्तुएं समझता है। इसी प्रकार उस लोक में होगा अपितु ख़ुदा तआला इन साक्षात् रूपों के द्वारा अपनी नवीन शक्ति प्रदर्शित करेगा। चूंकि वह सर्वांगपूर्ण शक्ति है। अतः यदि हम साक्षात् रूपों का नाम भी न लें और यह कहें कि वह ख़ुदा की शक्ति से एक नवीन उत्पत्ति है तो यह कहना सर्वथा उचित, वास्तविक और तर्कसंगत है। ख़ुदा तआला का कथन है :-

فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٌ مَّاۤ اُخۡفِیَ لَهُمۡ مِّنۡ قُرَّةِ اَعۡیُنٍ ۚ[1]

अर्थात् कोई भी नेकी करने वाला मनुष्य नहीं जानता कि वे क्या-क्या ने'मतें हैं जो उसके लिए गुप्त हैं। अतः ख़ुदा तआला ने उन समस्त ने'मतों को गुप्त ठहराया जिन का इस लोक की ने'मतों में कोई नमूना नहीं। यह तो स्पष्ट है कि संसार की ने'मतें हम पर गुप्त नहीं तथा दूध, अनार और अंगूर आदि को हम जानते हैं और हमेशा ये वस्तुएं खाते हैं। अतः इस से विदित हुआ कि वे वस्तुएं भिन्न हैं और उन वस्तुओं की इन वस्तुओं से केवल नाम की समानता है। अतः जिसने स्वर्ग को सांसारिक वस्तुओं का संग्रह समझा उसने पवित्र क़ुर्आन का एक अक्षर भी नहीं समझा।

इस आयत की व्याख्या में जिसका अभी मैंने वर्णन किया है हमारे परमप्रिय अवतार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] का कथन है कि स्वर्ग और उसकी ने'मतें वे वस्तुएं हैं जो न कभी किसी आंख ने देखीं और न किसी कान ने सुनीं और न हृदयों में कभी गुज़रीं। हालांकि हम संसार की

---

[1] सूरह अस्सज्दः - 18

ने'मतों को आंखों से भी देखते हैं और कानों से भी सुनते हैं और हृदय में उनका आभास भी होता है। अतः जबकि ख़ुदा तआला और उसका रसूल उन वस्तुओं को सर्वथा अनोखी वस्तुएं बताता है तो हम उस समय क़ुर्आन से दूर जा पड़ते हैं। यदि यह विचार करते हैं कि स्वर्ग में भी संसार का ही दूध होगा जो गायों और भैंसों से दोहन किया जाता है जैसे दूध देने वाले जानवरों के वहां रेवड़ के रेवड़ मौजूद होंगे और वृक्षों पर मधुमक्खियों ने बहुत से छत्ते लगाए हुए होंगे और फ़रिश्ते खोज करके वह शहद निकालेंगे और नहरों में डालेंगे। क्या ऐसे विचार उस शिक्षा से कुछ अनुकूलता रखते हैं जो इन आयतों में मौजूद है कि संसार ने उन वस्तुओं को कभी नहीं देखा और वे वस्तुएं आत्मा को प्रकाशित करती हैं और ख़ुदा को पहचानने के ज्ञान को बढ़ाती हैं जो आध्यात्मिक भोजन है, यद्यपि उन भोजनों की सम्पूर्ण रूप रेखा भौतिक रूप पर प्रकट की गई है परन्तु साथ ही साथ यह भी बताया गया है कि उनका उद्‌गम आत्मा और ईमानदारी है। कोई यह न समझे कि पवित्र क़ुर्आन की निम्नलिखित आयत में यह पाया जाता है कि स्वर्ग में जो-जो ने'मतें दी जाएंगी उन ने'मतों को देखकर स्वर्ग में रहने वाले लोग उन्हें पहचान लेंगे कि यही ने'मतें हमें पहले भी मिली थीं, जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ[1]

अर्थात् जो लोग ईमान लाने वाले तथा शुभ कर्म करने वाले हैं जिनमें तनिक भी ख़राबी नहीं उनको शुभ सन्देश दे कि वे इस स्वर्ग के वारिस हैं जिसके नीचे नहरें बहती हैं जब वे परलोक में उन अलौकिक वृक्षों के

[1] सूरह अलबक़रः - 26

उन फलों में से जो इस भौतिक जीवन में ही उनको मिल चुके थे पाएंगे तो कहेंगे कि ये तो वे फल हैं जो हमें पहले ही दिए गए थे क्योंकि वे उन फलों को उन पहले फलों के समान पाएंगे। अतः यह धारणा कि पहले फलों से अभिप्राय संसार की भौतिक ने'मतें हैं सर्वथा भूल है और आयत के स्पष्ट अर्थ तथा उसके भाव के बिल्कुल विपरीत है अपितु अल्लाह तआला का इस आयत में यह कथन है कि जो लोग ईमान लाए और शुभ कर्म किए उन्होंने अपने हाथ से एक स्वर्ग की रचना की है जिसके वृक्ष ईमान और जिसकी नेहरें शुभ कर्म हैं। इसी स्वर्ग का वे भविष्य में भी फल खाएंगे और वह फल अधिक स्पष्ट और मधुर होगा। चूंकि वे आध्यात्मिक तौर पर उसी फल को संसार में खा चुके होंगे, इसलिए दूसरे संसार (परलोक) में उन फलों को पहचान लेंगे और कहेंगे कि ये तो वही फल मालूम होते हैं जो पहले हमारे खाने में आ चुके हैं और वे इन फलों को उस पहले भोजन के समान पाएंगे। अतः यह आयत स्पष्ट रूप से बता रही है कि जो लोग संसार में ख़ुदा के प्रेम और प्यार का भोजन खाते हैं अब भौतिक रूप में उन्हें वही भोजन मिलेगा और चूंकि वे प्रीत और प्रेमानन्द का अनुभव कर चुके थे और उसकी स्थिति से अवगत थे, इसलिए उनकी आत्मा को वह युग स्मरण हो आएगा कि जब वे एकांत में और रात्रि के अंधकारमय क्षणों में प्रेमपूर्वक अपने वास्तविक परम प्रिय ख़ुदा को स्मरण करते और उस स्मरण से आनन्द उठाते थे।

इसलिए यहां भौतिक भोजनों की कुछ चर्चा नहीं और यदि किसी के हृदय में यह विचार उत्पन्न हो कि जब आध्यात्मिक तौर पर अध्यात्म ज्ञानियों को यह भोजन संसार में मिल चुका था तो फिर यह कहना क्योंकर उचित हो सकता है कि वे ऐसी ने'मतें हैं कि संसार में न किसी ने देखीं, न सुनीं और न किसी के हृदय में गुज़रीं तथा इस अवस्था में इन दोनों बातों में विरोधाभास पाया जाता है तो इस का उत्तर यह है कि विरोधाभास उस अवस्था में होता कि जब इस आयत में संसार की ने'मतें अभीष्ट

होतीं, परन्तु जब यहां संसार की ने'मतें अभीष्ट नहीं हैं। जो कुछ अध्यात्म ज्ञानी को अध्यात्म के रूप में मिलता है वह वास्तव में परलोक की ने'मत होती है जिसका नमूना प्रोत्साहित करने के लिए पहले ही दिया जाता है।

स्मरण रखना चाहिए कि ख़ुदा वाला व्यक्ति संसार के लोगों में से नहीं होता। इसी लिए तो संसार उस से वैर रखता है अपितु वह तो पारलौकिक जगत से होता है इसलिए उसे पारलौकिक ने'मत मिलती है। सांसारिक व्यक्ति सांसारिक ने'मतें पाता है और पारलौकिक व्यक्ति पारलौकिक ने'मतें प्राप्त करता है। अतः यह सर्वथा सत्य है कि वे ने'मतें संसार के कानों, संसार के हृदयों तथा संसार के नेत्रों से गुप्त रखी गईं परन्तु जिसके सांसारिक जीवन पर मृत्यु आ जाए और वह प्याला उसे आध्यात्मिक तौर पर पिलाया जाए जो परलोक में भौतिक रूप में पिलाया जाएगा उसको यह पीना उस समय स्मरण हो आएगा जबकि वही प्याला भौतिक रूप में उसे दिया जाएगा, परन्तु यह भी सत्य है कि वह व्यक्ति उस ने'मत से संसार के नेत्रों और कानों आदि को सर्वथा अनभिज्ञ समझेगा। चूंकि वह संसार में था यद्यपि संसार में से नहीं था इसलिए वह भी साक्ष्य देगा कि वह संसार की ने'मतों से नहीं। न संसार में उसके नेत्रों ने ऐसी ने'मत देखी न कान ने सुनी और न हृदय में उसका संचार हुआ परन्तु पारलौकिक जीवन में उसके नमूने देखे जो संसार में से नहीं थे अपितु वह आने वाले जगत की एक सूचना थी और उसी से उसका संबंध था, संसार से उसका कुछ संबंध नहीं था।

परलोक (आख़िरत) के संबंध में तीन क़ुर्आनी रहस्य

अब सैद्धान्तिक मापदण्ड के तौर पर यह बात भी स्मरण रखनी चाहिए कि मृत्योपरांत जिन अवस्थाओं का सामना करना पड़ता है, क़ुर्आन शरीफ़ ने उन्हें तीन प्रकारों में विभाजित किया है और आख़िरत के विषय में पवित्र क़ुर्आन ने ये तीन गूढ़ रहस्य बताए हैं जिनका हम यहां पृथक-पृथक वर्णन करते हैं।

अध्यात्म ज्ञान का प्रथम रहस्य

अध्यात्म ज्ञान का प्रथम रहस्य यह है कि क़ुर्आन करीम बार-बार यही कहता है कि परलोक (आख़िरत) कोई नवीन वस्तु नहीं है अपितु उसके समस्त दृश्य इसी सांसारिक जीवन के प्रतिबिम्ब और प्रतिछाया हैं जैसा कि उसका कथन है :-

وَكُلَّ اِنۡسَانٍ اَلۡزَمۡنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِىۡ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخۡرِجُ لَهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلۡقٰهُ مَنۡشُوۡرًا ۝ ①

अर्थात् हमने इसी संसार में प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का प्रभाव उसकी गर्दन से बांध रखा है और उन्हीं गुप्त प्रभावों को हम प्रलय के दिन प्रकट करेंगे और एक खुले-खुले कर्मों के प्रपत्र के रूप में दिखाएंगे।

इस आयत में जो 'ताइर' का शब्द है तो उसके विषय में स्पष्ट हो कि ताइर वास्तव में पक्षी को कहते हैं। फिर रूपक के तौर पर इस से अभिप्राय कर्म भी लिया गया है क्योंकि प्रत्येक कर्म चाहे अच्छा हो या बुरा वह सम्पन्न होने के पश्चात् पक्षी के समान उड़ जाता है और उसका परिश्रम या आनन्द समाप्त हो जाता है तथा हृदय पर उसकी मलिनता या कोमलता शेष रह जाती है।

यह क़ुर्आन का नियम है कि प्रत्येक कर्म गुप्त तौर पर अपने निशान जमाता रहता है। मनुष्य का जिस प्रकार का कर्म होता है उसी के अनुसार ख़ुदा तआला की ओर से एक प्रतिक्रिया होती है और वह प्रतिक्रिया उस पाप या उसके पुण्य को नष्ट नहीं होने देती अपितु उस के निशान हृदय पर, मुख पर, नेत्रों पर, हाथों पर, पैरों पर लिखे जाते हैं तथा यही गुप्त तौर पर कर्मों का एक प्रपत्र है जो पारलौकिक जीवन में स्पष्ट रूप से व्यक्त हो जाएगा।

---

① सूरह बनी इस्राईल - 14

फिर दूसरे स्थान पर स्वर्ग वालों के विषय में अल्लाह तआला का कथन है :-

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ ①

अर्थात् उस दिन भी ईमान का प्रकाश जो गुप्त तौर पर मोमिनों को प्राप्त है स्पष्ट तौर पर उनके आगे और उनके दाहिनी ओर दौड़ता हुआ दिखाई देगा। फिर एक अन्य स्थान पर दुराचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा है :-

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ۙ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ؕ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ۙ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ؕ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝ؕ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝ۙ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝ۙ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝ؑ ②

अर्थात् संसार के अत्यधिक मोह-माया ने तुम्हें परलोक की खोज से रोक दिया, यहां तक कि तुम क़ब्रों में जा पड़े, संसार से हृदय मत लगाओ, तुम्हें शीघ्र ही विदित हो जाएगा कि संसार से हृदय लगाना अच्छा नहीं। मैं पुनः कहता हूं कि तुम्हें शीघ्र ही विदित हो जाएगा कि संसार से हृदय लगाना अच्छा नहीं। यदि तुम्हें वास्तविक ज्ञान हो तो तुम नर्क को इसी संसार में देख लोगे। फिर बर्ज़ख़ के संसार (यमलोक) में विश्वास के नेत्रों के साथ देखोगे फिर मुर्दों को उठाए जाने की अवस्था में पूर्ण रूप से पकड़ में आ जाओगे और तुम पर वह अज़ाब पूर्ण रूप से आ जाएगा और केवल मौखिक नहीं अपितु तुम्हें प्रत्यक्ष रूप से नर्क का ज्ञान प्राप्त हो जाएगा।

① सूरह अलहदीद - 13 ② सूरह अत्तकासुर - 2-9

ज्ञान के तीन प्रकार

इन आयतों में ख़ुदा तआला ने स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि दुष्कर्मियों के लिए इसी संसार में नारकी जीवन गुप्त तौर पर होता है और यदि विचार करें तो अपने नर्क को इसी संसार में देख लेंगे। यहां अल्लाह तआला ने ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है। अर्थात् (1) ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास, (2) आंखों से देखकर प्राप्त विश्वास और (3) अनुभव द्वारा प्राप्त अटल विश्वास। तथा सामान्य व्यक्ति को समझने के लिए इन तीनों ज्ञानों के उदाहरण हैं कि यदि एक व्यक्ति दूर से किसी स्थान पर बहुत सा धुआं देखे और धुएं से मस्तिष्क अग्नि की ओर चला जाए तथा अग्नि के अस्तित्व पर विश्वास करे तथा इस विचार से कि धुएं और अग्नि में एक अटूट संबंध तथा पूर्ण अनिवार्यता है। जहां धुआं होगा आवश्यक है कि अग्नि भी हो। अतः इस ज्ञान का नाम ज्ञान द्वारा विश्वास है और फिर जब अग्नि की ज्वाला देख ले तो उसका नाम आंखों से विश्वास है और जब उस अग्नि में स्वयं ही प्रवेश कर जाए तो उस ज्ञान का नाम अटल विश्वास है। अतः अल्लाह तआला का कथन है कि नर्क के अस्तित्व का ज्ञान द्वारा विश्वास तो इसी संसार में हो सकता है फिर बरज़ख़ के संसार में (यमलोक में) आंखों देखा विश्वास प्राप्त होगा तथा मुर्दों के जीवित होने में वही ज्ञान अटल विश्वास की पूर्ण श्रेणी तक पहुंचेगा।

तीन लोक (अवस्थाएं)

यहां स्पष्ट हो कि क़ुर्आन की शिक्षानुसार तीन लोक सिद्ध होते हैं।

प्रथम - लोक जिसका नाम कर्म की अवस्था तथा प्रथम जन्म है। मनुष्य इसी लोक में अच्छाई या बुराई को अर्जित करता है और यद्यपि पारलौकिक जीवन की अवस्था नेकियों के लिए उन्नति है परन्तु वह मात्र ख़ुदा की कृपा से हैं। मनुष्य के कर्म का उनमें हस्तक्षेप नहीं।

द्वितीय - दूसरे लोक का नाम बरज़ख़ (यमलोक) है। वास्तव में बर्ज़ख़ शब्द अरबी शब्दकोश में उस वस्तु को कहते हैं जो वस्तुओं के मध्य में स्थित हो। चूंकि यह युग प्रलय के बाद मुर्दों के पुनः जीवित होने तथा प्रथम जन्म के मध्य स्थित है इसलिए इसका नाम बर्ज़ख़ है, परन्तु यह शब्द अनादिकाल से जब से कि संसार की नींव पड़ी मध्य लोक के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसलिए इस शब्द में मध्य लोक के अस्तित्व पर एक महान साक्ष्य छुपी हुई है। हम पुस्तक मिननुर्रहमान में सिद्ध कर चुके हैं कि अरबी के शब्द वे शब्द हैं जो ख़ुदा के मुख से निकले हैं और संसार में यही एकमात्र भाषा है जो पुनीत ख़ुदा की भाषा तथा अनादि एवं समस्त विद्याओं का उद्‌गम तथा समस्त भाषाओं की जननी और ख़ुदा की वह्यी का प्रथम केन्द्र है। इसलिए कि समस्त अरबी ख़ुदा की वाणी थी जो अनादिकाल से ख़ुदा के साथ-साथ थी। पुनः वही पवित्र वाणी संसार में अवतरित हुई और संसार ने उससे अपनी बोलियां और भाषाएं बनाईं तथा अरबी भाषा ख़ुदा का अन्तिम केन्द्र इसलिए ठहरी कि ख़ुदा तआला का अन्तिम ग्रन्थ जो पवित्र क़ुर्आन है अरबी भाषा में अवतरित हुआ। अतः बर्ज़ख़ अरबी शब्द है जो ज़ख़ और बर्र के संयोग से बना है। जिसके अर्थ ये हैं कि कर्मों के करने का मार्ग समाप्त हो गया और एक गुप्तावस्था में पड़ गया। बर्ज़ख़ की अवस्था वह अवस्था है कि जब यह अस्थायी मानव पंजर अस्त-व्यस्त होने की ओर जाने लगता है तथा आत्मा और शरीर पृथक हो जाते हैं और जैसा कि देखा गया है कि शरीर किसी गढ़े में डाल दिया जाता है और आत्मा भी एक प्रकार के गढ़े में पड़ जाती है जिस पर शब्द ज़ख़ बोला जाता है क्योंकि वह आत्मा अच्छे या बुरे कार्यों के करने की सामर्थ्य नहीं रखती कि जिस प्रकार शरीर के सम्बन्धों से उसके द्वारा सम्पन्न हो सकते थे। यह तो स्पष्ट है कि हमारी आत्मा का अच्छा स्वास्थ्य शरीर पर निर्भर है। मस्तिष्क के एक विशेष भाग पर चोट लगने से स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है और दूसरे भाग पर आघात

पहुंचने से विचार और चेतना शक्ति जाती रहती है तथा समस्त बुद्धि और बोध समाप्त हो जाते हैं। मस्तिष्क में जब किसी प्रकार का तनाव आ जाए या सूजन उत्पन्न हो जाए, रक्त या कोई अन्य तत्त्व ठहर जाए और किसी पूर्ण ग्रन्थि या अपूर्ण ग्रन्थि को जन्म दे तो साथ ही मूर्च्छा, मिर्गी या खामोशी का आक्रमण हो जाता है। अतः हमारा पुराना अनुभव हमें निश्चित तौर पर सिखाता है कि हमारी आत्मा शारीरिक बंधन के बिना सर्वथा बेकार है। अतः हमारा यह विचार सर्वथा निरर्थक है कि किसी समय में हमारी एकमात्र आत्मा जिसके साथ शरीर नहीं है कोई आनन्द प्राप्त कर सकती है। यदि हम क़िस्से के तौर पर उसको स्वीकार करें तो करें परन्तु बुद्धि उसे कदापि स्वीकार नहीं करेगी क्योंकि इसके साथ कोई बौद्धिक तर्क नहीं। हम बिल्कुल नहीं समझ सकते कि वह हमारी आत्मा जो शरीर के छोटे से छोटे विकार के समय बेकार हो कर बैठ जाती है वह उस दिन क्योंकर अपनी पूर्ण अवस्था पर रहेगी जबकि शरीर के संबंधों से सर्वथा वंचित की जाएगी। क्या हमें प्रतिदिन का अनुभव नहीं समझाता कि आत्मा के स्वास्थ्य के लिए शरीर का स्वस्थ रहना आवश्यक है। जब हम में से एक व्यक्ति बिल्कुल वृद्ध और जर्जर हो जाता है तो साथ ही उसकी आत्मा भी वृद्ध हो जाती है। उसकी समस्त ज्ञान संबंधी पूंजी वृद्धावस्था का चोर चुरा ले जाता है। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ[1]

अर्थात् मनुष्य वृद्ध होकर ऐसी दशा को पहुंच जाता है जहां शिक्षित होकर पुनः अशिक्षित बन जाता है। अतः हमारा यह अनुभव इस बात पर पर्याप्त प्रमाण है कि आत्मा शरीर के अभाव में कुछ भी नहीं। फिर यह विचार भी मनुष्य को वास्तविक सच्चाई की ओर ध्यान दिलाता है कि यदि आत्मा शरीर के बिना कुछ होती तो ख़ुदा तआला का यह कार्य निरर्थक ठहरता कि उसको अकारण नश्वर शरीर के

[1] सूरह अलहज्ज - 6

साथ जोड़ दिया, और फिर यह भी विचारणीय है कि ख़ुदा तआला ने मनुष्य को असीम उन्नति के लिए पैदा किया है। अत: जिस अवस्था में मनुष्य इस अल्प जीवन की उन्नति को शरीर के सहयोग के बिना प्राप्त नहीं कर सकता तो क्योंकर आशा रखें कि इन असीम विकासों को जो अपार हैं शरीर के सहयोग के बिना स्वयं ही प्राप्त कर लेगा।

अत: इन समस्त तर्कों से यही सिद्ध होता है कि आत्मा के पूर्ण कार्यों के लिए इस्लामी सिद्धान्तों की दृष्टि से आत्मा के लिए शरीर का स्थायी संबंध अनिवार्य है। यद्यपि मृत्योपरान्त यह नश्वर शरीर आत्मा से पृथक हो जाता है तथापि परलोक में अस्थायी तौर पर प्रत्येक आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगने के लिए शरीर मिलता है। वह शरीर उस शरीर के प्रकारों में से नहीं होता अपितु एक प्रकाश से या एक अंधकार से जैसी कि कर्मों की अवस्था हो शरीर तैयार होता है, यद्यपि कि उस संसार में पहुंचकर मनुष्य के कर्म ही शरीर का रूप धारण कर लेते हैं, इसी प्रकार ख़ुदा की पवित्र वाणी क़ुर्आन में इसका बार-बार वर्णन हुआ है तथा कुछ शरीर प्रकाशीय और कुछ अन्धकारमय बताए गए हैं जो क्रमश: कर्मों के प्रकाश अथवा कर्मों के अंधकार से तैयार होते हैं यह भेद नितान्त सूक्ष्म भेद है परन्तु तर्क रहित नहीं। पूर्ण मानव इसी जीवन में इस भौतिक अवस्था में रहते हुए एक प्रकाशीय अलौकिक अस्तित्व प्राप्त कर सकता है। कश्फ़ों के जगत में इसके बहुत से उदाहरण हैं, यद्यपि ऐसे व्यक्ति को समझाना कठिन होता है जो केवल एक मोटी बुद्धि की सीमा तक ठहरा हुआ है परन्तु जिन्हें कश्फ़ों के संसार में से कुछ भाग प्राप्त है वे इस प्रकार के शरीर को जो कर्मों द्वारा निर्मित होता है आश्चर्य और पृथकता की दृष्टि से नहीं देखेंगे अपितु इस लेख से एक अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

अत: वह शरीर जो कर्मों के अनुसार प्राप्त होता है वही परलोक में अच्छाई और बुराई के प्रतिफल का कारण हो जाता है। मैं इसमें अनुभव रखता हूं। मुझे कश्फ़ी तौर पर बिल्कुल जागने की अवस्था

में अनेकों बार कुछ मृतकों से भेंट करने का संयोग हुआ है तथा मैंने कुछ पापियों तथा पथभ्रष्टों का शरीर ऐसा काला देखा है कि जैसे वह धुएं से निर्मित किया गया है। इसलिए मैं इस कूचे से व्यक्तिगत तौर पर परिचित हूं। मैं स्पष्ट शब्दों में कहता हूं कि जैसा कि ख़ुदा तआला का कथन है ऐसा ही अवश्य मृत्योपरांत प्रत्येक को एक शरीर मिलता है चाहे प्रकाशमय हो अथवा अंधकारमय। मनुष्य की यह भूल होगी यदि वह इन अत्यन्त सूक्ष्म अध्यात्म ज्ञानों को केवल बुद्धि द्वारा सिद्ध करना चाहे अपितु ज्ञात होना चाहिए कि जिस प्रकार आंख मधुर वस्तु का स्वाद नहीं बता सकती और न जीभ किसी वस्तु को देख सकती है ऐसा ही वे प्रलय के ज्ञान जो कश्फ़ों के माध्यम से प्राप्त हो सकते हैं केवल बुद्धि के माध्यम से उनकी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला ने इस संसार में अज्ञात बातों को जानने के लिए पृथक-पृथक माध्यम रखे हैं। अतः प्रत्येक वस्तु को उसके माध्यम के द्वारा ढूंढो तो उसे पा लोगे।

एक अन्य बात भी स्मरण रखने योग्य है कि ख़ुदा ने उन लोगों को जो दुराचार और पथ-भ्रष्टता में लिप्त हो गए अपनी वाणी में मृतक की संज्ञा दी है और सदात्माओं को जीवित ठहराया है। इसमें रहस्य यह है कि जो लोग ख़ुदा तआला से लापरवाह हुए उन के जीवन के साधन जो खाना-पीना तथा कामवासनाओं का अनुसरण था कट गए और अध्यात्मिक भोजन से उनका कोई भाग न था। अतः वे वास्तव में मर गए तथा वे केवल अज़ाब उठाने के लिए जीवित होंगे। इसी रहस्य की ओर अल्लाह तआला ने संकेत किया है। जैसा कि वह कहता है :-

مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ○[1]

---

① सूरह ताहा - 75

अर्थात् जो व्यक्ति अपराधी बन कर ख़ुदा के पास आएगा तो उसका ठिकाना नर्क है वह उसमें न मरेगा और न जीवित रहेगा परन्तु जो लोग ख़ुदा तआला के प्रेमी हैं वे मृत्यु से नहीं डरते क्योंकि उनकी रोटी और पानी उनके साथ होता है। फिर बर्ज़ख़ (यमलोक) के बाद वह युग है जिस को मुर्दों के उठाए जाने का लोक कहते हैं। उस युग में प्रत्येक आत्मा अच्छी हो या बुरी, सदाचारी हो या दुराचारी एक प्रत्यक्ष शरीर प्राप्त करेगी। यह दिन ख़ुदा की उन पूर्ण झलकियों के लिए निर्धारित किया गया है जिसमें प्रत्येक मनुष्य अपने प्रतिफल के चरम बिन्दु तक पहुंचेगा। यह आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि ख़ुदा से वह क्योंकर हो सकेगा, क्योंकि वह प्रत्येक प्रकार की शक्ति का स्वामी है जो चाहता है करता है। जैसा कि स्वयं उसका कथन है :-

اَوَلَمۡ يَرَ الۡاِنۡسَانُ اَنَّا خَلَقۡنٰهُ مِنۡ نُّطۡفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيۡمٌ
مُّبِيۡنٌ ○ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلۡقَهٗ ؕ قَالَ مَنۡ يُّحۡيِ
الۡعِظَامَ وَهِيَ رَمِيۡمٌ ○ قُلۡ يُحۡيِيۡهَا الَّذِيۡۤ اَنۡشَاَهَاۤ اَوَّلَ
مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلۡقٍ عَلِيۡمُ ○[1]

اَوَ لَيۡسَ الَّذِيۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنۡ
يَّخۡلُقَ مِثۡلَهُمۡ ؕ بَلٰى ۚ وَهُوَ الۡخَلّٰقُ الۡعَلِيۡمُ ○ اِنَّمَاۤ اَمۡرُهٗۤ
اِذَاۤ اَرَادَ شَيۡـًٔا اَنۡ يَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ○ فَسُبۡحٰنَ الَّذِيۡ بِيَدِهٖ
مَلَكُوۡتُ كُلِّ شَيۡءٍ وَّاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ○[2]

अर्थात् क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हमने उस को एक पानी की

① सूरह यासीन - 78-80
② सूरह यासीन - 82-84

एक बूंद से उत्पन्न किया है जो गर्भाशय में डाली गई थी फिर वह एक झगड़ालू मनुष्य बन गया, हमारे लिए बातें बनाने लगा और अपना जन्म भूल गया और कहने लगा - यह क्योंकर संभव है कि जब हड्डियां भी नहीं बचेंगी तो फिर भी मनुष्य नए सिरे से जीवित हो जाएगा ? ऐसी शक्ति वाला कौन है जो उसे जीवित करेगा। उनको कह - वही जीवित करेगा जिसने पहले उसे पैदा किया था और वह हर प्रकार से और हर मार्ग से जीवित करना जानता है। उसके आदेश की यह शान है कि जब किसी वस्तु के होने का विचार करता है तो केवल यही कहता है कि हो। अतः वह वस्तु उत्पन्न हो जाती है। अतः वह हस्ती पवित्र है जिस का प्रत्येक वस्तु पर अधिकार है। तुम सब उसी की ओर लौटोगे।

अतः इन आयतों में अल्लाह तआला ने कहा है कि ख़ुदा के समक्ष कोई वस्तु अनहोनी नहीं, जिसने तुच्छ मनुष्य को पानी की एक बूंद से उत्पन्न किया, क्या वह दूसरी बार उत्पन्न करने से असमर्थ है ?

यहां अनाड़ी लोगों की ओर से एक और प्रश्न उठाया जा सकता है और वह यह है कि जिस परिस्थिति में तीसरा लोक जो मुर्दों को उठाए जाने का लोक है लम्बी अवधि के पश्चात् आएगा तो इस अवस्था में प्रत्येक अच्छे और बुरे मनुष्य के लिए बर्ज़ख़ का लोक (यमलोक) बतौर हवालात के हुआ जो एक व्यर्थ बात मालूम होती है। इसका उत्तर यह है कि ऐसा समझना सर्वथा भूल है जो अज्ञानतावश पैदा होती है अपितु ख़ुदा तआला की पवित्र वाणी क़ुर्आन में अच्छे और बुरे के प्रतिफल के लिए दो स्थान पाए जाते हैं। एक बर्ज़ख़-लोक जिसमें गुप्त तौर पर प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रतिफल पाएगा। बुरे लोग मृत्योपरान्त ही नर्क में प्रवेश करेंगे नेक लोग मृत्योपरांत ही स्वर्ग में आराम पाएंगे। अतः इस प्रकार की आयतें पवित्र क़ुर्आन में पर्याप्त मात्रा में हैं कि अकेली मृत्यु के साथ प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों का प्रतिफल देख लेता है, जैसा कि ख़ुदा तआला एक स्वर्गीय के विषय

में सूचना देता है और कहता है :-

قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ ①

अर्थात् उसको कहा गया कि तू स्वर्ग में प्रवेश कर और इसी प्रकार एक नारकी को सूचित करके कहता है :-

فَرَاٰهُ فِیۡ سَوَآءِ الۡجَحِیۡمِ ②

अर्थात् एक स्वर्गीय का एक मित्र नारकी था। जब वे दोनों मर गए तो स्वर्गीय हैरान था कि मेरा मित्र कहां है। अतः उसे दिखाया गया कि वह नर्क में है। इसलिए प्रतिफल और दण्ड की कार्यवाही तो अविलम्ब आरंभ हो जाती है तथा नारकी नर्क में और स्वर्गीय स्वर्ग में जाते हैं, परन्तु तत्पश्चात् एक और उच्च झलक का दिन है जो ख़ुदा की महान नीति ने उस दिन को प्रकट करने की मांग की है क्योंकि उसने मनुष्य को इसलिए उत्पन्न किया ताकि वह स्रष्टा के रूप में पहचाना जाए और वह फिर सब का नाश करेगा ताकि वह अपने महा प्रकोप के साथ पहचाना जाए और फिर एक दिन सब को पूर्ण जीवन प्रदान करके एक मैदान में एकत्र करेगा ताकि वह अपने महाशक्तिशाली होने के साथ पहचाना जाए। अतः ज्ञात होना चाहिए कि कथित रहस्यों में से यह प्रथम रहस्य था जिस का वर्णन हुआ।

अध्यात्म ज्ञान का दूसरा रहस्य

अध्यात्म ज्ञान का दूसरा रहस्य जिस का परलोक के विषय में क़ुर्आन शरीफ़ ने वर्णन किया है वह यह है कि परलोक में वे समस्त बातें जो संसार में आध्यात्मिक थीं भौतिक तौर पर साकार होंगी चाहे परलोक में बर्ज़ख़ की श्रेणी हो या पुनः उठाए जाने की। इस बारे में

---

① सूरह यासीन - 27

② सूरह अस्साफ़ात - 56

जो कुछ ख़ुदा तआला ने कहा है उसमें से एक आयत यह है :-

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝[1]

अर्थात् जो व्यक्ति इस संसार में (आध्यात्मिक तौर पर) अंधा होगा वह परलोक में भी अंधा होगा। इस आयत का उद्देश्य यह है कि इस लोक (संसार) का अध्यात्मिक अंधापन उस लोक (परलोक) में भौतिक तौर पर मौजूद और महसूस होगा। इसी प्रकार दूसरी आयत में है :-

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۝ۙ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۝ۙ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۝[2]

अर्थात् इस नारकी व्यक्ति को पकड़ो, इसकी गर्दन में कड़ा (तौक़) डालो फिर इसे नर्क में जलाओ फिर ऐसी ज़ंजीर में जो नाप में सत्तर गज़ है उस को जकड़ दो। ज्ञात होना चाहिए कि इन आयतों में प्रकट किया कि संसार का अध्यात्मिक अज़ाब परलोक में भौतिक तौर पर प्रकट होगा। अतः गर्दन का तौक़ सांसारिक इच्छाओं का जिसने मनुष्य के सर को पृथ्वी की ओर झुका रखा था वह दूसरे संसार (परलोक) में प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देगा और ऐसी ही सांसारिक बंधनों की ज़ंजीर पैरों में पड़ी हुई दिखाई देगी और सांसारिक आकांक्षाओं की जलन की अग्नि प्रत्यक्ष रूप में भड़कती हुई दिखाई देगी।

पापी मनुष्य सांसारिक जीवन में मोह-माया का एक नर्क अपने अन्दर रखता है और असफलताओं में इस नर्क की यातनाओं का अनुभव करता है। अतः जब कि अपनी नश्वर कामवासनाओं से दूर

---

[1] सूरह बनी इस्राईल - 73

[2] सूरह अलहाक़्क़ः - 31-33

फेंका जाएगा और हमेशा की निराशा छा जाएगी। ख़ुदा तआला उन उत्कंठाओं को भौतिक अग्नि के रूप में उस पर प्रकट करेगा। जैसा कि उसका कथन है :-

وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ ①

अर्थात् उनमें और उनकी इच्छित वस्तुओं में पृथकता डाल दी जाएगी और यही अज़ाब की जड़ होगी और फिर जो यह कहा कि सत्तर गज़ की ज़ंजीर में उसे जकड़ो। यह इस बात की ओर संकेत है कि एक पापी प्रायः सत्तर वर्ष की आयु पा लेता है अपितु कई ऐसे वर्ष भी मिलते हैं कि अल्पायु तथा वृद्धावस्था की आयु पृथक करके फिर इतना साफ और शुद्ध भाग आयु का उसे प्राप्त होता है जो बुद्धिमत्ता, परिश्रम तथा कार्य योग्य होता है, परन्तु वह दुर्भाग्यशाली अपने उत्तम जीवन के सत्तर वर्ष संसार की बंधनों में व्यतीत कर देता है और ज़ंजीर से स्वतंत्र होना नहीं चाहता। अतः ख़ुदा तआला इस आयत में फ़रमाता है कि वही सत्तर वर्ष जो उसने संसार के बंधनों में व्यतीत किए थे परलोक में ज़ंजीर के समान साकार हो जाएंगे जो सत्तर गज़ की होगी। प्रत्येक गज़ एक वर्ष के स्थान पर बोला गया है।

यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला अपनी ओर से बन्दे पर कोई विपत्ति नहीं डालता अपितु वह मनुष्य के अपने ही दुष्कर्म उसके सम्मुख रख देता है। फिर अपने इसी नियम को प्रकट करने में एक अन्य स्थान पर ख़ुदा का कथन है :-

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۝ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِىْ مِنَ اللَّهَبِ ۝ ②

① सूरह सबा - 55

② सूरह अलमुरसलात - 31-32

अर्थात् हे दुराचारियो ! पथभ्रष्टो ! त्रिकोणी छाया की ओर चलो जिसकी तीन शाखाएं हैं जो छाया का काम नहीं दे सकतीं और न गर्मी से बचा सकती हैं। इस आयत में तीन शाखाओं से अभिप्राय पाशविक शक्ति, क्रूर शक्ति एवं अनियंत्रित कल्पना शक्ति है। जो लोग इन तीनों शक्तियों को शिष्टाचार के रूप में नहीं लाते तथा उनका संतुलन नहीं करते, उनकी ये शक्तियां प्रलय में इस प्रकार से प्रदर्शित होंगी कि जैसे तीन शाखाएं बिना पत्तों के खड़ी हैं तथा गर्मी से नहीं बचा सकतीं और वे गर्मी से जलेंगे।

फिर इसी प्रकार ख़ुदा तआला अपने इसी नियम को प्रकट करने के लिए स्वर्गीय लोगों के प्रति कहता है -

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ [1]

अर्थात् उस दिन तू देखेगा कि मोमिनों का यह प्रकाश जो संसार में गुप्त तौर पर है प्रत्यक्ष तौर पर उनके आगे तथा उनके दाहिनी ओर दौड़ता होगा।

फिर एक अन्य आयत में कहा है :-

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ [2]

अर्थात् उस दिन कुछ मुंह काले हो जाएंगे और कुछ सफेद तथा प्रकाशयुक्त हो जाएंगे।

फिर एक अन्य आयत में कथन है :-

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ

① सूरह अलहदीद - 13

② सूरह आल-ए-इमरान - 107

لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ ①

अर्थात् वह स्वर्ग जो संयमियों को दिया जाएगा। उसकी उपमा एक बाग़ से दी जा सकती है जिसमें शुद्ध निर्मल पानी की नहरें हैं जो कभी दूषित नहीं होता तथा उसमें उस दूध की नहरें हैं जिसका स्वाद कभी परिवर्तित नहीं होता तथा उसमें उस मदिरा की नहरें हैं जो सरासर आनंददायक हैं जिनमें मादकता नहीं होती तथा उसमें उस शहद की नहरें हैं जो अत्यन्त स्वच्छ हैं जिसके साथ कोई मलिनता नहीं।

यहां स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि इस स्वर्ग को उदाहरण के तौर पर यों समझ लो कि उन समस्त वस्तुओं की अपार और अगणित नहरें हैं। वह जीवन का पानी जो अध्यात्म ज्ञानी संसार में आध्यात्मिक रूप में पीता है उसमें प्रत्यक्ष रूप में मौजूद है तथा वह अध्यात्मिक दूध जिस से वह दूध पीते बच्चे के समान संसार में आध्यात्मिक तौर पर पोषण पाता है स्वर्ग में प्रत्यक्ष- प्रत्यक्ष दिखाई देगा और वह ख़ुदा के प्रेम की शराब जिस से वह संसार में आध्यात्मिक तौर पर हमेशा मस्त रहता था तथा अब स्वर्ग में प्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष उसकी नहरें दिखाई देंगी तथा वह ईमान रूपी मधुरता का शहद जो संसार में आध्यात्मिक रूप में अध्यात्म ज्ञानी के मुख में जाता है वह स्वर्ग में व्यक्त रूप में और प्रत्यक्ष नहरों के समान दिखाई देगा और प्रत्येक स्वर्गीय अपनी नहरों तथा बाग़ों के साथ अपनी आध्यात्मिक अवस्था का स्पष्ट रूप दिखा देगा और ख़ुदा भी उस दिन स्वर्गीय लोगों के लिए पर्दों से बाहर आ जाएगा। अतः आध्यात्मिक अवस्थाएं गुप्त नहीं रहेंगी अपितु भौतिक रूप में दृष्टिगोचर होगी।

---

① सूरह मुहम्मद - 16

अध्यात्म ज्ञान का तीसरा रहस्य

अध्यात्म ज्ञान का तीसरा रहस्य यह है कि परलोक में असीमित उन्नति होगी। इस बारे में अल्लाह तआला का कथन है :-

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ①

अर्थात् जो लोग संसार में ईमान का प्रकाश रखते हैं प्रलय के दिन उन का प्रकाश उनके आगे तथा उनके दाहिनी ओर दौड़ता होगा, वे हमेशा यही कहते रहेंगे कि हे ख़ुदा ! हमारे प्रकाश को चरम सीमा तक पहुंचा दे और हमें अपनी क्षमा रूपी छाया में ले ले। तू प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है।

इस आयत में यह जो कहा गया है कि वे हमेशा यही कहते रहेंगे कि हमारे प्रकाश को चरम सीमा तक पहुंचा। यह असीमित उन्नति की ओर संकेत है अर्थात् उन्हें प्रकाश का एक कमाल प्राप्त होगा फिर दूसरा कमाल दृष्टिगोचर होगा। उसे देखकर प्रथम कमाल को अपूर्ण पाएंगे। अतः दूसरे कमाल की प्राप्ति के लिए विनती करेंगे और जब वह प्राप्त होगा तो उन पर कमाल की एक तीसरी श्रेणी प्रकट होगी। फिर उसे देखकर पहले कमालों को तुच्छ समझेंगे तथा उसकी इच्छा करेंगे। यही उन्नति की चरम सीमा है जिसकी इच्छा है जो "अतमिम" (पूर्ण कर दे) शब्द से समझी जाती है।

अतः इसी प्रकार उन्नति और विकासों का असीम क्रम चला जाएगा पतन कभी नहीं होगा और न कभी स्वर्ग से निकाले जाएंगे अपितु प्रतिदिन आगे बढ़ेंगे तथा पीछे न हटेंगे तथा यह जो कहा कि

① सूरह अत्तहरीम - 9

वे हमेशा अपनी क्षमा चाहेंगे। यहां प्रश्न यह है कि जब स्वर्ग में प्रवेश कर गए तो फिर क्षमा में क्या कमी रह गई और जब सब पाप क्षमा कर दिए गए तो फिर क्षमायाचना की क्या आवश्यकता रही ? इसका उत्तर यह है कि क्षमा के मूल अर्थ ये हैं कि कठोर एवं अपूर्ण अवस्था को नीचे दबाना और ढांकना। अतः स्वर्गीय इस बात की इच्छा करेंगे कि पूर्ण कमाल प्राप्त करें और सर्वथा प्रकाश में डूब जाएं। वे दूसरी अवस्था को देखकर पहली अवस्था को अपूर्ण पाएंगे। अतः चाहेंगे कि पहली अवस्था नीचे दबाई जाए। पुनः तृतीय अवस्था को देखकर उन्हें इस बात की इच्छा होगी कि दूसरी अवस्था की अपेक्षा क्षमादान अधिक हो अर्थात पहली तुच्छ अवस्था नीचे दबाई जाए और उसे छुपा दिया जाए। इसी प्रकार असीमित क्षमा के इच्छुक रहेंगे। यह वही क्षमा तथा माफ़ी का शब्द है जो कुछ अज्ञानी लोग बतौर आरोप हमारे नबी[स.अ.व.] के संबंध में प्रस्तुत किया करते हैं। अतः दर्शकों ने यहां से समझ लिया होगा कि क्षमा की यही इच्छा मानव का गर्व है। जो व्यक्ति किसी स्त्री के पेट से पैदा हुआ फिर हमेशा के लिए क्षमा को अपनी आदत नहीं बनाता वह कीड़ा है न कि इन्सान और नेत्रहीन है न कि नेत्रवान और अपवित्र है न कि पवित्र।

सारांश यह है कि पवित्र क़ुर्आन के अनुसार नर्क और स्वर्ग वास्तव में दोनों मानव जीवन के प्रतिबिम्ब और प्रतिछाया हैं, कोई ऐसी नवीन भौतिक वस्तु नहीं है कि जो दूसरे स्थान से आए। यह सत्य है कि वे दोनों भौतिक तौर से साकार होंगे, परन्तु वे मूल आध्यात्मिक अवस्थाओं के प्रतिबिम्ब और प्रतिछाया होंगे। हम लोग ऐसे स्वर्ग पर आस्था नहीं रखते कि केवल भौतिक तौर पर एक पृथ्वी पर वृक्ष लगाए गए हों और न ऐसे नर्क को मानते हैं जिसमें वास्तव में गन्धक के पत्थर हैं अपितु **इस्लामी आस्थानुसार स्वर्ग-नर्क उन्हीं कर्मों के प्रतिबिम्ब हैं जो मनुष्य संसार में करता है।**

तीसरा प्रश्न

संसार में मानव जीवन के मूल उद्देश्य क्या हैं और वे किस प्रकार प्राप्त हो सकते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि यद्यपि, भिन्न-भिन्न स्वभाव रखने वाले मनुष्य अपने अल्प ज्ञान तथा उत्साहहीनता से अपने जीवन के भिन्न-भिन्न प्रकार के उद्देश्य बताते हैं तथा वे केवल सांसारिक उद्देश्यों तथा आकांक्षाओं तक चलकर आगे ठहर जाते हैं किन्तु मनुष्य का वह परमोद्देश्य जो ख़ुदा तआला अपने पवित्र ग्रन्थ क़ुर्आन में वर्णन करता है। वह यह है :-

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ۝[1]

अर्थात् मैंने जिन्न तथा मनुष्यों को इसलिए पैदा किया है कि वे मुझे पहचानें तथा मेरी उपासना करें। अतः इस आयत के अनुसार मानव जीवन का मूल उद्देश्य ख़ुदा तआला की उपासना करना तथा आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति एवं उसी के लिए हो जाना है। यह तो स्पष्ट है कि मनुष्य को तो यह श्रेणी प्राप्त नहीं है कि अपने जीवन का लक्ष्य अपने अधिकार से स्वयं ही निश्चित करे क्योंकि मनुष्य न अपनी इच्छा से आता है और न अपनी इच्छा से वापस जाएगा अपितु वह

---

[1] सूरह अज़्ज़ारियात - 57

स्रष्टा की एक सृष्टि है जिसे स्रष्टा ने सृष्टि के शेष समस्त प्राणियों की अपेक्षा अत्युत्तम तथा श्रेष्ठ शक्तियां प्रदान कीं, उसी ने उसके जीवन का एक उद्देश्य भी निश्चित कर रखा है। चाहे कोई इस उद्देश्य को समझे या न समझे, परन्तु मानव-जीवन का उद्देश्य निःसन्देह ख़ुदा की उपासना, अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करना तथा ख़ुदा में विलीन हो जाना ही है। जैसा कि अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में एक अन्य स्थान पर कहता है :-

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ①

فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا...... ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ②

अर्थात् वह धर्म जिसमें ख़ुदा की सही पहचान तथा उसकी उपासना उचित ढंग से की जाती है वह इस्लाम है। इस्लाम धर्म मानव प्रकृति में रखा गया है। ख़ुदा तआला ने मनुष्य को इस्लाम के अनुरूप पैदा किया तथा इस्लाम के लिए पैदा किया अर्थात् यह चाहा कि मनुष्य अपनी समस्त शक्तियों के साथ उसकी उपासना, उसका आज्ञापालन करे और उसके प्रेम में लग जाए। इसीलिए उस सर्वशक्तिमान और दयालु (ख़ुदा) ने मनुष्य को समस्त शक्तियां इस्लाम धर्म के यथायोग्य प्रदान की हैं।

इन क़ुर्आन की आयतों की व्याख्या बहुत विस्तृत है। हम इस विषय में किसी सीमा तक दूसरे प्रश्न के तीसरे भाग में उल्लेख भी कर चुके हैं किन्तु अब हम संक्षिप्त तौर पर यह बताना चाहते हैं कि मनुष्य को जो कुछ बाह्य तथा आन्तरिक अवयव अथवा जो

---

① सूरह आले इमरान - 20

② सूरह अर्रूम - 30-31

कुछ शक्तियां प्रदान की गई हैं उनका वास्तविक उद्देश्य ख़ुदा की पहचान तथा उसकी उपासना तथा उस से प्रेम करना है। इसी कारण मनुष्य संसार में सहस्त्रों व्यवसाय करके फिर भी ख़ुदा तआला के अतिरिक्त सच्ची समृद्धि अन्यत्र कहीं नहीं पाता। बड़ा धनवान होकर, बड़ा पद पाकर, बड़ा व्यापारी बनकर, बड़े साम्राज्य तक पहुंच कर, महान दार्शनिक कहला कर भी अन्त में सांसारिक आकांक्षाओं एवं उत्कंठाओं की पीड़ा लेकर जाता है और उसका हृदय सदैव संसार में डूबे रहने से उसे अपराधी बनाता रहता है तथा उसके छल-प्रपंचों एवं अनुचित कार्यों में उसकी अन्तरात्मा कभी भी सहमत नहीं होती। एक मनीषी व्यक्ति इस समस्या को इस प्रकार भी समझ सकता है कि जिस वस्तु की शक्तियां अच्छे से अच्छे कर्म कर सकती हैं फिर आगे जाकर ठहर जाती हैं वही सर्वोत्तम कार्य उसकी उत्पत्ति का मुख्य लक्ष्य समझा जाता है। उदाहरणतया बैल का कार्य उत्तम ढंग से हल चलाना अथवा सिंचाई करना अथवा भार ढोना है। उसकी शक्तियों में इससे अधिक कुछ भी सिद्ध नहीं हुआ। अतः बैल के जीवन का उद्देश्य यही तीन बातें हैं, इस से अधिक कोई शक्ति उसमें नहीं पाई जाती, परन्तु जब हम मानव शक्तियों को टटोलते हैं कि इनमें सर्वोत्तम शक्ति कौन सी है तो यही सिद्ध होता है कि उसमें सर्वोत्कृष्ट ख़ुदा की अभिलाषा विद्यमान है। यहां तक कि वह चाहता है कि ख़ुदा के प्रेम में ऐसा विनम्र और लीन हो कि उसका अपना कुछ भी शेष न रहे सब कुछ ख़ुदा का हो जाए। वह खाने-पीने और सोने आदि स्वाभाविक क्रियाओं में अन्य प्राणियों को अपना बड़ा भागीदार समझता है। कला-कौशल में कुछ पशु मनुष्य से भी बहुत आगे हैं अपितु मधुमक्खियां भी प्रत्येक पुष्प का रस निकाल कर इतना उत्तम शहद तैयार करती हैं कि अब तक उस कला में मनुष्य को सफलता प्राप्त नहीं हुई। अतः स्पष्ट है कि मनुष्य की वास्तविक सफलता ख़ुदा के मिलन में है। अतः उसके

जीवन का मूल उद्देश्य यही है कि ख़ुदा तआला की ओर उसके हृदय के कपाट खुलें।

मानव जीवन की प्राप्ति के साधन

हां यदि प्रश्न यह हो कि यह उद्देश्य किस प्रकार प्राप्त हो सकता है और किन साधनों से मनुष्य उसे पा सकता है।

प्रथम साधन - अतः स्पष्ट हो कि सबसे प्रथम साधन जो इस उद्देश्य-प्राप्ति के लिए शर्त है वह यह है कि ख़ुदा तआला को उचित तौर पर पहचाना जाए और सच्चे ख़ुदा पर विश्वास किया जाए क्योंकि यदि प्रथम पग ही ग़लत है। उदाहरणतया यदि कोई व्यक्ति, पक्षी या पशु अथवा तत्त्वों अथवा मनुष्य के बच्चे को ही ख़ुदा समझ बैठा है तो फिर दूसरे पगों में उसके सद्मार्ग पर चलने की आशा नहीं की जा सकती। सच्चा ख़ुदा उसके अभिलाषियों को सहायता देता है, परन्तु एक मृतक दूसरे मृतक की क्या सहायता कर सकता है ? इसमें अल्लाह तआला ने क्या ख़ूब उपमा दी है और वह यह है :-

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝ [1]

अर्थात् दुआ करने योग्य वही सच्चा ख़ुदा है जो प्रत्येक बात पर समर्थ है और जो लोग उसके अतिरिक्त अन्य देवी-देवताओं को उपास्य बना लेते हैं तो वे उनकी किसी दुआ का उत्तर नहीं दे सकते उनका उदाहरण ऐसा ही है कि जैसे कोई जल की ओर हाथ फैलाए और कहे हे जल ! तू मेरे मुख में आ जा तो क्या वह उसके मुख में

---

① सूरह अर्रअद - 15

आ जाएगा कदापि नहीं। अतः जो लोग सच्चे ख़ुदा से अपरिचित हैं उनकी समस्त दुआएं व्यर्थ हैं।

दूसरा साधन - ख़ुदा तआला के उस अलौकिक सौन्दर्य की जानकारी प्राप्त करना है जो सर्वांगपूर्ण होने की दृष्टि से उसमें पाया जाता है क्योंकि सौन्दर्य एक ऐसी वस्तु है कि स्वाभाविक रूप से हृदय उसकी ओर आकर्षित होता जाता है तथा उसके देखने से स्वाभाविक तौर पर प्रेम हो जाता है। अतः ख़ुदा तआला का सौन्दर्य, उसका एकत्त्व, उसकी महानता, बुज़ुर्गी तथा विशेषताएं हैं जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में उसका कथन है :-

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۙ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ①

अर्थात् ख़ुदा अपने अस्तित्व, अपनी विशेषता तथा अपने प्रताप में एक है उसका कोई भागीदार नहीं, सब उसके मुहताज हैं, कण-कण उसी से जीवन प्राप्त करता है जो समस्त वस्तुओं के लिए वरदान का स्रोत है किन्तु स्वयं किसी से लाभ प्राप्त नहीं, वह न किसी का पुत्र है न किसी का पिता है तथा हो भी क्योंकर कि उसका कोई सजातीय नहीं। क़ुर्आन ने बारम्बार ख़ुदा की अनुपमता प्रस्तुत करके तथा उसकी महानता प्रदर्शित करके लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है कि देखो ऐसा ख़ुदा हृदयों का मनोवांछित है न कि मृतक, दुर्बल, अल्प दयावान तथा अल्प शक्तिमान।

तीसरा साधन - जो मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दूसरे स्तर का सोपान है ख़ुदा तआला के उपकारों से अवगत होना है क्योंकि प्रेम की प्रेरक दो ही वस्तुएं हैं - सौन्दर्य अथवा उपकार तथा ख़ुदा तआला की

---

① सूरह अल-इख़्लास - 2-5

उपकार-जन्य विशेषताओं का सारांश सूरह फ़ातिहा में पाया जाता है। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला का कथन है :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ ①

क्योंकि स्पष्ट है कि पूर्ण उपकार इसमें है कि ख़ुदा तआला अपने बन्दों को मात्र नास्ति से उत्पन्न करे और फिर हमेशा उसका प्रतिपालन उन के साथ हो और वही प्रत्येक वस्तु का स्वयं सहारा हो तथा उसकी समस्त प्रकार की कृपाएं उसके बन्दों के लिए प्रकट हुई हों तथा उसका उपकार अनन्त हो कि जिनकी गणना न की जा सके। अतः ऐसे उपकारों को ख़ुदा तआला ने बारम्बार स्मरण कराया है। जैसा कि एक स्थान पर उसका कथन है :-

وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰہِ لَا تُحْصُوْھَا ②

अर्थात् यदि ख़ुदा तआला की ने'मतों की गणना करना चाहो तो उन्हें कदापि नहीं गिन सकोगे।

चौथा साधन - ख़ुदा तआला ने मनुष्य को अपने मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिए **दुआ** को बताया है। जैसा कि उसका कथन है :-

اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ ③

अर्थात् तुम दुआ करो मैं स्वीकार करूंगा। ख़ुदा तआला ने बार-बार प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया है ताकि मनुष्य अपनी शक्ति से नहीं अपितु ख़ुदा को ख़ुदा ही की शक्ति से प्राप्त करे।

① सूरह अल-फ़ातिहः - 2-4
② सूरह इब्राहीम - 35
③ सूरह अल-मो'मिन - 61

पांचवां साधन - मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ख़ुदा तआला ने तपस्या बताया है अर्थात् अपना धन ख़ुदा के मार्ग में व्यय करने से तथा अपनी शक्तियों को ख़ुदा तआला के मार्ग में ख़र्च करने और अपने प्राणों को उसी के मार्ग में ख़र्च करने तथा अपनी बुद्धि ख़ुदा के मार्ग में व्यय करने आदि साधनों से उसकी खोज की जाए। जैसा कि उसका कथन है :-

جَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط ①

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ ②

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ط ③

अर्थात् अपनी धन-सम्पत्तियों, अपने प्राणों, अपनी मनोवृत्तियों उनकी समस्त शक्तियों के साथ ख़ुदा के मार्ग में व्यय करो और हमने जो कुछ बुद्धि, ज्ञान, विवेक तथा कला-कौशल आदि तुम्हें दिया है वह सब कुछ ख़ुदा के मार्ग में लगाओ। जो लोग हमारे मार्ग में समस्त साधनों द्वारा भरसक प्रयास करते हैं हम उन्हें अपना मार्ग दिखा दिया करते हैं।

छठा साधन - मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ख़ुदा तआला ने छठा साधन दृढ़ता बताया है अर्थात् इस मार्ग में उत्साहहीन, असमर्थ न हो तथा थक न जाए तथा परीक्षा से भयभीत न हो। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ

الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ

---

① सूरह अत्तोबः - 41

② सूरह अलबक़रः - 4

③ सूरह अल-अन्कबूत - 70

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ○ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ①

अर्थात् वे लोग जिन्होंने कहा कि हमारा रब्ब अल्लाह है तथा झूठे ख़ुदाओं को त्याग दिया, फिर अपने वचन पर दृढ़ रहे तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की परीक्षाओं एवं विपत्तियों के समय दृढ़ रहे, उन पर ख़ुदा के फ़रिश्ते (दूत) उतरते हैं और उन्हें धैर्य दिलाते हुए कहते हैं कि तुम भय मत करो, न ही शोक करो, प्रसन्नचित्त हो तथा हर्षोल्लास से परिपूर्ण रहो कि तुम इस प्रसन्नता के वारिस हो गए जिसका तुम्हें वादा दिया गया है हम इस लोक में तथा परलोक में तुम्हारे मित्र हैं।

यहां इन वाक्यों में यह संकेत है कि इस दृढ़ता से ख़ुदा तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। यह सत्य है कि दृढ़ता चमत्कार से श्रेष्ठ है। दृढ़ता का पूर्ण रूप यह है कि अपने चारों ओर विपत्तियों को व्याप्त देखें तथा ख़ुदा के मार्ग में प्राण तथा मान-सम्मान को घोर संकट में पाएं तथा कोई धैर्य देने वाली बात दिखाई न देती हो यहां तक कि ख़ुदा तआला भी परीक्षा के रूप में धैर्य देने वाले कश्फ़, इल्हाम या स्वप्न को बन्द कर दे तथा भयानक अवस्था में छोड़ दे। उस समय नपुंसकता न दिखाएं तथा कायरों के समान क़दम पीछे न हटाएं तथा वफ़ादारी की विशेषता में कोई विघ्न पैदा न करें, श्रद्धा और दृढ़ता में कोई बाधा न डालें, अपमान पर प्रसन्न हों, मृत्यु को प्रसन्नतापूर्वक गले से लगा लें। ऐसी विकराल अवस्थाओं में दृढ़ संकल्प रहने के लिए किसी मित्र की प्रतीक्षा न करें कि वह मेरी कुछ सहायता करे। न उस समय ख़ुदा की शुभ सूचनाओं के अभिलाषी हों कि समय बहुत गंभीर और संवेदनशील है तथा सर्वथा असहाय, विवश और सर्वथा निर्बल होने तथा किसी के द्वारा सांत्वना न मिलने के बावजूद भी सीधे

① सूरह हामीम अस्सजदः - 31-32

खड़े हो जाएं और जो भी हो कह कर गर्दन को आगे रख दें तथा ख़ुदा की इच्छा के आगे वाद-विवाद न करें तथा बेचैनी एवं चीत्कार का प्रदर्शन न करें जब तक कि परीक्षा पूर्ण न हो जाए यही दृढ़ता है जिससे ख़ुदा मिलता है, यही वह वस्तु है जिसकी रसूलों, नबियों, ऋषियों तथा शहीदों की धूल से अब तक सुगन्ध आ रही है। इसी की ओर अल्लाह तआला इस दुआ में संकेत कर रहा है :-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ①

अर्थात् हे हमारे ख़ुदा ! हमें सीधा मार्ग दिखा। वही मार्ग जिस पर तेरा पुरस्कार होता है और तू प्रसन्न हो जाता है। एक अन्य कथन में इसी की ओर संकेत है :-

رَبَّنَاۤ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّتَوَفَّنَا مُسۡلِمِيۡنَ ②

हे हमारे प्रतिपालक ख़ुदा ! इस संकट में हमारे हृदय में संतोष उतार जिस से धैर्य आ जाए और ऐसा कर कि हमारी मृत्यु इस्लाम पर हो।

ज्ञात होना चाहिए कि दुःखों और कष्टों के समय में ख़ुदा तआला अपने प्रिय भक्तों के हृदय पर एक प्रकाश उतारता है, जिससे शक्ति पाकर कष्टों के साथ संघर्ष करने में उन्हें संतोष प्राप्त होता है तथा वे विश्वास की मधुरता में उन बेड़ियों को चूमते हैं जो ख़ुदा के मार्ग में उनके पैरों में डाली गईं।

जब ख़ुदा वाले पुरुष (वली) पर विपत्तियां आती हैं तथा मृत्यु के लक्षण प्रकट हो जाते हैं तो वह अपने कृपालु एवं दयालु प्रतिपालक से व्यर्थ का विवाद आरंभ नहीं करता कि मुझे इन विपत्तियों से बचा क्योंकि उस समय निश्चय ही कुशलता की दुआ में आग्रह करना

---

② सूरह अलफ़ातिहः - 6-7
② सूरह अल-आ'राफ़ - 127

ख़ुदा से युद्ध करने के समान है तथा उसकी पूर्ण सहमति के विरुद्ध है अपितु सच्चा प्रेमी कष्टों और विपत्तियों के आने पर पग और भी आगे बढ़ाता है तथा उस समय प्राणों को तुच्छ समझ कर तथा प्राणों से प्रेम को अन्तिम विदाई देकर पूर्णतया अपने स्वामी की इच्छा के अधीन हो जाता है। इस के संबंध में अल्लाह तआला का कथन है :-

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝[1]

अर्थात् ख़ुदा का प्रिय भक्त ख़ुदा के मार्ग में प्राणों का बलिदान देता है तथा उसके बदले में ख़ुदा तआला की इच्छा ख़रीद लेता है। ये वही लोग हैं जो ख़ुदा तआला की विशेष दया के पात्र हैं। अतः वह दृढ़ता जिससे ख़ुदा मिलता है उसकी भावना यही है जिसका वर्णन किया जा चुका है। जिसको समझना हो समझ ले।

सातवां साधन - मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सदात्मा पुरुषों की संगति तथा उनके पूर्ण आदर्शों को देखना तथा उनका अनुसरण करना है। अतः ज्ञात होना चाहिए कि पैग़म्बरों एवं अवतारों की आवश्यकताओं में से एक यह भी आवश्यकता है कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से पूर्ण आदर्श चाहता है और पूर्ण आदर्श रुचि और साहस को बढ़ाता है तथा जो आदर्श पर नहीं चलता वह मन्दगामी होकर पथ-भ्रष्ट हो जाता है। इसी की ओर अल्लाह तआला ने इस पवित्र कथन में संकेत किया है -

كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ[2]

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ[3]

---

① सूरह अलबक़रह - 208

② सूरह अत्तौबः - 119 ③ सूरह अलफ़ातिहः - 7

अर्थात् तुम उन लोगों की संगति में रहो जो सत्यनिष्ठ हैं तथा उन लोगों के मार्ग सीखो जिन पर तुम से पूर्व कृपा हो चुकी है।

आठवां साधन - मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ख़ुदा तआला की ओर से पवित्र कश्फ़, पवित्र ईशवाणी तथा पवित्र स्वप्न प्राप्त करना है। चूंकि ख़ुदा की ओर यात्रा करना एक अत्यन्त सूक्ष्मतम और कठिन मार्ग है तथा उसके साथ नाना प्रकार की विपत्तियां और दु:ख लगे हुए हैं। संभव है कि मनुष्य इस अज्ञात मार्ग में भटक जाए अथवा निराश हो जाए तथा आगे पग बढ़ाना त्याग दे। इसलिए ख़ुदा की दया ने चाहा कि अपनी ओर से इस यात्रा में साथ ही साथ उसे सांत्वना देती रहे तथा उसके हृदय में साहस पैदा करती रहे और उसकी रुचि में वृद्धि करती रहे। अत: उसका नियम उस मार्ग के यात्रियों के साथ इस प्रकार है कि समय-समय पर अपनी वाणी और इल्हाम से उनको सांत्वना प्रदान करता है तथा उन पर प्रकट करता है कि मैं तुम्हारे साथ हूं। तब वह शक्ति पाकर पूर्ण उत्साहपूर्वक उस यात्रा को पूर्ण करते हैं। अत: इस बारे में ख़ुदा तआला का कथन है :-

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ[1]

इसी प्रकार और भी कई उपाय हैं जिनका पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया है परन्तु खेद कि लेख के लम्बे होने की आशंका के कारण हम उनका वर्णन नहीं कर सकते।

[1] सूरह यूनुस - 65

चौथा प्रश्न

कर्म अर्थात् कर्मों का प्रभाव इस लोक तथा परलोक में क्या होता है ?

इस प्रश्न का उत्तर वही है जो हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि ख़ुदा तआला की सच्ची और पूर्ण शरीअत का प्रभाव जो मानव जीवन में उसके हृदय पर होता है वह यह है कि उसको पाशविक अवस्था से मनुष्य बना दे, फिर इन्सान से शिष्टाचारी इन्सान बना दे और फिर शिष्टाचारी मनुष्य से ख़ुदा वाला मनुष्य बना दे तथा इस जीवन में क्रियात्मक शरीअत का एक प्रभाव यह है कि सच्ची शरीअत पर स्थापित हो जाने से ऐसे व्यक्ति का मानव जाति पर यह प्रभाव होता है कि वह शनैः शनैः उनके अधिकारों को पहचानता है तथा न्याय, उपकार और सहानुभूति की शक्तियों को यथास्थान प्रयोग करता है और ख़ुदा ने उसे जो कुछ ज्ञान, अपनी पहचान, धन और समृद्धि में से भाग दिया है सब लोगों को यथायोग्य उन ने'मतों में भागीदार कर देता है। वह सम्पूर्ण मानव-जाति पर सूर्य के समान अपना समस्त प्रकाश डालता है तथा चन्द्रमा के समान ख़ुदा तआला से प्रकाश पाकर वह प्रकाश दूसरों तक पहुंचाता है, वह दिन के समान प्रकाशमान हो कर लोगों को नेकी और कल्याण के मार्ग दिखाता है, वह रात्रि के समान प्रत्येक निर्बल के दोषों पर पर्दा डालता है तथा थके हुए लोगों को आराम पहुंचाता है, वह आकाश के समान प्रत्येक को अपनी छाया तले स्थान देता है और यथासमय अपनी वरदान-वृष्टि बरसाता है, वह पृथ्वी की भांति पूर्ण

विनय से प्रत्येक व्यक्ति को ऐश्वर्य के लिए बतौर फ़र्श के हो जाता है और सब को अपने प्रेम रूपी आंचल में ले लेता तथा उनके लिए भांति-भांति के आध्यात्मिक मेवे प्रस्तुत करता है। अतः पूर्ण शरीअत का यही प्रभाव है कि पूर्ण शरीअत पर स्थापित होने वाला ख़ुदा और प्रजा के अधिकारों को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा देता है, वह ख़ुदा में खो जाता है और प्रजा का सच्चा सेवक बन जाता है। यह तो क्रियात्मक शरीअत का इस जीवन में उस पर प्रभाव है परन्तु इस जीवन के पश्चात् जो प्रभाव है वह यह है कि ख़ुदा का आध्यात्मिक मिलन उस दिन उसके खुले-खुले दर्शन के तौर पर उसे दिखाई देगा और ख़ुदा की प्रजा की सेवा जो उसने ख़ुदा के प्रेम में होकर की जिसका प्रेरक ईमान और शुभ कर्मों की इच्छा थी वह स्वर्ग के वृक्षों और नहरों की भांति साकार होकर दिखाई देगी। इसमें ख़ुदा तआला का आदेश यह है :-

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ۝ وَالنَّهَارِ اِذَا
جَلّٰهَا ۝ وَ الَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ۝ وَالسَّمَآءِ وَ مَا بَنٰهَا ۝
وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ۝ فَاَلْهَمَهَا
فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ۝ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۝ وَقَدْ خَابَ
مَنْ دَسّٰهَا ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰهَآ ۝ اِذِ انْۢبَعَثَ
اَشْقٰهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَ سُقْيٰهَا ۝
فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ
فَسَوّٰهَا ۝ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝ ①

① सूरह अश्शम्स - 2-16

अर्थात् क़सम है सूर्य और उसके प्रकाश की और क़सम है चन्द्रमा की जो सूर्य के पीछे आए अनुसरण करे। अर्थात् सूर्य से प्रकाश प्राप्त करे और फिर सूर्य के समान उस प्रकाश को दूसरों तक पहुंचा दे और क़सम है दिन की जब वह सूर्य के प्रकाश को दिखा दे और मार्गों को स्पष्ट करे, और क़सम है रात्रि की जब अंधकार करे और अपने अन्धकार के परदे में सब को ले ले और क़सम है आकाश की तथा उस मूल कारण की जो आकाश की इस प्रकार की बनावट का कारण हुआ और क़सम है पृथ्वी की और उस उद्देश्य की जो पृथ्वी के इस प्रकार के बिछौने का कारण हुआ और क़सम है हर प्राण के उस कमाल की जिसने इन सब वस्तुओं के साथ उसे बराबर कर दिया अर्थात् वे कौशल जो पृथक-पृथक तौर पर इन वस्तुओं में पाए जाते हैं। पूर्ण मानव की मनोवृत्ति इन सब को अपने अन्दर एकत्र रखती है और जैसे ये समस्त वस्तुएं मनुष्यों की पृथक-पृथक तौर पर सेवा कर रही हैं। पूर्ण मानव इन समस्त सेवाओं को अकेला करता है जैसा कि मैं अभी उल्लेख कर चुका हूं। पुनः कहता है कि वह व्यक्ति मुक्ति पा गया और मृत्यु से बच गया जिसने इस प्रकार से मनोवृत्ति को पवित्र किया अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी इत्यादि के समान ख़ुदा में लीन होकर ख़ुदा की प्रजा का सेवक बना।

स्मरण रहे कि जीवन से अभिप्राय अनश्वर जीवन है जो भविष्य में पूर्ण मानव को प्राप्त होगा। यह इस बात की ओर संकेत है कि क्रियात्मक शरीअत का फल भावी जीवन में अनश्वर जीवन है जो ख़ुदा के दर्शन रूपी भोजन से हमेशा स्थापित रहेगा। पुनः कहा - वह व्यक्ति तबाह हो गया और जीवन से निराश हो गया जिस ने अपनी मनोवृत्ति को धूल में मिला दिया और उसे जिन कौशलों की योग्यताएं दी गईं थीं उन्हें प्राप्त न किया और अपवित्र जीवन व्यतीत करके वापस गया। फिर उदाहरण के तौर पर कहा - समूद का क़िस्सा उस दुर्भाग्यशाली के क़िस्से के समान है। उन्होंने उस ऊंटनी को घायल किया जो ख़ुदा

की ऊंटनी कहलाती थी और उसे अपने झरने से पानी पीने से रोका। अतः उस व्यक्ति ने वास्तव में ख़ुदा की ऊंटनी को घायल किया और उसे उस झरने से वंचित रखा। यह इस बात की ओर संकेत है कि मनुष्य की मनोवृत्ति ख़ुदा की ऊंटनी है जिस पर वह सवार होता है अर्थात् मनुष्य का हृदय ख़ुदा की झलकियों का प्रकटन स्थल है और उस ऊंटनी का पानी ख़ुदा का प्रेम और उसकी पहचान है जिस से वह जीवित रहती है। पुनः कहा - समूद ने जब ऊंटनी को घायल किया और उसे उसके पानी से रोका तो उन पर अज़ाब उतरा और ख़ुदा तआला ने इस बात की बिल्कुल परवाह न की कि उनके मरने के पश्चात् उनके बच्चों और विधवाओं की क्या दशा होगी। अतः इसी प्रकार जो व्यक्ति उस ऊंटनी अर्थात् मनोवृत्ति को घायल करता है और उसे पूर्णता तक पहुंचाना नहीं चाहता और पानी पीने से रोकता है वह भी तबाह होगा।

पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला की विभिन्न वस्तुओं की क़सम खाने की फ़िलास्फ़ी

यहां यह भी स्मरण रहे कि ख़ुदा का सूर्य और चन्द्रमा आदि की क़सम खाना एक अत्यन्त सूक्ष्म नीति पर आधारित है जिस से हमारे अधिकांश विरोधी अज्ञान होने के कारण आपत्ति कर बैठते हैं कि ख़ुदा को क़समों की क्या आवश्यकता पड़ी और उसने सृष्टि की क्यों क़समें खाईं ? परन्तु उनकी समझ भौतिक है न कि आध्यात्मिक। इसलिए वे सच्चे अध्यात्म ज्ञानों को समझ नहीं सकते। अतः स्पष्ट हो कि क़सम खाने का मूल उद्देश्य यह होता है कि क़सम खाने वाला अपने दावे के लिए एक साक्ष्य प्रस्तुत करना चाहता है, क्योंकि जिस दावे पर अन्य कोई साक्ष्य नहीं होती वह साक्षी के स्थान पर ख़ुदा तआला की क़सम खाता है इसलिए कि ख़ुदा अन्तर्यामी है और प्रत्येक मुक़द्दमे[1] में वह

[1] प्रथम संस्करण में "मुकद्दमे" की बजाए "मक़्सद" लिखा है जो लिखने की भूल विदित होती है जबकि मूल मसौदा और रिपोर्ट में मुक़द्दमः लिखा है जो सही मालूम होता है। (प्रकाशक)

प्रथम साक्षी है। मानो वह ख़ुदा की साक्ष्य इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि यदि ख़ुदा तआला इस क़सम के पश्चात् चुप रहा और उस पर अज़ाब न उतारा तो जैसे उसने उस व्यक्ति के बयान पर गवाहों की भांति मुहर लगा दी। इसलिए सृष्टि को नहीं चाहिए कि दूसरी सृष्टि की क़सम खाए, क्योंकि सृष्टि अन्तर्यामी नहीं और न झूठी क़सम पर दण्ड देने पर समर्थ है, परन्तु ख़ुदा की क़सम इन आयतों में इन अर्थों से नहीं जैसा कि सृष्टि की क़सम में अभिप्राय लिया जाता है वरन् उसमें यह अल्लाह का नियम है कि ख़ुदा के दो प्रकार के कार्य हैं - एक बदीही (नितान्त स्पष्ट) जो सब की समझ में आ सकते हैं और उनमें किसी को मतभेद नहीं। दूसरे वे कार्य जो काल्पनिक हैं जिनमें लोग धोखा खा जाते हैं और परस्पर मतभेद रखते हैं। इसलिए ख़ुदा ने चाहा कि नितान्त स्पष्ट कार्यों की साक्ष्य से काल्पनिक कार्यों को लोगों की दृष्टि में प्रमाणित करे।

अतः यह तो स्पष्ट है कि सूर्य, चन्द्रमा, दिन-रात तथा आकाश और पृथ्वी में वे विशेषताएं वास्तव में पाई जाती हैं जिन का हम वर्णन कर चुके हैं परन्तु जो इस प्रकार की विशेषताएं मनुष्य की प्राणवायु में विद्यमान हैं उन से प्रत्येक व्यक्ति अवगत नहीं। इसलिए ख़ुदा ने अपने नितान्त स्पष्ट कार्यों को खोलने के लिए बतौर गवाह के काल्पनिक कार्यों को प्रस्तुत किया है। जैसा कि उसका कथन है कि यदि तुम इन विशेषताओं के प्रति सन्देह में हो जो मानव प्राणवायु में पाई जाती हैं तो चन्द्रमा और सूर्य आदि पर विचार करो कि उनमें नितान्त स्पष्ट तौर पर ये विशेषताएं मौजूद हैं। तुम जानते हो कि मनुष्य एक लघु संसार है जिसके हृदय में सम्पूर्ण संसार का मानचित्र संक्षिप्त तौर पर अंकित है। अतः जब यह प्रमाणित है कि बृहत्त संसार के बड़े-बड़े ग्रह ये विशेषताएं अपने अन्दर रखते हैं और इसी प्रकार सृष्टियों को लाभ पहुंचा रहे हैं तो मनुष्य जो इन सब से बड़ा कहलाता है और

बड़ी श्रेणी का उत्पन्न किया गया है वह क्योंकर इन विशेषताओं से रिक्त और वंचित होगा। नहीं अपितु उसमें भी सूर्य के समान ज्ञान और बुद्धि का प्रकाश है जिस के माध्यम से वह समस्त संसार को प्रकाशित कर सकता है और चन्द्रमा की भांति वह ख़ुदा तआला से कश्फ़ और इल्हाम तथा वह्यी (ईशवाणी) का प्रकाश पाता है और दूसरों तक जिन्होंने अभी तक मानव कमाल प्राप्त नहीं किया उस प्रकाश को पहुंचाता है। फिर क्योंकर कह सकते हैं कि नुबुव्वत मिथ्या है और समस्त रिसालतें और शरीअतें तथा धार्मिक ग्रन्थ मनुष्य की धोखेबाज़ी और स्वार्थ परायणता है। यह भी देखते हो कि दिन के उदय होने से समस्त मार्ग प्रकाशित हो जाते हैं, समस्त ऊंचे-नीचे स्थान दृष्टिगोचर हो जाते हैं अतः पूर्ण मानव अध्यात्मिक प्रकाश का दिन है उसके चढ़ने से प्रत्येक मार्ग प्रकाशित हो जाता है वह सत्य-मार्ग को दिखा देता है कि कहां और किधर है क्योंकि ईमानदारी और सच्चाई का वही प्रकाशमान दिन है। इसी प्रकार यह भी देख रहे हैं कि रात किस प्रकार थके-हारों को स्थान देती है। सम्पूर्ण दिन के थके और चोट खाए मज़दूर रात्रि के दया रूपी आंचल में प्रसन्नतापूर्वक सोते हैं और परिश्रमों से आराम पाते हैं और रात्रि प्रत्येक के लिए एक प्रकार से पर्दा डालने वाली भी है। इसी प्रकार ख़ुदा के पहुंचे हुए बन्दे संसार को आराम देने के लिए आते हैं। ख़ुदा के वह्यी और इल्हाम पाने वाले समस्त बुद्धिमानों को कठिन परिश्रम और तपस्या से आराम देते हैं, उनके कारण बड़े-बड़े अध्यात्म ज्ञान सरलतापूर्वक हल हो जाते हैं। इसी प्रकार ख़ुदा की वह्यी मानव-बुद्धि के दोषों को छुपाती है जैसा कि रात्रि छुपाती है, उसके अपवित्र दोषों को संसार पर प्रकट नहीं होने देती क्योंकि बुद्धिमान लोग वह्यी के प्रकाश को पाकर अन्दर ही अन्दर अपनी भूलों का सुधार कर लेते हैं और ख़ुदा के पवित्र इल्हाम की बरकत से स्वयं को अपने दोषों को सार्वजनिक होने से बचा लेते हैं। यही कारण है कि अफ़्लातून की तरह

इस्लाम के किसी दार्शनिक ने किसी मूर्ति पर मुर्ग़े की बलि नहीं चढ़ाई। चूंकि अफ़्लातून इल्हाम के प्रकाश से वंचित था, इसलिए धोखा खा गया और ऐसा दार्शनिक कहला कर उससे यह घृणित और मूर्खतापूर्ण कृत्य हुआ। परन्तु इस्लाम के दार्शनिकों को इस प्रकार के अपवित्र और मूर्खतापूर्ण कृत्यों से हमारे परम प्रिय रसूल करीम[स.अ.व.] के अनुसरण ने बचा लिया। अतः देखो कैसा प्रमाणित हुआ कि इल्हाम बुद्धिमानों के लिए रात्रि के समान दोष छुपाने का कार्य करता है।

आप लोग यह भी जानते हैं कि ख़ुदा के पहुंचे हुए बन्दे आकाश के समान प्रत्येक थके हुए बन्दे को अपनी छत्रछाया में ले लेते हैं, विशेष तौर पर पवित्र हस्ती (ख़ुदा) के अंबिया और इल्हाम पाने वाले सामान्यतया आकाश के समान वरदान की वर्षा बरसाते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी की विशेषता भी अपने अन्दर रखते हैं। उनकी पवित्र हस्ती से भिन्न-भिन्न प्रकार के उच्च ज्ञानों के वृक्ष निकलते हैं जिन की छाया और फल तथा फूलों से लोग लाभ प्राप्त करते हैं। अतः यह खुला खुला प्रकृति का नियम है जो हमारी दृष्टि के समक्ष है उसी गुप्त नियम का एक साक्षी है जिसकी साक्ष्य को ख़ुदा तआला ने इन आयतों में क़स्मों के रूप में प्रस्तुत किया है। अतः देखो कि यह कितनी नीतिसंगत वाणी है जो पवित्र क़ुर्आन में पाई जाती है। यह उसके मुख से निकली है जो एक अनपढ़ और जंगल में रहने वाला था। यदि यह ख़ुदा की वाणी न होती तो इस प्रकार सामान्य बुद्धि वाले और वे समस्त लोग जो शिक्षित कहलाते हैं उसके अध्यात्म ज्ञान के इस सूक्ष्म रहस्य को समझने से असमर्थ होकर आरोप के रूप में उसे न देखते। यह सामान्य सी बात है कि मनुष्य जब एक बात को किसी पहलू से भी अपनी अल्प बुद्धि के साथ नहीं समझ सकता, तब एक बुद्धिमत्तापूर्ण बात को आरोप के योग्य ठहरा लेता है और उसका आरोप इस बात का साक्षी हो जाता है कि वह बुद्धिमत्तापूर्ण रहस्य

सामान्य बुद्धि स्तरों से श्रेष्ठ और उच्चतम था। तभी तो बुद्धिमानों ने बुद्धिमान कहला कर फिर भी उस पर आपत्ति की। परन्तु अब जब कि यह भेद खुल गया तो अब इस के पश्चात् कोई बुद्धिमान इस पर आपत्ति खड़ी नहीं करेगा अपितु उस से आनंद प्राप्त करेगा।

स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन ने वह्यी और इल्हाम के अनादिकालीन नियम पर प्रकृति के नियम से साक्ष्य लाने के लिए एक अन्य स्थान में भी इसी प्रकार की क़सम खाई है और वह यह है :-

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۙ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۙ

اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۙ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝[1]

अर्थात् उस आकाश की क़सम है जिसकी ओर से वर्षा आती है और उस पृथ्वी की क़सम है जो वर्षा से भांति-भांति की सब्ज़ियां निकालती है कि यह क़ुर्आन ख़ुदा की वाणी है और उसी की वह्यी है और यह सत्य और असत्य में फैसला करने वाला है और व्यर्थ तथा निरर्थक नहीं अर्थात् कुसमय नहीं आया वरन् मौसम के मेंह के समान आया है।

अतः ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन के प्रमाण के लिए जो उसकी पवित्र वाणी है एक खुले-खुले प्रकृति के नियम को क़सम के रूप में प्रस्तुत किया अर्थात् प्रकृति के नियम में सदैव यह बात दृष्टिगोचर होती है कि आवश्यकताओं के समय आकाश से वर्षा होती है और पृथ्वी की हरियाली का समस्त आधार आकाशीय वर्षा पर है। यदि आकाश से वर्षा न हो तो शनैः शनैः कुएं भी सूख जाते हैं। अतः पृथ्वी के जल का अस्तित्व भी आकाशीय वर्षा पर निर्भर है। इसी कारण जब भी आकाश से जल की वर्षा होती है तो पृथ्वी के कुओं का जल स्तर ऊपर चढ़

① सूरह अत्तारिक़ - 12-15

आता है। क्यों चढ़ आता है ? उस का यही कारण है आकाशीय जल पृथ्वी के जल को ऊपर की ओर खींचता है। यही संबंध ख़ुदा की वह्यी और मानव बुद्धि में है। ख़ुदा की वह्यी अर्थात् ख़ुदा का इल्हाम आकाश का जल है और मानव बुद्धि पृथ्वी का जल है और यह जल सदैव आकाश के जल से जो इल्हाम है प्रशिक्षण पाता है और यदि आकाशीय जल अर्थात् वह्यी होना बन्द हो जाए तो यह पृथ्वी का जल भी धीरे-धीरे सूख जाता है। क्या इसके लिए यह तर्क पर्याप्त नहीं कि जब एक लम्बा युग गुज़र जाता है और कोई इल्हाम प्राप्त पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता तो बुद्धिमानों की बुद्धि नितान्त विकारग्रस्त हो जाती है जिस प्रकार पार्थिव जल सूख जाता और दूषित हो जाता है। इसे समझने के लिए उस युग पर एक दृष्टि डालना आवश्यक है जो हमारे नबी[स.अ.व.] के प्रादुर्भाव से पूर्व अपना रंग समस्त संसार में दिखा रहा था। चूंकि उस समय हज़रत मसीह के युग पर छः सौ वर्ष गुज़र चुके थे और इस अवधि में कोई इल्हाम पाने वाला पैदा नहीं हुआ था। अतएव समस्त संसार ने अपनी दशा को ख़राब कर दिया था। प्रत्येक देश का इतिहास पुकार-पुकार कर कह रहा है कि हज़रत मुहम्मद साहिब के युग में, परन्तु आप के प्रादुर्भाव से पूर्व समस्त संसार के विचार विकारग्रस्त हो चुके थे। ऐसा क्यों हुआ था और उसका कारण क्या था ? यही तो था कि इल्हाम का क्रम काफी समय तक रुक गया था। आकाशीय शासन केवल बुद्धि के हाथ में था। अतः इस अपूर्ण बुद्धि ने लोगों को किन-किन विकारों में डाला, इसे कौन नहीं जानता। देखो ख़ुदा की वाणी का जल जब लम्बे समय तक नहीं बरसा तो समस्त अक़्लों का जल किस प्रकार सूख गया।

अतः इन क़समों में अल्लाह तआला ने यही प्रकृति का नियम प्रस्तुत किया है और कहा है कि तुम विचार करके देखो कि क्या ख़ुदा का यह सुदृढ़ और अटल प्रकृति का नियम नहीं कि पृथ्वी की सम्पूर्ण

हरियाली का आधार आकाशीय जल है। इसलिए इस गुप्त प्रकृति के नियम के प्रति जो ख़ुदा के इल्हाम का क्रम है यह प्रत्यक्ष प्रकृति का नियम बतौर साक्षी के है। अतः इस साक्षी से लाभ प्राप्त करो और केवल बुद्धि को अपना मार्ग-दर्शक न बनाओ कि वह ऐसा जल नहीं जो आकाशीय जल के अतिरिक्त मौजूद रह सके। जिस प्रकार आकाशीय जल की यह विशेषता है कि उसका जल चाहे किसी कुएं में पड़े या न पड़े वह अपने स्वाभाविक गुण से समस्त कुओं के जल-स्तर को ऊपर चढ़ा देता है। इसी प्रकार जब ख़ुदा की वाणी पाने वाला अवतार संसार में प्रकट होता है चाहे कोई बुद्धिमान उसका अनुसरण करे या न करे, परन्तु उस ख़ुदा की वाणी पाने वाले अवतार के युग में स्वयं सांसारिक बुद्धिजीवियों में ऐसा प्रकाश और शुद्धता आ जाती है कि इससे पूर्व मौजूद न थी। लोग अकारण सत्य को खोजना आरंभ कर देते हैं और परोक्ष से एक गति उनकी विचार-शक्ति में पैदा हो जाती है। अतः यह समस्त बौद्धिक उन्नति और हार्दिक जोश उस ख़ुदा की वाणी पाने वाले के आने से पैदा हो जाता है और विशेषतया पृथ्वी के जलों को ऊपर उठाता है। जब तुम देखो कि धर्मों की जिज्ञासा में प्रत्येक व्यक्ति खड़ा हो गया है और पार्थिव जल में कुछ उबाल आया है तो उठो और सचेत हो जाओ और निश्चय समझो कि आकाश से ज़ोर की वर्षा हुई है और किसी हृदय पर ईशवाणी की वर्षा हो गई है।

पांचवां प्रश्न

ज्ञान एवं आत्म ज्ञान के क्या-क्या साधन हैं ?

इस प्रश्न के उत्तर में स्पष्ट हो कि इस बारे में पवित्र क़ुर्आन ने जितने विस्तार के साथ वर्णन किया है उसकी चर्चा करने की तो यहां किसी प्रकार गुंजायश नहीं परन्तु बतौर नमूना कुछ वर्णन किया जाता है।

अतः विदित होना चाहिए कि क़ुर्आन करीम ने ज्ञान के तीन प्रकार बताएं हैं - (1) इल्मुल यक़ीन (अनुमानित ज्ञान), (2) ऐनुल यक़ीन (दृष्टिगत ज्ञान), (3) हक़्क़ुल यक़ीन (प्रयोगात्मक ज्ञान)। जैसा कि हम इससे पूर्व सूरह अल्हाकोमुत्तकासुर की व्याख्या में वर्णन कर चुके हैं कि इल्मुलयक़ीन वह है कि अभीष्ट वस्तु को किसी माध्यम से सीधे तौर पर ज्ञात किया जाए जैसा कि हम धुएं से अग्नि के अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं परन्तु हमने अग्नि को देखा नहीं परन्तु धुएं को देखा है जिस से हमें अग्नि के अस्तित्व पर विश्वास आया। यह इल्मुल यक़ीन (अनुमान द्वारा ज्ञान) है और यदि हमने अग्नि को ही देख लिया है तो यह पवित्र क़ुर्आन के वर्णन के अनुसार अर्थात् सूरह अल्हाकोमुत्तकासुर के अनुसार ज्ञान की श्रेणियों में से ऐनुल यक़ीन (दृष्टिगत ज्ञान) का नाम दिया है और यदि हम उस अग्नि में प्रवेश भी कर गए हैं तो ज्ञान की इस श्रेणी का नाम पवित्र क़ुर्आन के वर्णन के अनुसार हक़्क़ुल यक़ीन (प्रयोगात्मक ज्ञान) है। सूरह अल्हाकोमुत्तकासुर को अब दोबारा लिखने की आवश्यकता नहीं। दर्शकगण उस स्थान से इस व्याख्या को देख लें।

अतः जानना चाहिए कि प्रथम प्रकार का ज्ञान अर्थात् इल्मुल यक़ीन उसका साधन बुद्धि और सुनी हुई बातें हैं। अल्लाह तआला

नारकियों लोगों को एक वृत्तान्त के रूप में कहता है :-

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ [1]

अर्थात् नारकी कहेंगे कि यदि हम बुद्धिमान होते और धर्म तथा आस्था को उचित उपायों से आज़माते या पूर्ण बुद्धिमानों और अन्वेषकों के लेखों तथा भाषणों को ध्यानपूर्वक सुनते तो आज नर्क में न पड़ते। यह आयत इस दूसरी आयत के अनुकूल है जहां अल्लाह तआला का कथन है :-

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا [2]

अर्थात् अल्लाह तआला मनुष्यों को उनके ज्ञान की क्षमता से अधिक किसी बात को स्वीकार करने के लिए कष्ट नहीं देता और वही आस्थाएं प्रस्तुत करता है जिनका समझना मनुष्य की योग्यता की सीमा में है ताकि उसके आदेश मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर न हों।

इन आयतों में इस बात की ओर भी संकेत है कि मनुष्य कानों के माध्यम से भी अनुमानित ज्ञान प्राप्त कर सकता है। उदाहरणतया हमने लन्दन तो नहीं देखा केवल देखने वालों से उस शहर का अस्तित्व सुना है, परन्तु क्या हम सन्देह कर सकते हैं कि कदाचित उन सब ने झूठ बोल दिया होगा या उदाहरण के तौर पर हमने विश्वव्यापी सम्राट का युग नहीं पाया और न विश्वव्यापी का मुख देखा है, परन्तु क्या हमें इस बात में कुछ भी सन्देह है कि आलमगीर चुग़ताई सम्राटों में से एक सम्राट था। अतः ऐसा विश्वास क्यों प्राप्त हुआ ? इसका उत्तर यही है कि केवल सुनने की निरन्तरता से। अतः इसमें सन्देह नहीं कि सुनना भी अनुमानित ज्ञान की श्रेणी तक पहुंचाता है। नबियों के धर्म ग्रन्थ यदि

---

[1] सूरह अलमुल्क - 11

[2] सूरह अलबक़रह - 287

सुनने के क्रम में कुछ विघ्न न रखते हों तो वे भी सुने हुए ज्ञान का एक साधन है, परन्तु यदि एक धर्मग्रन्थ परमेश्वर का ग्रन्थ कहला कर फिर उदाहरणतया उसकी पचास-साठ प्रतियां पाई जाएं और वे एक दूसरे की विरोधी हों तो यद्यपि किसी सदस्य ने विश्वास भी कर लिया हो कि उनमें से दो चार सही और वास्तविक हैं और शेष बनावटी और जाली, परन्तु अन्वेषक के लिए ऐसा ज्ञान जो किसी पूर्ण अन्वेषण पर आधारित नहीं, निरर्थक होगा और परिणाम यह होगा कि वे सब धर्मग्रन्थ अपने विरोधाभास के कारण रद्दी और अविश्वसनीय ठहरेंगे और कदापि वैध नहीं होगा कि ऐसे विरोधाभासी वर्णनों को किसी ज्ञान का साधन समझा जाए, क्योंकि ज्ञान की परिभाषा यह है कि वह एक विश्वसनीय अध्यात्म ज्ञान प्रदान करे और विरोधाभासों से भरे धर्मग्रन्थों में विश्वसनीय अध्यात्म ज्ञान का पाया जाना संभव नहीं।

यहां स्मरण रहे पवित्र क़ुर्आन केवल सुनने की सीमा तक सीमित नहीं है क्योंकि उसमें मनुष्यों के समझाने के लिए बड़े उचित और अकाट्य तर्क हैं और जितनी आस्थाएं, सिद्धान्त और आदेश उसने प्रस्तुत किए हैं उनमें से कोई भी ऐसी बात नहीं जिसमें आग्रह एवं बल प्रयोग किया गया हो जैसा कि उसने स्वयं कहा है कि ये सब आस्थाएं आदि मानव-स्वभाव में पूर्व से अंकित हैं और पवित्र क़ुर्आन का नाम "**ज़िक्र**" रखा है। जैसा कि उसका कथन है -

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ ①

अर्थात् यह क़ुर्आन बरकत वाला कोई नई वस्तु नहीं लाया अपितु जो कुछ मानव-स्वभाव और सृष्टि में भरा पड़ा है उसे स्मरण कराता है। पुनः एक स्थान पर कहता है :-

لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ②

① सूरह अलअंबिया - 51 ② सूरह अलबक़रह - 257

अर्थात् यह धर्म कोई बात बलात् मनवाना नहीं चाहता अपितु प्रत्येक बात के तर्क प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त पवित्र क़ुर्आन में हृदयों को प्रकाशित करने के लिए एक अध्यात्मिक विशेषता भी है जैसा कि उसका कथन है :-

شِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ①

अर्थात् पवित्र क़ुर्आन अपने अलौकिक अदभुत गुणों से समस्त रोगों को दूर करता है इसलिए इसे कहीं से नक़ल की हुई किताब नहीं कह सकते वरन् वह अपने साथ उच्च कोटि के अकाट्य तर्क रखता और उसमें एक चमकता हुआ प्रकाश पाया जाता है। इसी प्रकार बौद्धिक तर्क जो उचित भूमिकाओं से निकले हुए हों निःसन्देह इल्मुलयक़ीन (अनुमानित ज्ञान) तक पहुंचाते हैं। इसी की ओर अल्लाह तआला निम्नलिखित आयतों में संकेत करता है। जैसा कि उसका कथन है :-

اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ۝ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ ②

अर्थात् जब मनीषी और बुद्धिमान लोग पृथ्वी और आकाश के ग्रहों की बनावट में विचार करते और रात-दिन की न्यूनाधिकता के कारणों को सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं। तो उन्हें इस व्यवस्था पर दृष्टि

① सूरह यूनुस - 58

② सूरह आले इमरान - 191-192

डालने से ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर प्रमाण मिलता है। अतः वह अधिक प्रकटन के लिए ख़ुदा से सहायता चाहते हैं और उसे खड़े होकर, बैठ कर, करवट पर लेटकर स्मरण करते हैं जिस से उनकी बुद्धि शुद्ध एवं कुशाग्र हो जाती हैं। अतः जब वे अपने विवेक के माध्यम से आकाश और पृथ्वी के ग्रहों की उत्तम और श्रेष्ठ रचना पर विचार करते हैं तो सहसा बोल उठते हैं कि ऐसी उत्तम और सुदृढ़ व्यवस्था कदापि मिथ्या और व्यर्थ नहीं अपितु वास्तविक रचयिता का चेहरा दिखा रही है। अतः वे संसार के रचयिता के उपास्य होने का इक़रार करके यह स्तुतिगान करते हैं कि हे मेरे ख़ुदा ! तू इससे पवित्र है कि कोई तेरे अस्तित्व से इन्कार करे तुझे अधम विशेषताओं से प्रशंसित करे। अतः तू हमें नरकाग्नि से बचा ले अर्थात् तुझ से इन्कार करना साक्षात नर्क है और समस्त आराम और शान्ति तुझ में और तुझे पहचानने में है। जो व्यक्ति तेरी सच्ची पहचान से वंचित रहा वह वास्तव में इसी संसार में अग्नि में है।

मानव प्रकृति की वास्तविकता

इसी प्रकार एक ज्ञान के द्वारा मानव अन्तरात्मा भी है जिसका नाम ख़ुदा की किताब में मानव स्वभाव रखा है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَیْهَا[1]

अर्थात् ख़ुदा का स्वभाव जिस के अनुरूप मनुष्य की उत्पत्ति हुई है वह स्वरूप क्या है ? यही है कि ख़ुदा तआला को एक भागीदाररहित, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्रष्टा, जन्म-मरण से पवित्र समझना और हम अन्तरात्मा को अनुमानित ज्ञान की श्रेणी पर इसलिए कहते हैं कि यद्यपि प्रत्यक्ष तौर पर उसमें एक ज्ञान से दूसरे ज्ञान की ओर जाना

① सूरह अर्रूम - 31

नहीं जाता जैसा कि धुएं के ज्ञान से अग्नि के ज्ञान की ओर जाना पाया जाता है, परन्तु एक प्रकार के सूक्ष्म तौर पर जाना इसमें अवश्य पाया जाता है और वह यह है कि प्रत्येक वस्तु में ख़ुदा ने एक अज्ञात विशेषता रखी है जो मौखिक या लिखित तौर पर वर्णन नहीं की जा सकती किन्तु उस वस्तु पर दृष्टि डालने और उसकी कल्पना करने से अविलम्ब उस विशेषता की ओर मस्तिष्क चला जाता है। अतः वह विशेषता उस अस्तित्व को ऐसी अनिवार्य होती है जैसा कि अग्नि को धुआं अनिवार्य है। उदाहरणतया जब हम ख़ुदा तआला की हस्ती की ओर ध्यान देते हैं कि कैसी होनी चाहिए, क्या ख़ुदा ऐसा होना चाहिए कि हमारे समान पैदा हो और हमारी तरह दुःख उठाए और हमारे समान मृत्यु को प्राप्त हो तो हमारा हृदय तुरन्त इस कल्पना से दुखता और अन्तरात्मा कांपती है और इतनी उत्तेजना दिखाती है कि जैसे उस विचार को धक्के देती है और कह उठती है कि वह ख़ुदा जिसकी शक्तियों पर सम्पूर्ण आशाओं का आधार है वह समस्त हानियों से पवित्र, पूर्ण और दृढ़ चाहिए और हमारे हृदय में जब भी ख़ुदा का विचार आता है तो उसी समय एकेश्वरवाद और ख़ुदा में धुएं और अग्नि की भांति अपितु उससे भी अधिक पूर्ण सेविकाई का आभास होता है। इसलिए जो ज्ञान हमें हमारी अन्तरात्मा के द्वारा ज्ञात होता है वह आनुमानित ज्ञान की श्रेणी में सम्मिलित है परन्तु इस पर एक और श्रेणी है जो दृष्टिगत ज्ञान कहलाती है। इस श्रेणी से इस प्रकार का ज्ञान अभिप्राय है कि जब हमारे विश्वास और उस वस्तु में जिस पर किसी प्रकार का विश्वास किया गया है तथा मध्य में कोई माध्यम न हो। उदाहरणतया जब हम घ्राण शक्ति (सूंघने की शक्ति) के माध्यम से एक सुगंध या दुर्गन्ध को मालूम करते हैं और या हम स्वाद शक्ति के माध्यम से मधुर या नमकीन स्वाद का ज्ञान प्राप्त करते हैं या स्पर्श शक्ति के माध्यम से गर्म या सर्द को मालूम करते हैं तो

यह समस्त जानकारियां हमारे देखे हुए ज्ञान के प्रकार में सम्मिलित हैं परन्तु परलोक के विषय में हमारा दर्शनशास्त्र तब दृष्टिगत ज्ञान की सीमा तक पहुंचता है कि जब हम सीधे तौर पर इल्हाम पाएं, ख़ुदा की आवाज़ को अपने कानों से सुनें और ख़ुदा के साफ और सही कश्फ़ों को अपनी आंखों से देखें। हम नि:सन्देह पूर्ण अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त करने के लिए बिना किसी माध्यम के इल्हाम के मुहताज हैं और हम इस पूर्ण अध्यात्म ज्ञान की अपने हृदय में भूख और प्यास भी पाते हैं। यदि ख़ुदा तआला ने हमारे लिए पहले से इस अध्यात्म ज्ञान का सामान उपलब्ध नहीं किया तो हमें यह प्यास और भूख क्यों लगा दी है। क्या हम इस जीवन में जो हमारे परलोक के भण्डार के लिए यही मापदण्ड है इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि हम उस सत्य, सबल, सम्पूर्ण और सजीव ख़ुदा पर केवल क़िस्से और कहानियों के रूप में ईमान लाएं अथवा मात्र बौद्धिक ज्ञान को ही पर्याप्त समझें जो अब तक अपूर्ण और अधूरा ज्ञान है। क्या ख़ुदा के सच्चे प्रेमियों और वास्तविक अनुरागियों का हृदय नहीं चाहता कि उस प्रियतम की वाणी का आनन्द प्राप्त करें ? क्या जिन्होंने ख़ुदा के लिए समस्त संसार को ठोकर मार दी, हृदय दिया, प्राणों को दिया, वे इस बात पर प्रसन्न हो सकते हैं कि केवल एक धूमिल प्रकाश में खड़े रह कर मरते रहें और उस सत्य के सूर्य के दर्शन न करें ? क्या यह सत्य नहीं है कि उस सजीव ख़ुदा का अनलमौजूद (मैं मौजूद हूं) कहना अध्यात्म ज्ञान की वह श्रेणी प्रदान करता है कि यदि संसार के समस्त दार्शनिकों की स्वरचित पुस्तकें एक ओर रखें और एक ओर ख़ुदा का "अनलमौजूद" कहना रखें तो इसके सम्मुख वे समस्त पुस्तकें अधम और तुच्छ हैं। अत: जो दार्शनिक कहला कर अंधे रहे वे हमें क्या शिक्षा देंगे। यदि ख़ुदा तआला के सत्याभिलाषियों को पूर्ण अध्यात्म ज्ञान देने का इरादा किया है तो उसने अवश्य ही अपने वार्तालाप तथा सम्बोधनों का मार्ग खुला

रखा है। इस बारे में पवित्र क़ुर्आन यह कहता है :-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ①

अर्थात् हे ख़ुदा हमें वह सीधा मार्ग बता जो मार्ग उन लोगों का है जिन पर तेरा इनाम हुआ है।

यहां इनाम से अभिप्राय इल्हाम और कश्फ़ आदि अध्यात्मिक ज्ञान है जो मनुष्य को सीधे तौर पर मिलते हैं। इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर कहता है :-

اِنَّ الَّذِيۡنَ قَالُوۡا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوۡا وَلَا تَحۡزَنُوۡا وَاَبۡشِرُوۡا بِالۡجَنَّةِ الَّتِىۡ كُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ ②

अर्थात् जो लोग ख़ुदा पर ईमान लाकर पूर्ण रूप से दृढ़ रहते हैं उन पर ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते उतरते हैं और ये उनको इल्हाम करते हैं कि तुम किसी प्रकार का भय और शोक न करो। तुम्हारे लिए वह स्वर्ग है जिसके बारे में तुम्हें वादा दिया गया है। ख़ुदा के सदाचारी लोग शोक और भय के समय ख़ुदा के इल्हाम पाते हैं और फ़रिश्ते उतर कर उनको धैर्य देते हैं। फिर एक अन्य आयत में कहा है :-

لَهُمُ الۡبُشۡرٰى فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَفِى الۡاٰخِرَةِ ③

अर्थात् ख़ुदा के प्रिय लोगों को इल्हाम और ख़ुदा के वार्तालाप द्वारा इस संसार में शुभ सन्देश मिलता है और परलोक में भी मिलेगा।

① सूरह अलफ़ातिह: - 6-7

② सूरह हाम मीम अस्सज्दह - 31

③ सूरह यूनुस - 65

इल्हाम से क्या अभिप्राय है ?

स्मरण रहे कि यहां इल्हाम के शब्द से यह अभिप्राय नहीं है कि स्वकल्पित विचारों से कोई बात हृदय में पड़ जाए जैसा कि जब कवि दोहा बनाने का प्रयास करता है अथवा एक पंक्ति बना कर दूसरी सोचता रहता है तो उसके हृदय में दूसरी पंक्ति पड़ जाती है। अतः इस प्रकार से हृदय में पड़ जाना ईशवाणी (इल्हाम) नहीं है अपितु यह ख़ुदा के प्रकृति के नियम के अनुसार अपनी सोच-विचार का एक परिणाम है। जो व्यक्ति अच्छी बातें सोचता है या बुरी बातों के लिए विचार करता है उसकी खोज के अनुसार उसके हृदय में कोई बात अवश्य पड़ जाती है। एक व्यक्ति उदाहरणतया नेक और सच्चा व्यक्ति है जो सच्चाई के समर्थन में कुछ दोहे बनाता है और दूसरा व्यक्ति जो एक गन्दा और अपवित्र व्यक्ति है अपने दोहों में झूठ का समर्थन करता है और सच्चों को गालियां निकालता है तो निःसन्देह ये दोनों कुछ न कुछ दोहे बना लेंगे अपितु कुछ आश्चर्य नहीं वह सच्चे का शत्रु जो झूठ का समर्थन करता है स्थायी अभ्यास के कारण उसका दोहा उत्तम हो। इसलिए यदि केवल हृदय में पड़ जाने का नाम इल्हाम है तो फिर एक बदमाश कवि जो सत्य और ईमानदारों का शत्रु और हमेशा सत्य के विरोध के लिए लेखनी उठाता और झूठ बनाने से काम लेता है ख़ुदा का इल्हाम पाने वाला कहलाएगा। संसार में उपन्यासों आदि में वर्णन शैली में जादुई प्रभाव पाए जाते हैं और तुम देखते हो कि इस प्रकार के सर्वथा असत्य परन्तु निरन्तर लेख लोगों के हृदयों में पड़ते हैं। क्या हम उनको इल्हाम कह सकते हैं ? वरन् यदि इल्हाम केवल हृदय में कुछ बातें पड़ जाने का नाम है तो एक चोर भी इल्हाम पाने वाला कहला सकता है, क्योंकि वह प्रायः विचार करके सेंध लगाने के अच्छे-अच्छे उपाय निकाल लेता है और डाका मारने तथा निर्दोष का ख़ून करने की उत्तम युक्तियां उसके हृदय में गुज़र जाती हैं तो क्या यह उचित है कि हम इन समस्त अपवित्र

उपायों का नाम इल्हाम रख दें ? कदापि नहीं। अपितु यह उन लोगों का विचार है जिन को अब तक सच्चे ख़ुदा की ख़बर नहीं जो स्वयं विशेष वार्तालाप से हृदयों को सांत्वना देता और अज्ञानों को अध्यात्मिक ज्ञानों से अपनी पहचान प्रदान करता है। इल्हाम (ईशवाणी) क्या वस्तु है ? वह पवित्र और सामर्थ्यवान ख़ुदा का एक उसी के द्वारा चुने हुए बन्दे के साथ, उसके साथ जिसे वह चुनना चाहता है एक जीवित और शक्तिशाली वाणी के साथ वार्तालाप और सम्बोधन है। अतः जब यह वार्तालाप एवं सम्बोधन पर्याप्त और सन्तोषजनक क्रम के साथ आरंभ हो जाए और उसमें दूषित विचार सम्मिलित न हों और न अपूर्ण और निरर्थक शब्द हों और कलाम आनंदमय, नीतिसंगत और वैभवशाली हो तो वह ख़ुदा का कलाम है जिस से वह अपने बन्दे को सांत्वना देना चाहता है और स्वयं को उस पर प्रकट करता है। हां कभी एक वार्तालाप मात्र परीक्षा के तौर पर होता है और ऐसा वार्तालाप पूर्ण रूप से तथा कल्याणकारी सामान साथ नहीं रखता। इसमें ख़ुदा तआला के बन्दे को उसकी प्रारंभिक अवस्था में परखा जाता है ताकि वह इल्हाम का थोड़ा सा स्वाद लेकर फिर निश्चित तौर पर अपना कर्म और कथन इल्हाम पाने वालों के समान बनाए या ठोकर खाए। अतः यदि वह वास्तविक ईमानदारी सत्यनिष्ठों के समान नहीं अपनाता तो उस ने'मत की विशेषता से वंचित रह जाता है और केवल निरर्थक शेखी बघारना उसके हाथ में होता है। करोड़ों नेक बन्दों को इल्हाम होता रहा है परन्तु उनका पद ख़ुदा के निकट एक स्तर का नहीं, वरन् ख़ुदा के पवित्र नबी जो प्रथम श्रेणी पर पूर्ण शुद्धता से ख़ुदा का इल्हाम पाने वाले हैं वे भी पद में समान नहीं। ख़ुदा तआला का कथन है :-

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ [1]

अर्थात् कुछ नबियों को कुछ नबियों पर श्रेष्ठता है। इससे सिद्ध

[1] सूरह अलबक़र: - 254

होता है कि इल्हाम मात्र कृपा है और श्रेष्ठता के होने में इसको कोई हस्तक्षेप नहीं अपितु श्रेष्ठता उस श्रद्धा, निष्ठा और वफ़ादारी के महत्त्व पर आधारित है जिसे ख़ुदा जानता है। हां इल्हाम भी यदि अपनी बरकत वाली शर्तों के साथ हो तो वह भी उनका एक फल है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यदि इल्हाम इस रूप में हो कि मनुष्य एक प्रश्न करता है और ख़ुदा उसका उत्तर देता है। इसी प्रकार एक क्रम के साथ प्रश्नोत्तर हो और ख़ुदाई वैभव तथा अलौकिक प्रकाश इल्हाम में पाया जाए तथा परोक्ष के ज्ञान अथवा शुद्ध अध्यात्म ज्ञानों पर आधारित हो तो वह ख़ुदा का इल्हाम है। ख़ुदा के इल्हाम में यह आवश्यक है कि जिस प्रकार एक मित्र दूसरे मित्र से मिलकर परस्पर बातचीत करता है इसी प्रकार रब्ब और उनके बन्दे में परस्पर बातचीत हो और जब वह किसी बात में प्रश्न करे तो उसके उत्तर में एक आनन्ददायक और सुबोध कलाम ख़ुदा तआला की ओर से सुने जिसमें अपनी मनोवृत्ति और सोच-विचार का कुछ भी अंश न हो और वह वार्तालाप एवं सम्बोधन उसके लिए दान रूप में हो जाए तो वह ख़ुदा का कलाम है और ऐसा बन्दा ख़ुदा के समक्ष प्रिय है, परन्तु इस श्रेणी का इल्हाम जो ख़ुदा की ओर से अलौकिक दान हो और सजीव तथा पवित्र इल्हाम का क्रम अपने बन्दे को ख़ुदा से प्राप्त हो और शुद्धता तथा पवित्रता के साथ हो, यह पुरस्कार उन लोगों के अतिरिक्त किसी को नहीं मिलता जो ईमान, वफ़ादारी और शुभ कर्मों में उन्नति करें तथा उन क्षेत्रों में जिस का हम वर्णन नहीं कर सकते, सच्चा और पवित्र इल्हाम ख़ुदा की प्रतिष्ठा के बड़े-बड़े चमत्कार दिखाता है। बहुधा एक अत्यन्त चमकदार प्रकाश उत्पन्न होता है तथा उसके साथ ही एक वैभवपूर्ण और चमकदार इल्हाम आता है। इस से बढ़कर और क्या होगा कि इल्हाम पाने वाला उस हस्ती से बातें करता है जो धरती और आकाश का स्रष्टा है। संसार में ख़ुदा का दर्शन यही है कि वह

ख़ुदा से बातें करे परन्तु हमारे इस वर्णन में मनुष्य की वह अवस्था सम्मिलित नहीं है कि किसी की जीभ पर बे ठिकाना कोई शब्द या वाक्य या दोहा जारी हो और उसके साथ कोई वार्तालाप या सम्बोधन न हो अपितु ऐसा व्यक्ति ख़ुदा की परीक्षा में गिरफ़्तार है क्योंकि ख़ुदा इस ढंग से भी सुस्त और लापरवाह बन्दों की परीक्षा लेता है कि कभी कोई वाक्य या इबारत किसी के हृदय पर या जीभ पर जारी की जाती है और वह व्यक्ति अन्धे के समान हो जाता है। नहीं जानता कि वह इबारत कहां से आई। ख़ुदा से या शैतान से। अतः ऐसे वाक्यों से क्षमायाचना आवश्यक है परन्तु यदि एक सदात्मा और नेक बन्दे को बिना किसी पर्दे के ख़ुदा का वार्तालाप आरंभ हो जाए तथा सम्बोधन और वार्तालाप के तौर पर एक प्रकाशमान, आनन्ददायक, सार्थक, नीतिसंगत वाणी पूर्ण वैभव के साथ उसे सुनाई दे और कम से कम अनेकों बार उसे ऐसा संयोग हुआ हो कि ख़ुदा में और उसमें बिल्कुल जागने की अवस्था में दस बार प्रश्नोत्तर हुआ हो। उसने प्रश्न किया और ख़ुदा ने उत्तर दिया फिर उसी समय बिल्कुल जागने की अवस्था में उसने कुछ और कहा और ख़ुदा ने उसका भी उत्तर दिया। फिर सविनय निवेदन किया ख़ुदा ने उसका भी उत्तर दिया। इसी प्रकार दस बार तक ख़ुदा में और उसमें बातें होती रहीं और ख़ुदा ने अनेकों बार उसकी दुआएं स्वीकार की हों। उत्तम एवं श्रेष्ठ अध्यात्म ज्ञानों पर उसे सूचित किया हो, भावी घटनाओं से अवगत किया हो और अपने सुस्पष्ट वार्तालाप से बार-बार के प्रश्नोत्तर में उसे सम्मानित किया हो तो ऐसे व्यक्ति को ख़ुदा तआला का नितान्त कृतज्ञ होना चाहिए, क्योंकि ख़ुदा ने मात्र अपनी कृपा से अपने समस्त बन्दों में से उसे चुन लिया और उन सदात्माओं का उसे उत्तराधिकारी बना दिया जो उससे पूर्व गुज़र चुके हैं। यह ने'मत नितान्त दुर्लभ और सौभाग्य की बात है जिसे यह प्राप्त हुई उसके पश्चात् जो कुछ है तुच्छ है।

इस्लाम की विशेषता

इस पद और श्रेणी के लोग इस्लाम में सदैव जन्म लेते रहे हैं तथा एक इस्लाम ही है जिसमें ख़ुदा बन्दे के निकट होकर उस से बातें करता, वह उसके अन्दर बोलता है और उसके हृदय में अपना आसन बनाता और उसके अन्दर से उसे आकाश की ओर खींचता है और उसे वे समस्त ने'मतें प्रदान करता है जो पहलों को प्रदान की गईं। खेद है कि अंधा संसार नहीं जानता कि मनुष्य निकट होते-होते कहां तक पहुंच जाता है वे स्वयं तो क़दम नहीं उठाते और यदि जो क़दम उठाए तो या तो उस को काफ़िर ठहराया जाता है और या उसे उपास्य ठहरा कर ख़ुदा का स्थान दे दिया जाता है। ये दोनों कृत्य अन्याय हैं एक अधिकता की सीमा से बाहर जाने से और दूसरा न्यूनता की सीमा के बाहर जाने से पैदा हुआ परन्तु मनीषी को चाहिए कि वह निरुत्साहित न हो तथा उस स्थान और उस पद का इन्कारी न रहे और उस पद वाले का अपमान न करे और न उसकी पूजा आरंभ कर दे। इस पद पर ख़ुदा तआला उस बन्दे से वे संबंध प्रकट करता है कि जैसे अपनी ख़ुदाई की चादर उस पर डाल देता है और ऐसा व्यक्ति ख़ुदा के देखने का दर्पण बन जाता है। यही रहस्य है जो हमारे नबी[स.अ.व.] ने कहा कि जिस ने मुझे देखा ख़ुदा को देख लिया। इसलिए बन्दे के लिए यह बहुत बड़ी चेतावनी है और उस पर समस्त साधनाएं समाप्त हो जाती हैं और पूर्ण संतोष प्राप्त होता है।

वक्ता का ख़ुदा के वार्तालाप एवं सम्बोधन से सम्मानित होना

मानव जाति पर यह बहुत बड़ा अन्याय होगा यदि मैं इस समय प्रकट न करूं कि वह पद जिसकी मैंने ये परिभाषाएं की हैं और वह वार्तालाप और सम्बोधन का पद जिसकी अभी मैंने व्याख्या की है वह सब कुछ मुझे ख़ुदा की कृपा ने प्रदान किया है ताकि मैं अन्धों को

आंखों से देखने की शक्ति प्रदान करूं और ढूंढने वालों को उस खोए हुए का पता दूं और सच्चाई को स्वीकार करने वालों को उस पवित्र झरने की ख़ुशख़बरी सुनाऊं जिसकी चर्चा बहुतों में है और पाने वाले थोड़े हैं। मैं श्रोताओं को विश्वास दिलाता हूं कि वह ख़ुदा जिसके मिलने में मनुष्य की मुक्ति और अनश्वर समृद्धि है वह पवित्र क़ुर्आन के अनुसरण के अतिरिक्त अन्यत्र कदापि नहीं मिल सकती। काश जो मैंने देखा है लोग देखें और जो मैंने सुना है वह लोग सुनें और कहानियों को छोड़ दें तथा वास्तविकता की ओर दौड़ें। वह पूर्ण ज्ञान का साधन जिस से ख़ुदा दिखाई देता है, वह मैल उतारने वाला जल जिससे समस्त सन्देह दूर हो जाते हैं, वह दर्पण जिससे उस श्रेष्ठतम हस्ती के दर्शन हो जाते हैं, ख़ुदा का वह वार्तालाप एवं सम्बोधन है जिसका मैं अभी वर्णन कर चुका हूं जिसकी आत्मा में सच्चाई की अभिलाषा है वह उठे और खोजे। मैं सच-सच कहता हूं कि यदि आत्माओं में सच्ची खोज की लगन और प्यास पैदा हो जाए तो लोग उस मार्ग को ढूंढें और खोजने लगें, परन्तु यह मार्ग किस ढंग और उपाय से खुलेगा और आवरण किस उपचार से उठेगा। मैं समस्त अभिलाषियों को विश्वास दिलाता हूं कि केवल इस्लाम ही है जो इस मार्ग की ख़ुशख़बरी देता है और अन्य जातियां तो ख़ुदा के इल्हाम पर लम्बे समय से मुहर लगा चुकी हैं। अतः निश्चय ही समझो कि यह ख़ुदा की ओर से मुहर नहीं वरन् वंचित रहने के कारण मनुष्य एक बहाना पैदा कर लेता है और निश्चय ही यह समझो कि जिस प्रकार यह संभव नहीं कि हम बिना आंखों के देख सकें या बिना कानों के सुन सकें या बिना जीभ के बोल सकें। इसी प्रकार यह भी संभव नहीं कि बिना क़ुर्आन के उस परम प्रिय ख़ुदा के दर्शन कर सकें। मैं जवान था अब बूढ़ा हुआ परन्तु मैंने कोई न पाया जिसने इस पवित्र और अलौकिक झरने के बिना इस सुस्पष्ट ज्ञान का प्याला पिया हो।

पूर्ण ज्ञान का साधन ख़ुदा तआला का इल्हाम है

हे प्रिय सज्जनो ! हे प्रिय लोगो ! कोई मनुष्य ख़ुदा के इरादों में उससे झगड़ा नहीं कर सकता। निश्चय ही समझो कि पूर्ण ज्ञान का साधन ख़ुदा तआला का इल्हाम है जो ख़ुदा तआला के पवित्र नबियों को मिला। तत्पश्चात् उस ख़ुदा ने जो वरदान रूपी सागर है यह कदापि न चाहा कि भविष्य में उस इल्हाम को मुहर लगा दे और इस प्रकार से संसार का विनाश करे अपितु उसके इल्हाम, वार्तालाप और सम्बोधनों के द्वार सदैव खुले है। हां उनको उनके मार्गों से ढूंढो तब वे तुम्हें आसानी से मिल जाएंगे। वह जीवन का जल आकाश से आया और अपने उचित स्थान पर ठहरा अब तुम्हें क्या करना चाहिए ताकि तुम उस जल को पी सको। यही करना चाहिए कि गिरते-पड़ते उस झरने तक पहुंचो फिर अपना मुंह उस झरने के आगे रख दो ताकि उस जीवन रूपी जल से तृप्त हो जाओ। मनुष्य की सम्पूर्ण भलाई इसी में है कि जहां प्रकाश का पता लगे उसी ओर दौड़े और जहां उस खोए हुए मित्र का निशान मिले उसी मार्ग को अपनाए। देखते हो कि सदैव आकाश से प्रकाश उतरता है और पृथ्वी पर पड़ता है, उसी प्रकार मार्ग-दर्शन का सच्चा प्रकाश आकाश से ही उतरता है। मनुष्य की अपनी ही बातें और अपनी ही अटकलें उसे सच्चा ज्ञान प्रदान नहीं कर सकतीं। क्या तुम ख़ुदा को ख़ुदा की झलक के बिना पा सकते हो क्या तुम उस आकाशीय प्रकाश के बिना अंधेरे में देख सकते हो यदि तुम देख सकते हो तो कदाचित यहां भी देख लो किन्तु हमारी आंखें यद्यपि देखने वाली हों तथापि आकाशीय प्रकाश की मुहताज हैं और हमारे कान यद्यपि सुनने वाले हों तथापि उस वायु के मुहताज हैं जो ख़ुदा की ओर से चलती है। वह ख़ुदा सच्चा ख़ुदा नहीं है जो मौन है और समस्त निर्भरता

हमारी अटकलों पर है अपितु पूर्ण और सजीव ख़ुदा वह है जो अपने अस्तित्व का स्वयं पता दे। आकाशीय खिड़कियां खुलने को हैं, शीघ्र ही प्रातः उदय होने वाला है। मुबारक वे जो उठ बैठें और अब सच्चे ख़ुदा को ढूंढे। वही ख़ुदा जिस पर कोई काल चक्र और विपत्ति नहीं आती, जिसके प्रताप की चमक को कभी कोई दुर्घटना प्रभावित नहीं करती। पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला का कथन है :-

اَللّٰہُ نُوۡرُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ ①

अर्थात् ख़ुदा ही है जो हर पल आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है उस से प्रत्येक स्थान पर प्रकाश पड़ता है सूर्य का वही सूर्य है। पृथ्वी के समस्त प्राणियों का वही प्राण है। सच्चा एवं सजीव ख़ुदा वही है। मुबारक वह जो उसे स्वीकार करे।

ज्ञान का तीसरा साधन - वे बातें हैं जो अनुभव द्वारा एवं प्रयोगात्मक ज्ञान के स्तर पर हैं और वे समस्त कठिनाइयां, संकट और कष्ट हैं जो ख़ुदा के नबियों और सच्चों को विरोधियों द्वारा या आकाशीय प्रारब्ध से पहुंचते हैं तथा इस प्रकार के दुखों और कष्टों से वे समस्त शरीअत के निर्देश जो मात्र ज्ञान के तौर पर मनुष्य के हृदय में थे उस पर लागू हो कर क्रियात्मक रूप में आ जाते हैं और फिर कर्म की पृथ्वी से पोषण और विकास पा कर पूर्णता तक पहुंच जाते हैं और उन निर्देशों के पालनकर्ताओं का अपना ही अस्तित्व ख़ुदा के निर्देशों की एक पूर्ण पुस्तक हो जाती है और वे समस्त शिष्टाचार क्षमा और प्रतिकार (इन्तिक़ाम), धैर्य और दया आदि जो केवल मस्तिष्क और हृदय में भरे हुए थे अब सम्पूर्ण अंगों को क्रियात्मक अभ्यास की बरकत से पुष्टि मिलती है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है

وَ لَنَبۡلُوَنَّکُمۡ بِشَیۡءٍ مِّنَ الۡخَوۡفِ وَ الۡجُوۡعِ وَ نَقۡصٍ مِّنَ

① सूरह अन्नूर - 36

الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۙ۝ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ؕ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۣ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ۝①

لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝②

अर्थात् हम तुम्हें भय, भूख और धन की हानि तथा प्राणों की क्षति एवं प्रयास व्यर्थ जाने और सन्तान की मृत्यु हो जाने से परीक्षा लेंगे। अर्थात् ये समस्त संकट प्रारब्ध के तौर पर या शत्रु द्वारा तुम्हें पहुंचेंगे। अत: उन लोगों को ख़ुशख़बरी हो जो संकट के समय केवल यह कहते हैं कि हम ख़ुदा की धरोहर हैं और ख़ुदा की ओर लौटेंगे। उन लोगों पर ख़ुदा का दरूद और बड़ी दया है और यही वे लोग हैं जो मार्गदर्शन की चरम सीमा तक पहुंच चुके हैं अर्थात् केवल उस ज्ञान को कोई बड़ाई और महानता नहीं दी जा सकती जो केवल मस्तिष्क और हृदय में भरा हुआ हो अपितु वास्तव में ज्ञान वह है जो बुद्धि से उतर कर समस्त अंगों को प्रशिक्षित और प्रभावित करे और स्मरण शक्ति के संस्मरण क्रियात्मक रंग में दृष्टिगोचर हों। इसलिए ज्ञान को सुदृढ़ करने और उसे विकसित करने का यह बड़ा साधन है कि क्रियात्मक तौर पर उसके निशान अपने

① सूरह अलबक़र: - 156-158

② सूरह आले इमरान - 187

अंगों में अंकित कर लें। कोई तुच्छ ज्ञान भी क्रियात्मक अभ्यास के बिना अपनी पराकाष्ठा को नहीं पहुंचता। उदाहरणतया दीर्घ समय से हमारे ज्ञान में यह बात है कि रोटी पकाना नितान्त सरल बात है और इस में कोई अधिक बारीकी नहीं। केवल इतना है कि आटा गूंध कर एक-एक रोटी की मात्रा के अनुसार आटे के पेड़े बनाएं और उन्हें दोनों हाथों को परस्पर मिलाने से चौड़े करके तवे पर डाल दें और इधर-उधर उलटा कर और अग्नि पर सेक कर रख लें। रोटी पक जाएगी। यह तो हमारा केवल ज्ञान का शेखी बघारना है परन्तु जब हम अनुभवहीनता की स्थिति में पकाने लगें तो प्रथम हम पर यही संकट आएगा कि आटे को उसके उचित ठहराव पर रख सकें अपितु या तो पत्थर सा रहेगा और या पतला हो कर गुलगुले बनाने के योग्य हो जाएगा और यदि मर-मर कर, थक-थक कर गूंध भी लिया तो रोटी की यह दशा होगी कि कुछ जलेगी और कुछ पकेगी, मध्य में टिकिया रहेगी और कई ओर से कान निकले हुए होंगे। जबकि हम पचास वर्ष तक रोटी पकती हुई देखते रहे। अतः मात्र ज्ञान के दण्ड स्वरूप जो क्रियात्मक अभ्यास के अन्तर्गत नहीं आया कई सेर आटे को व्यर्थ करेंगे। फिर जबकि छोटी से छोटी बात में हमारे ज्ञान की यह दशा है तो बड़ी-बड़ी बातों में क्रियात्मक अभ्यास के अतिरिक्त केवल ज्ञान पर क्योंकर भरोसा रखें। अतः ख़ुदा तआला इन आयतों में यह शिक्षा देता है कि जो कष्ट मैं तुम पर डालता हूँ वह भी ज्ञान और अनुभव का साधन हैं अर्थात् इन से तुम्हारा ज्ञान पूर्ण होता है। फिर आगे ख़ुदा तआला कहता है कि तुम्हारे अपने धन और प्राणों की क्षति द्वारा तुम्हारी परीक्षा ली जाएगी, लोग तुम्हारे धन लूटेंगे, तुम्हारा वध करेंगे और तुम यहूदियों तथा ईसाइयों और मुश्रिकों के हाथ से बहुत ही सताए जाओगे, वे तुम्हारे प्रति बहुत कुछ कष्टदायक बातें लिए कहेंगे। अतः यदि तुम धैर्य से काम लोगे और अनुचित बातों से बचोगे तो यह साहस और वीरता का कार्य होगा। इन समस्त आयतों का

तात्पर्य यह है कि शुभ ज्ञान वही होता है जो कर्म-स्तर पर अपनी चमक दिखाए तथा अशुभ ज्ञान वह है जो केवल ज्ञान की सीमा तक रहे कभी क्रियात्मक रूप तक न पहुंचे।

ज्ञात होना चाहिए जिस प्रकार धन व्यापार से बढ़ता है और फलता-फूलता है उसी प्रकार ज्ञान अभ्यास द्वारा अपनी आध्यात्मिक पराकाष्ठा को पहुंचता है। अतः ज्ञान को पराकाष्ठा तक पहुंचाने का बड़ा साधन क्रियात्मक अभ्यास है, अभ्यास से ज्ञान में प्रकाश आ जाता है और यह समझो कि ज्ञान का क्रियात्मक ज्ञान-स्तर तक पहुंचना क्या होता है। यही तो है कि क्रियात्मक तौर पर उसके प्रत्येक कोने का परीक्षण किया जाए। अतः इस्लाम में ऐसा ही हुआ। ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन के द्वारा लोगों को जो कुछ शिक्षा दी उन्हें यह अवसर दिया कि क्रियात्मक तौर पर उस शिक्षा को चमका दें और उसके प्रकाश से भर जाएं।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन के दो युग

इसी उद्देश्य से ख़ुदा तआला ने हमारे नबी[स.अ.व.] के जीवन को दो भागों में विभाजित कर दिया।

एक भाग दुखों और संकटों तथा कष्टों का और दूसरा भाग विजय अर्थात् सफलताओं का ताकि संकटों के समय में वे आचरण प्रकट हों जो संकटों के समय व्यक्त हुआ करते हैं तथा विजय और अधिकार के समय में वे आचरण सिद्ध हों जो बिना अधिकार के सिद्ध नहीं होते। अतः ऐसा ही आंहज़रत[स.अ.व.] के दोनों प्रकार के आचरण दोनों युगों और दोनों अवस्थाओं के आने से पूर्ण स्पष्टता के साथ सिद्ध हो गए। अतः वह संकटों का युग जो हमारे नबी[स.अ.व.] पर तेरह वर्ष तक मक्का में रहा, उस युग के जीवन चरित्र का अध्ययन करने से नितान्त स्पष्ट

तौर पर ज्ञात होता है कि आंहज़रत[स.अ.व.] ने वे शिष्टाचार जो संकटों के समय पूर्ण सत्यनिष्ठ को प्रदर्शित करने चाहिएं अर्थात् ख़ुदा पर भरोसा करना, रोने-पीटने से बचना, तथा अपने कार्य में आलस्य न करना, किसी के आतंक से भयभीत न होना इस प्रकार दिखा दिए कि काफ़िर ऐसी दृढ़ता को देखकर ईमान लाए और साक्ष्य दी कि जब तक किसी का पूर्ण भरोसा ख़ुदा पर न हो उस समय तक ऐसी दृढ़ता तथा ऐसी सहनशीलता नहीं आ सकती।

फिर जब दूसरा युग आया अर्थात् विजय और अधिकार तथा समृद्धि का युग, तो उस युग में भी आप[स.] के उच्च शिष्टाचार क्षमा करना, दानशीलता तथा वीरता के ऐसे उत्कृष्ट रूप में प्रदर्शित हुए कि काफ़िरों का एक बड़ा गिरोह उन्हीं शिष्टाचारों को देखकर ईमान लाया। कष्ट देने वालों को क्षमा किया, शहर से निकालने वालों को अमन दिया, उनके मुहताजों को धन से धनवान कर दिया और अधिकार पाकर अपने बड़े-बड़े शत्रुओं को क्षमा कर दिया। अतः बहुत से लोगों ने आप[स.] के शिष्टाचार देख कर साक्ष्य दी कि जब तक कोई सत्यनिष्ट व्यक्ति ख़ुदा की ओर से न आए ये शिष्टाचार कदापि नहीं दिखा सकता। यही कारण है कि आपके शत्रुओं के पुराने द्वेष सहसा दूर हो गए। आप का बड़ा भारी आचरण जिसे आपने सिद्ध करके दिखा दिया वह था जो पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया गया है और वह यह है कि :-

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○[1]

अर्थात् उनको कह दे कि मेरी उपासना, मेरा बलिदान, मेरा मरना, मेरा जीवित रहना ख़ुदा के लिए है अर्थात् उस का प्रताप प्रकट करने के लिए तथा उसके बन्दों को आराम देने के लिए है ताकि मेरे मरने से उनको जीवन प्राप्त हो। यहां जो ख़ुदा के मार्ग में तथा बन्दों के

① सूरह अलअन्आम - 163

कल्याण के लिए मरने का वर्णन किया गया है उस से कोई यह विचार न करे कि नऊज़ुबिल्लाह आप[स.] ने असभ्य और मूर्खों की तरह वास्तव में आत्महत्या का निश्चय कर लिया था। इस भ्रम से कि स्वयं को किसी हथियार द्वारा क़त्ल करके तबाह करना अन्य लोगों को लाभ पहुंचाएगा अपितु आप इन बेहूदा बातों के कट्टर विरोधी थे तथा क़ुर्आन ऐसी आत्महत्या करने वाले को घोर अपराधी और दण्डनीय ठहराता है। जैसा कि उसका कथन है कि :-

وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ①

अर्थात् आत्महत्या न करो और अपने हाथों से अपनी मृत्यु के कारण न बनो तथा यह स्पष्ट है कि उदाहरणतया यदि ख़ालिद के पेट में दर्द हो और ज़ैद उस पर दया करके अपना सर फोड़े तो ज़ैद ने ख़ालिद के पक्ष में कोई भलाई का कार्य नहीं किया अपितु अपने सर को मूर्खतापूर्ण कार्य करके अकारण फोड़ा। भलाई का कार्य तब होता जब ज़ैद ख़ालिद के लिए उचित और लाभप्रद उपाय से प्रयास करता तथा उसके लिए उत्तम दवाएं उपलब्ध करता तथा चिकित्सा के नियमों के अनुसार उसका उपचार करता, परन्तु उसके सर फोड़ने से ज़ैद को तो कोई लाभ नहीं पहुंचा। उसने अकारण अपने अस्तित्व के एक अच्छे अंग को कष्ट पहुंचाया। अतः इस आयत का अर्थ यह है कि आंहज़रत[स.अ.व.] ने वास्तविक सहानुभूति और परिश्रम करने से मानव जाति की मुक्ति के लिए प्राणों को समर्पित कर दिया था तथा दुआ और प्रचार के साथ तथा उन के अन्याय और अत्याचार सहन करने तथा प्रत्येक उचित एवं नीतिगत उपाय के साथ अपने प्राण और आराम को उस मार्ग में न्यौछावर कर दिया था। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

---

① सूरह अलबक़रः - 196

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝[1]

فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ[2]

क्या तू इस शोक और कठिन परिश्रम में जो लोगों के लिए सहन कर रहा है स्वयं को मिटा देगा और क्या उन लोगों के लिए जो सत्य को स्वीकार नहीं करते तू निराश हो-हो कर अपने प्राण दे देगा। अत: जाति के लिए प्राण देने का नीतिसंगत उपाय यही है कि जाति के कल्याण के लिए प्रकृति के नियम के लाभप्रद मार्गों के अनुसार अपने प्राणों को संकट में डाले और उचित उपायों द्वारा अपने प्राणों को बलिदान कर दें न यह कि जाति को कठोर विपत्ति या पथ-भ्रष्टता में देख कर तथा भयंकर अवस्था में पाकर अपने सर पर पत्थर मार लें या दो-तीन रत्ती संखिया खा कर इस संसार से कूच कर जाएं और समझें कि हम ने अपनी इस अनुचित क्रिया से जाति को मुक्ति दे दी है। यह मर्दों का कार्य नहीं है स्त्रियों वाली आदतें हैं और कम साहसी लोगों की सदैव से यही पद्धति है कि संकट को सहनशील न पाकर तुरन्त आत्महत्या की ओर दौड़ते हैं। ऐसी आत्महत्या की यद्यपि बाद में कितनी भी व्याख्याएं की जाएं परन्तु यह गतिविधि नि:सन्देह बुद्धि और बुद्धिमानों का दोष है परन्तु स्पष्ट है कि ऐसे व्यक्ति का धैर्य और शत्रु का मुक़ाबला न करना विश्वसनीय नहीं है, जिसे इन्तिक़ाम (प्रतिकार) का अवसर ही न मिला क्योंकि क्या मालूम है कि यदि वह इन्तिक़ाम पर समर्थ होता तो क्या कुछ करता। जब तक मनुष्य पर वह युग न आए जो एक संकटों का युग है और एक शक्ति और शासन तथा समृद्धि का युग हो, उस समय तक उससे सच्चे शिष्टाचार कदापि प्रकट नहीं हो सकते। स्पष्ट है

---

① सूरह अलबक़र: - 156-158

① सूरह अलफ़ातिर - 9

कि जो व्यक्ति केवल निर्बलता, दरिद्रता तथा अधीनता की अवस्था में लोगों की मारें खाता मर जाए तथा अधिकार और शासन और समृद्धि का युग न पाए उसके शिष्टाचार में से कुछ भी सिद्ध न होगा और यदि रणभूमि में उपस्थित नहीं हुआ तो यह भी प्रमाणित न होगा कि वह हृदय का बहादुर था या कायर। उस के शिष्टाचार के संबंध में हम कुछ नहीं कह सकते क्योंकि हम नहीं जानते, हमें क्या मालूम है कि यदि वह अपने शत्रुओं पर अधिकार पाता तो उनसे क्या व्यवहार करता और यदि वह धनवान हो जाता तो उस धन को एकत्र करता या लोगों को देता और यदि वह किसी रणभूमि में आता तो पूंछ दबा कर भाग जाता या वीरों के समान हाथ दिखाता परन्तु ख़ुदा की कृपा ने हमारे नबी[स.अ.व.] को उन शिष्टाचारों को प्रकट करने का अवसर दिया। अतः दानशीलता, वीरता, शालीनता, क्षमा तथा न्याय अपने-अपने अवसर पर ऐसी पूर्णता के साथ प्रकट हुए कि समस्त संसार में उसका उदाहरण ढूंढना दुर्लभ है। अपने दोनों युगों में निर्बलता और सबलता, दरिद्रता और समृद्धि में समस्त संसार को दिखा दिया कि वह पवित्र हस्ती उच्च श्रेणी के शिष्टाचार की संग्रहीता थी और कोई मानव आचरण उत्तम आचरणों में से ऐसा नहीं है जो उसके प्रकट होने के लिए आप को ख़ुदा तआला ने एक अवसर न दिया। वीरता, दानशीलता, दृढ़ता, क्षमा, शालीनता आदि समस्त उत्तम शिष्टाचार इस तौर पर सिद्ध हो गए कि संसार में उसका उदाहरण खोजना दुर्लभ है। हां यह सत्य है कि जिन्होंने अत्याचार को चरम सीमा तक पहुंचा दिया और इस्लाम को मिटाना चाहा ख़ुदा ने उन को भी दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ा क्योंकि उन्हें बिना दण्ड छोड़ना जैसे सच्चों को उनके पैरों के नीचे कुचलकर तबाह करना था।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युद्धों का उद्देश्य

आंहज़रत[स.अ.व.] के युद्धों का यह उद्देश्य कदापि न था कि अकारण ही लोगों का वध किया जाए। वे अपने पूर्वजों के देश से निष्कासित किए गए थे और बहुत से निर्दोष मुसलमान पुरुष और स्त्रियां शहीद कर दिए गए थे और अभी अत्याचारी अत्याचार करने से रुकते नहीं थे। इस्लाम की शिक्षा में बाधाएं डालते थे। अतः ख़ुदा के सुरक्षा के नियम ने यह चाहा कि पीड़ितों को विनाश से बचा ले। अतः जिन्होंने तलवार उठाई थी उन्हीं के साथ तलवार का मुक़ाबला हुआ। क़त्ल करने वालों का उपद्रव दूर करने के लिए प्रतिरक्षात्मक युद्ध हुए और उस समय हुए जबकि अत्याचारी स्वभाव रखने वाले लोग सच्चों को मिटाना चाहते थे। इस अवस्था में यदि इस्लाम प्रतिरक्षात्मक युद्ध न करता तो हज़ारों निर्दोष बच्चों और स्त्रियों का बड़ी नृशंसता से वध होकर अन्ततः इस्लाम मिट जाता।

स्मरण रहे कि हमारे विरोधियों का यह विचार बड़ा अन्यायपूर्ण है कि वे विचार करते हैं कि इल्हामी निर्देशन ऐसा होना चाहिए जिसमें किसी स्थान और किसी अवसर में शत्रुओं के मुक़ाबले की शिक्षा न हो और सदैव शालीनता और नम्रता की शैली में अपने प्रेम और दया को प्रकट करे। ऐसे लोग अपने विचार में ख़ुदा का बड़ा सम्मान कर रहे हैं कि जो उसकी समस्त विशेषताओं को केवल नम्रता और शालीनता पर ही समाप्त करते हैं परन्तु इस विषय में सोच-विचार करने वालों पर सरलतापूर्वक स्पष्ट हो सकता है कि ये लोग मोटी और स्पष्ट ग़लती में ग्रस्त हैं। ख़ुदा के प्रकृति के नियम पर दृष्टि डालने से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि संसार के लिए वह साक्षात दया अवश्य है परन्तु वह दया सदैव प्रत्येक अवस्था में नर्मी और शालीनता के रंग में प्रकट नहीं होती अपितु वह सर्वथा दया की मांग से एक होशियार उपचारक

के समान कभी हमें मधुर शरबत पिलाता है और कभी कड़वी औषधि देता है। उसकी दया मानव जाति पर इस प्रकार आती है जैसे हम में से एक व्यक्ति अपने सम्पूर्ण अस्तित्व पर दया रखता है। इस बात में किसी को सन्देह नहीं हो सकता कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से प्रेम रखता है और यदि कोई हमारे एक बाल को उखाड़ना चाहे तो हम उस पर बहुत अप्रसन्न होते हैं परन्तु इसके बावजूद हमारा प्रेम जो हम अपने अस्तित्व से रखते हैं हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व में विभाजित है और हमारे समस्त अंग हमारे लिए प्रिय हैं। हम किसी की क्षति नहीं चाहते परन्तु फिर भी यह बात नितान्त स्पष्ट तौर पर प्रमाणित है कि हम अपने समस्त अंगों से एक ही श्रेणी तथा एक समान प्रेम नहीं रखते अपितु गुप्तांगों का प्रेम जिन पर हमारे उद्देश्यों की बहुत कुछ निर्भरता है, हमारे हृदयों पर विजयी होती है। इसी प्रकार हमारी दृष्टि में एक ही अंग के प्रेम की अपेक्षा समस्त अंगों का प्रेम बहुत अधिक होता है। इसलिए जब कभी हमारे लिए कोई ऐसा अवसर आ पड़ता है कि एक अंग की सुरक्षा कम श्रेणी के अंग के घायल करने या काटने या तोड़ने पर निर्भर होती है तो हम प्राण को बचाने के लिए निःसंकोच उसी अंग के घायल करने या काटने पर तैयार हो जाते हैं और यद्यपि उस समय हमारे हृदय में यह दुख भी होता है कि हम अपने एक प्रिय अंग को घायल करते या काटते हैं परन्तु इस विचार से उस अंग का विकार किसी दूसरे स्वस्थ अंग को भी साथ में तबाह न करे हम काटने के लिए विवश हो जाते हैं। अतः इसी उदाहरण से समझ लेना चाहिए कि ख़ुदा भी जब देखता है कि उसके सच्चे झूठों के हाथों से तबाह होते हैं और ख़राबी फैलती है तो सच्चों के प्राणों की रक्षा और ख़राबी को दूर करने के लिए उचित युक्ति प्रयोग में लाता है चाहे आकाश से चाहे पृथ्वी से। इसलिए कि वह जैसा कि दयालु है वैसा ही नीतिवान भी है।

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन